पार्श्वनाथ विद्यापीठ ग्रन्थमाला संख्या-९३ प्रधान संपादक : प्रो० सागरमल जैन

भारत की जैन गुफाएँ

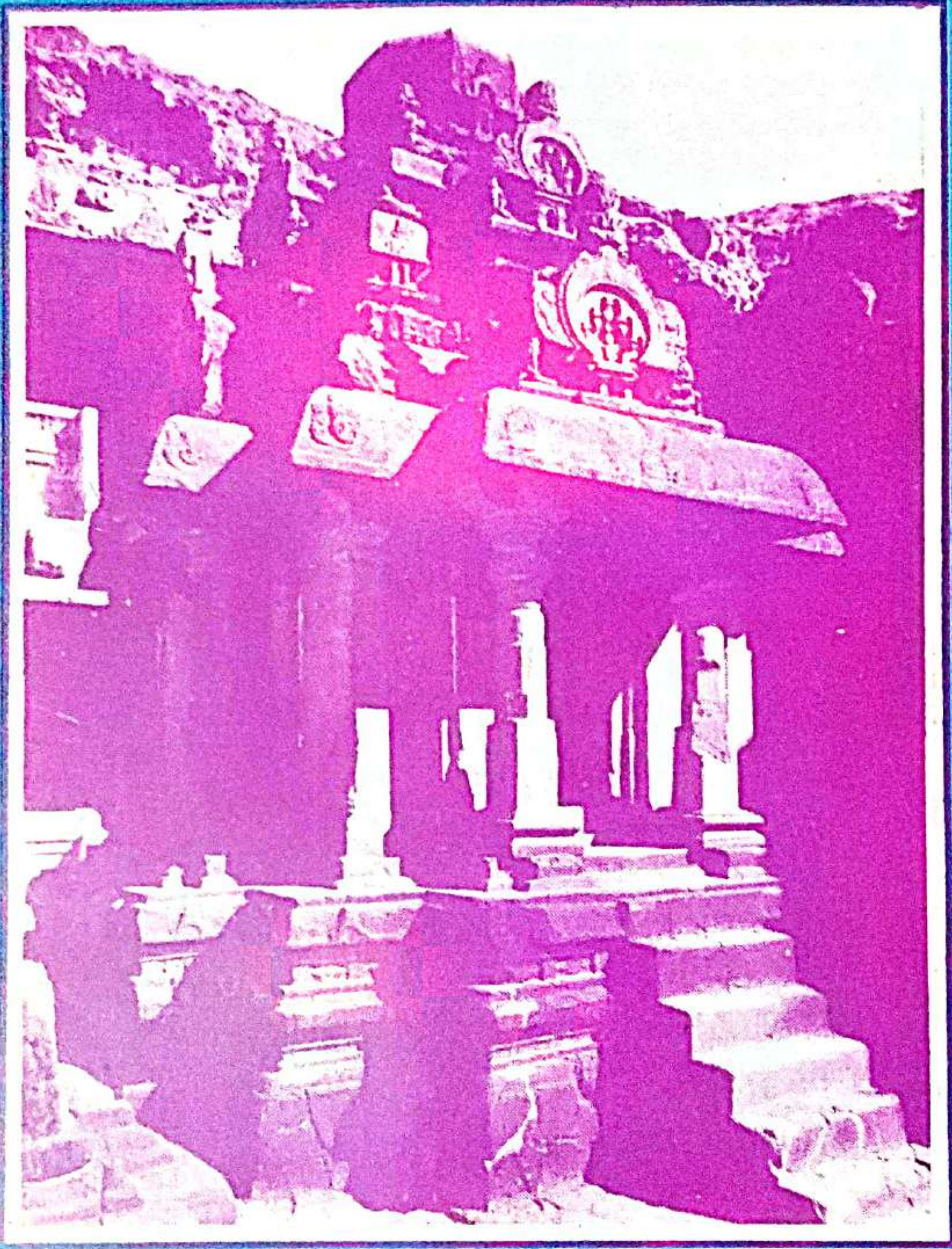

डॉ० हरिहर सिंह

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी-५

पार्श्वनाथ विद्यापीठ ग्रन्थमाला संख्या ९३

भारत की जैन गुफाएँ

आचार्य अकलङ्क देव श्रुत भण्डार

लेखक

डॉ० हरिहर सिंह

प्रवक्ता, प्रा० भा० इति० संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

१९९७

पुस्तक : **भारत की जैन गुफाएँ**

प्रकाशक : पार्श्वनाथ विद्यापीठ
आई०टी०आई० रोड, करौंदी,
वाराणसी - २२१००५
दूरभाष : ३१६५२१, ३१८०४६

प्रथम संस्करण, १९९७
मूल्य : १५०/-

ISBN : 81-86-71-5-22-3

Book : Bhārata Kī Jaina Guphāyen
Publisher : Pārśvanātha Vidyāpīṭha
ITI Road, Karaundi,
Varanasi - 221005
Phone : 316521, 318046

First Edition, 1997
Price : Rs. [redacted]/-

250/-

Type setting at : **Comp Success**, Varanasi. Ph. 363041
Printed at : **Vardhaman Mudranalaya,**
Bhelupur, Varanasi - 10

प्रकाशकीय

भारतीय कला एवं स्थापत्य के गौरवशाली इतिहास में जैनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। स्थापत्य के क्षेत्र में समय-समय पर जो प्रयोग हुये उनमें एक प्रयोग शैलकृत गुफाओं के निर्माण का है। इन शैलघरों को जीवित चट्टान में ही काटा एवं तराशा गया है। ऐसी अनगिनत इमारतें संपूर्ण भारतवर्ष में आज भी मौजूद हैं और तत्कालीन लोगों की निष्ठा एवं अभिरुचि की परिचायक हैं। इस विधा में जैनों ने प्रारम्भ से ही रुचि ली और अपनी गुफाएँ खुदवाईं। उनकी गहरी दिलचस्पी का पता इस बात से भी लगाया जा सकता है कि उन्होंने जैन गुफाएँ मध्यकाल तक खुदवाईं। बौद्धों के बाद जैनों ने ही सबसे अधिक गुफाएँ खुदवाईं परन्तु अभी तक उनका स्वतन्त्र अध्ययन एक साथ नहीं हुआ है। हमें इस बात की खुशी है कि इस महत्त्वपूर्ण कार्य को डॉ० हरिहर सिंह, जो भारतीय स्थापत्य के जाने-माने विद्वान् हैं और संप्रति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग में इस विषय के प्राध्यापक हैं, ने पूरा किया और प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशनार्थ हमें दिया। हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। संस्थान के निदेशक डॉ० सागरमल जैन एवं प्रवक्ता डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय के हम विशेष आभारी हैं जिन्होंने पुस्तक की पाण्डुलिपि को आद्योपान्त पढ़ा तथा प्रकाशन सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन किया।

सुन्दर अक्षर सज्जा के लिए कॉम्प सक्सेस एवं सत्वर मुद्रण के लिए वर्द्धमान मुद्रणालय के प्रति भी हम अपना आभार प्रकट करते हैं।

हम आशा करते हैं कि यह पुस्तक सामान्य पाठकों एवं शोधकर्त्ताओं के लिए मार्गदर्शन का काम करेगी।

भवदीय

भूपेन्द्रनाथ जैन

मानद मन्त्री

पार्श्वनाथ विद्यापीठ

प्राक्कथन

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रारम्भ से लेकर पन्द्रहवीं सदी ईसवी तक की शैलकृत जैन गुफाओं का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन मुख्यत: स्थापत्यगत है क्योंकि उनके स्थापत्य का एक साथ विस्तृत अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है जबकि उनकी मूर्तियों एवं चित्रों का विवेचन विभिन्न ग्रंथों में विस्तार से किया जा चुका है। अत: प्रस्तुत अध्ययन उस दिशा में एक प्रयास है। मेरा यह प्रयास कितना सफल है इसका मूल्यांकन तो पाठक ही कर सकते हैं।

हालांकि जैन गुफाओं का संदर्भ एतद्सम्बन्धित प्राय: सभी ग्रंथों में आया है लेकिन सर्वप्रथम एक साथ कुछ विस्तार से चर्चा जेम्स बर्जेस ने अपनी पुस्तक "केव टेम्पल्स आफ इण्डिया" में की है। परन्तु भारत की समस्त गुफाओं का वर्णन होने से उसमें जैन गुफाओं का विस्तृत ब्यौरा नहीं दिया जा सका है। देबला मित्र ने अपनी पुस्तक "उदयगिरि एण्ड खण्डगिरि" में उड़ीसा की जैन गुफाओं का और के० वी० सौन्दरराजन ने "इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन टेम्पल आर्किटेक्चर", भाग-१, खण्ड-२, में एलोरा की जैन गुफाओं का विस्तृत विवरण तो दिया है परन्तु इन ग्रंथों में जैन गुफाओं का न तो तुलनात्मक अध्ययन किया गया है और न ही शैलीगत विकास दर्शाया गया है। अत: प्रस्तुत ग्रंथ में इन सभी बातों का समावेश करते हुये भारत की समस्त जैन गुफाओं का उनके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में विवरण देते हुये स्थापत्यगत विकास दर्शाया गया है। इस अध्ययन से भारतीय गुफा स्थापत्य में जैन गुफाओं के योगदान और उनकी स्थिति की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

इस पुस्तक को तैयार करने में जिन संस्थाओं से मुझे सहयोग मिला उनमें पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी का नाम सर्वोपरि है। इस संस्था ने मुझे पुस्तकालयीय सुविधा तो प्रदान की ही, इसके निदेशक डॉ० सागरमल जैन ने इस ग्रंथ के प्रकाशन में अपनी अभिरुचि ली। मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। पार्श्वनाथ विद्यापीठ के अन्य पदाधिकारियों का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने विभिन्न प्रकार से मेरी मदद की। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी फोटोग्राफ मुझे अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज, रामनगर, वाराणसी, से प्राप्त हुये हैं जिसके लिए मैं उस संस्था के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। इसी प्रकार मैं आर्किअलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया के प्रति भी आभारी हूँ जिसके विभिन्न प्रकाशनों से उद्धृत कर मैंने जैन गुफाओं के तलविन्यास आदि इस ग्रंथ में प्रकाशित किये हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, का० हि० वि० वि०, वाराणसी, के श्री अरुण कुमार पाण्डेय के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने भारत के जैन गुफा-स्थलों का मानचित्र बनाया। अंतत: मैं इस ग्रंथ के सुन्दर मुद्रण के लिए वर्द्धमान मुद्रणालय का भी आभारी हूँ।

दिनांक १८.८.१९९७ **हरिहर सिंह**

चित्र-सूची

१. भारत के जैन गुफास्थलों का मानचित्र।
२. राजगिर, सोनभण्डार गुफा, तलविन्यास।
३. राजगिर, सोनभण्डार गुफा, तिर्यक्रेखा।
४. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (संख्या १), निचली मंजिल, तलविन्यास।
५. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (संख्या १), ऊपरी मंजिल, तलविन्यास।
६. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (संख्या १), तिर्यक्रेखा।
७. जूनागढ़ की जैन गुफाओं का तलविन्यास।
८. धाराशिव, गुफा संख्या २, तलविन्यास।
९. एलोरा, इन्द्रसभा, निचली मंजिल, तलविन्यास।
१०. एलोरा, इन्द्रसभा, ऊपरी मंजिल, तलविन्यास।
११. एलोरा, जगन्नाथसभा, निचली मंजिल, तलविन्यास।
१२. एलोरा, जगन्नाथसभा, ऊपरी मंजिल, तलविन्यास।
१३. तंकाई, जैन गुफा संख्या १, तिर्यक्रेखा।
१४. तंकाई, जैन गुफा संख्या १, निचली मंजिल, तलविन्यास।
१५. तंकाई, जैन गुफा संख्या १, ऊपरी मंजिल, तलविन्यास।
१६. राजगिर, सोनभण्डार गुफा, सम्मुखीन दृश्य।
१७. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (संख्या १), बाह्य दृश्य।
१८. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (संख्या १), निचली मंजिल, गर्भशाला के मुखपट्ट पर अंकित दृश्य।
१९. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (संख्या १), ऊपरी मंजिल, गर्भशाला के मुखपट्ट पर अंकित दुष्यन्त-शकुन्तला की कथा का दृश्य।
२०. उदयगिरि (उड़ीसा), गणेशगुंफा (संख्या १०), गर्भशाला के मुखपट्ट पर अंकित स्त्री-अपहरण का दृश्य।
२१. खण्डगिरि (उड़ीसा), तातोवागुंफा (संख्या १), सम्मुखीन दृश्य।
२२. खण्डगिरि (उड़ीसा), अनन्तगुंफा (संख्या ३), सम्मुखीन दृश्य।
२३. खण्डगिरि (उड़ीसा), अनन्तगुंफा (संख्या ३), गजलक्ष्मी।
२४. खण्डगिरि (उड़ीसा), अनन्तगुंफा (संख्या ३), चैत्यवृक्ष-पूजा।
२५. खण्डगिरि (उड़ीसा), बारभुजीगुंफा (संख्या ८), तीर्थंकर एवं उनकी शासनदेवियाँ।
२६. उदयगिरि (मध्य प्रदेश), गुफा संख्या २०, आंतरिक दृश्य।

२७. धाराशिव, गुफा संख्या ६, मुखमण्डप, स्तंभ।
२८. एलोरा, छोटा कैलाश (संख्या ३०), सम्मुखीन दृश्य।
२९. एलोरा, इन्द्रसभा, सम्मुखीन दृश्य।
३०. एलोरा, इन्द्रसभा, प्रांगण, सर्वतोभद्र विमान।
३१. एलोरा, इन्द्रसभा, ऊपरी मंजिल, मण्डप, स्तंभ।
३२. एलोरा, जगन्नाथसभा, ऊपरी मंजिल की सम्मुखीन वेदिका एवं कक्षासन।
३३. एलोरा, जगन्नाथसभा, ऊपरी मंजिल, मण्डप, स्तंभ।
३४. तंकाई, गुफा संख्या २, सम्मुखीन दृश्य।
३५. तंकाई, गुफा संख्या ३, आंतरिक मण्डप।
३६. तंकाई, गुफा संख्या १, मुखमण्डप, द्वार।
३७. ऐहोली, जैन गुफा, गर्भगृह।
३८. ऐहोली, जैन गुफा, मुखमण्डप, ब्राह्मी एवं सुन्दरी के साथ बाहुबली।
३९. ऐहोली, जैन गुफा, मुखमण्डप, पद्मावती एवं धरणेन्द्र के साथ पार्श्वनाथ।

विषय-सूची

प्रथम अध्याय :	**ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि**	१-११
द्वितीय अध्याय :	**जैन गुफाओं का विवरण**	१२-५२
	राजगिर की जैन गुफाएँ	१२
	पभोसा की जैन गुफा	१३
	उदयगिरि (उड़ीसा) की गुफाएँ	१६
	खण्डगिरि (उड़ीसा) की गुफाएँ	२६
	जूनागढ़ की जैन गुफाएँ	३२
	उदयगिरि (मध्य प्रदेश) की जैन गुफा	३३
	धाराशिव की जैन गुफाएँ	३३
	एलोरा की जैन गुफाएँ	३५
	पटना की जैन गुफा	४२
	अंकाई-तंकाई की जैन गुफाएँ	४२
	चामर की जैन गुफाएँ	४४
	भामेर की जैन गुफाएँ	४५
	बादामी की जैन गुफा	४५
	ऐहोली की जैन गुफा	४६
	विलाप्पाक्कम की पंचपाण्डव गुफा	४८
	पेच्चिपरइ की जैन गुफा	४८
	सित्तनवासल की जैन गुफा	४८
	अर्मामलइ की गुफा	४९
	केरल की जैन गुफाएँ	४९
	ग्वालियर की जैन गुफाएँ	५०
तृतीय अध्याय :	**जैन गुफाओं का स्थापत्यगत विकास**	५३-६६
	प्रथम वर्ग की जैन गुफाएँ	५३
	द्वितीय वर्ग की जैन गुफाएँ	५८
	सहायक ग्रन्थसूची	६७
	अनुक्रमणिका	६९
	चित्र	संख्या १-३९

प्रथम अध्याय

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

जैनधर्म भारतवर्ष का अति प्राचीन धर्म है। जैन साधुओं को श्रमण कहा जाता है। ऋग्वैदिक काल में जैन श्रमणों को वातरसना मुनि कहा जाता था। उत्तरवैदिक काल के यति और व्रात्य श्रमण परम्परा से ही संबंधित थे। जैन ग्रंथों में तिरसठ शलाका पुरुषों का उल्लेख मिलता है जिनमें चौबीस तीर्थंकर सर्वाधिक पूजनीय माने जाते हैं। इनमें प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ का उल्लेख ऋग्वेद में भी हुआ है। ब्राह्मण परम्परा के भागवतपुराण में उनकी गणना विष्णु के चौबीस अवतारों में की गई है।[१]

दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ से लेकर बीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रतनाथ तक उन्नीस तीर्थंकर बिलकुल पौराणिक पुरुष प्रतीत होते हैं क्योंकि उनकी ऐतिहासिकता अभी तक सिद्ध नहीं हो सकी है। इक्कीसवें तीर्थंकर नमिनाथ मिथिलानरेश जनक के पूर्वज थे। बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ वासुदेव श्रीकृष्ण के चचेरे भाई थे। तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ एक ऐतिहासिक पुरुष थे। उनका जन्म वाराणसी के राजा अश्वसेन और उनकी रानी वामादेवी से हुआ था। आजकल उनके जन्मस्थान की पहचान वाराणसी नगर के भेलूपुर नामक स्थान के निकट स्थित उस जगह से की जाती है जहाँ एक प्राचीन जैन मंदिर विद्यमान है। उन्होंने तीस वर्ष की आयु में गृहत्याग कर सम्मेदशिखर (बिहार) पर तपस्या की। उनका निर्वाण चौबीसवें तीर्थंकर महावीर के निर्वाण से २५० वर्ष पूर्व यानी ईसा पूर्व ५२७ + २५० = ७७७ में हुआ था। पार्श्वनाथ ने चातुर्याम धर्म यानी अहिंसा, अमृषा, अस्तेय और अपरिग्रह का उपदेश किया था। बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तरनिकाय (वग्ग ५) में पार्श्वापत्यों अर्थात् पार्श्वनाथ के अनुयायियों का उल्लेख भी है। पार्श्वनाथ के समय में मथुरा के प्राचीन जैन स्तूप का जीर्णोद्धार भी हुआ था।[२]

चौबीसवें तीर्थंकर महावीर ईसा पूर्व छठी सदी में कुंडग्राम (वैशाली जिला, बिहार) में पैदा हुये थे। उनके पिता सिद्धार्थ कुंडपुर के राजा थे और उनकी माता त्रिशला लिच्छवि वंश के राजा चेटक की पुत्री (एक अन्य परंपरा के अनुसार चेटक की बहन) थीं। महावीर के माता-पिता पार्श्वनाथ सम्प्रदाय के अनुयायी थे। वे गौतम बुद्ध के समकालीन भी थे। उन्होंने पार्श्वनाथ के चातुर्याम धर्म में ब्रह्मचर्यव्रत को शामिल कर पंचयाम धर्म का उपदेश किया। उन्होंने तीर्थ यानी संघ की स्थापना की जिसके साधु-साध्वियाँ और श्रावक-श्राविकाएँ सभी सदस्य होते थे। उन्होंने मुनियों के लिए महाव्रत (कठोर व्रत) और गृहस्थों के लिए अणुव्रत (स्थूल व्रत) का विधान किया।

तदनुसार मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को श्रमण यानी मुनि बनना आवश्यक है। महावीर ने अपना उपदेश लोकप्रचलित प्राकृत भाषा में किया। उनके उपदेश आचारांग आदि बारह अंगों में संगृहीत हैं। उनका निर्वाण ईसा पूर्व ५२७ अथवा ४६७ में हुआ था।

महावीर के बाद जैनसंघ का नेतृत्व क्रमशः गौतम, सुधर्म और जंबू नामक उनके तीन शिष्यों ने किया। इन तीन गणधरों के समय तक जैनसंघ में किसी प्रकार का मतभेद नहीं उत्पन्न हुआ था लेकिन उनके बाद जैनसंघ दो वर्गों में बँट गया। अल्पवस्त्र धारण करने वाले श्वेताम्बर और निर्वस्त्र रहने वाले मुनि दिगम्बर कहलाये। इनकी अनेक शाखाएँ और प्रशाखाएँ आज भी विद्यमान हैं। श्वेताम्बर और दिगम्बर संप्रदाय की तीर्थंकर अथवा जिनमूर्तियों में भी सचेल और अचेल (निर्वस्त्र) का विभेद किया गया है।

महावीर के समय में मगध (आधुनिक बिहार) जैनधर्म का प्रमुख केन्द्र था। मगधराज बिंबिसार उनका अनुयायी था। चौथी सदी ईसा पूर्व में मगध जैनधर्म का केन्द्र बना रहा क्योंकि उसी समय वहाँ के किसी नन्द राजा ने कलिंग (उड़ीसा) से एक जिन-प्रतिमा उठा ले आया जिसे प्रथम सदी ईसा पूर्व में कलिंग का राजा खारवेल वापस ले गया।[३]

सिकन्दर के भारत-आक्रमण के बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। अपने जीवन के अंतिम दिनों में चन्द्रगुप्त जैनाचार्य भद्रबाहु से प्रभावित होकर जैनधर्म अंगीकार कर लिया और चन्द्रगिरि (श्रवणबेलगोल, कर्नाटक) की पहाड़ी पर जाकर देहोत्सर्ग किया।[४] चन्द्रगुप्त के पौत्र अशोक भी एक महान् सम्राट थे। कलिंग-युद्ध में भारी जन-धन की हानि से उन्हें अत्यन्त पीड़ा हुई। उसके बाद तो उन्होंने युद्ध का ही परित्याग कर दिया और अपने राज्यकाल का शेष समय धर्म के प्रचार-प्रसार में व्यतीत किया। इस हेतु उन्होंने बिहार की गया की पहाड़ियों में आजीवक भिक्षुओं के निवास हेतु गुफा खुदवाया जो कि शैलकृत गुफाओं के प्राचीनतम् अवशेष हैं। अशोक के पौत्र सम्प्रति जैनधर्म के बड़े संरक्षक और पोषक थे। जैनधर्म में सम्प्रति को वही स्थान प्राप्त है जो बौद्धधर्म में सम्राट अशोक को है। संभवतः राजगृह की दो जैन गुफाएँ सम्प्रति के संरक्षणत्व में ही खोदी गईं।

मौर्यकाल के पश्चात् उत्तर भारत में शुंगों ने और दक्षिण में सातवाहनों ने शासन किया। शुंग-सातवाहन काल में बौद्ध कला एवं स्थापत्य के साथ-साथ जैन वास्तु एवं शिल्प में काफी प्रगति हुई। उत्तर भारत में जहाँ सुन्दर स्तूप निर्मित हुये वहीं दक्षिण में स्तूप और गुफाएँ दोनों बने। मथुरा के प्राचीन जैन स्तूप के कुछ अवशेष शुंगकालीन हैं।[५] पभोसा (इलाहाबाद, उ० प्र०) की जैन गुफा शुंगकाल में ही खोदी गई।

अशोक की मृत्यु के बाद कलिंग की क्या दशा हुई इस संबंध में निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता। लेकिन कुछ समय बाद वहाँ चेदिवंश का शासन स्थापित हुआ। इस कुल के तीसरे राजा खारवेल थे जो प्रथम सदी ईसा पूर्व में हुये थे। खारवेल न केवल एक महान् विजेता थे अपितु बड़े निर्माणकर्त्ता भी थे। उन्होंने सातवाहनों के साम्राज्य पर भी आक्रमण किया था। उनकी विजयों एवं रचनात्मक कार्यों का विशद विवरण उदयगिरि (उड़ीसा) के हाथीगुम्फा अभिलेख में सुरक्षित है।[६] भुवनेश्वर के उदयगिरि एवं खण्डगिरि नामक दो पहाड़ियों में खारवेल के समय की कुल तैंतीस जैन गुफाएँ हैं। इनमें अट्ठारह उदयगिरि में और पन्द्रह खण्डगिरि में उत्कीर्ण हैं। जैन गुफाओं की इतनी लम्बी शृंखला भारत में अन्यत्र कहीं भी उपलब्ध नहीं है।

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद भारत के पश्चिमोत्तर सीमाप्रान्तों पर विदेशी आक्रमण प्रारंभ हो गये। ये आक्रमणकारी यवन, शक, पहलव और कुषाण थे जिन्होंने न केवल सैनिक विजयें हासिल कीं प्रत्युत अपने-अपने राज्य भी स्थापित किये। इनमें कुषाणों ने सर्वाधिक सफलता अर्जित की। उन्होंने मगध तक धावे मारे और प्रथम सदी ईसवी में अपनी राज्यसीमा वाराणसी तक बढ़ा ली। विदेशी होते हुये भी कुषाण शासकों ने भारतीय संस्कृति को पर्याप्त प्रश्रय प्रदान किया और अन्ततः वे उसमें विलीन हो गये। कुषाण काल में मथुरा जैनधर्म और कला का प्रमुख केन्द्र बना। मथुरा के जैन स्तूप के अधिकांश अवशेष इसी काल के हैं। इसी काल में सौराष्ट्र (गुजरात) पर जब क्षत्रपों (द्वितीय सदी ईसवी) का शासन हुआ तब वहाँ की जूनागढ़ की पहाड़ी में कुछ जैन गुफाएँ भी खोदी गईं।

कुषाणों के बाद उत्तर भारत में गुप्तराजाओं का और दकन में वाकाटकों का शासन हुआ। गुप्त-वाकाटक राजे न केवल महान् योद्धा थे अपितु भारतीय कला एवं संस्कृति के बड़े संरक्षक और पोषक भी थे। उनके संरक्षणत्व से भारतीय कला अपने शिखर पर पहुँची। इस काल की सभी मूर्तियाँ अधिक सुडौल, बोधगम्य और आध्यात्मिकता से ओत-प्रोत हैं। उनकी संख्या में भी बढ़ोतरी हुई। प्रतिमाशास्त्र की दृष्टि से उनमें परिपक्वता आई। उनके लक्षण, लांछन और तालमान भली-भाँति स्थापित हुये। चिनाईकृत मंदिरों का निर्माण प्रारंभ हुआ। इसी काल से गुफाओं की खुदाई, जो कि तीसरी-चौथी सदी ईसवी में किसी कारण से बिलकुल बन्द हो गई थी, पुनः शुरु हुई। जैनों और बौद्धों के अतिरिक्त हिन्दुओं ने भी अपनी गुफाएँ खुदवाईं। गुप्त-वाकाटक काल की गुफाओं की मुख्य विशेषता यह है कि उनमें पूजा के लिए मूर्तियाँ भी उत्कीर्ण की गईं। अब गुफाएँ आवासीय न होकर पूजागृह बन गईं। इस काल की एक जैन गुफा उदयगिरि (विदिसा जिला, म०प्र०) की पहाड़ी में आज भी सुरक्षित है।

गुप्त-वाकाटक युग के बाद भारत में अनेक राजशक्तियों का उदय हुआ जिनमें अधिकांश गुप्तों की अधीनता स्वीकार करती थीं और हूण आक्रमण से गुप्त साम्राज्य के छिन्न-भिन्न हो जाने पर उन्होंने अपनी-अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली। इन राजशक्तियों में परवर्ती गुप्त और मौखरी प्रमुख थे। इनमें सत्ता के लिये प्रायः युद्ध हुआ करता था। कुछ समय बाद तीन और राजशक्तियों का उदय हुआ जिनमें प्रतीहार उत्तर में, पाल पूरब में और राष्ट्रकूट दक्षिण में शासन किये। अपनी-अपनी संप्रभुता स्थापित करने के लिए इनमें भी प्रायः संघर्ष होता था। लेकिन युद्ध में व्यस्त रहने के बावजूद जब भी उन्हें अवकास मिला तब वे अपना अमूल्य समय निर्माण कार्य में लगाये। इस पवित्र कार्य में आम जनता ने भी भरपूर योगदान किया। इसके फलस्वरूप गुप्तोत्तर कालीन भारतीय स्थापत्य में गुणात्मक परिवर्तन हुआ। इस काल में न केवल गुफाओं एवं एकाश्मक मंदिरों का कटाव किया गया अपितु चिनाईकृत विशाल एवं भव्य मंदिरों का निर्माण भी किया गया। इससे कई स्थानीय शैलियों का उदय हुआ। इन स्थानीय शैलियों में बनी अगणित इमारतें आज भी तत्कालीन राजाओं और उनकी प्रजा की दानशीलता और अभिरुचि की सूचक हैं। इस काल की सभी जैन गुफाएँ (ग्वालियर को छोड़) विन्ध्य पर्वत शृंखला के दक्षिण में ही स्थित हैं।

सातवीं सदी ईसवी में दक्षिण में मुख्यतः तीन राजशक्तियों- वातापि के चालुक्य, काँची के पल्लव और मदुरा के पांड्य- का उदय हुआ जो अपनी-अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करने के लिये न केवल युद्ध करती थीं प्रत्युत कला एवं स्थापत्य के निर्माण के क्षेत्र में एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करती थीं। इनके अतिरिक्त कुछ छोटे-छोटे राजवंश यथा राष्ट्रकूट, गंग (पश्चिमी) आदि थे जो किसी न किसी बड़े राजवंश के साथ मित्रता स्थापित किये हुये थे। लेकिन आठवीं सदी ईसवी के मध्य में चालुक्यों को राष्ट्रकूटों ने और नौवीं सदी के मध्य में पल्लवों और पांड्यों को चोलों ने अपदस्त कर उनके राज्यों पर अधिकार कर लिया।

चालुक्य क्षेत्र में जैनधर्म का अच्छा प्रभाव था। चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय की ऐहोली-प्रशस्ति, जिसमें उत्तरापथ के राजा हर्षवर्धन का उल्लेख है, वहाँ के मेगुती नामक जैन मंदिर में सुरक्षित है।[७] इस अभिलेख का रचयिता रविकीर्ति भी जैन था। चालुक्य काल में ऐहोली और बादामी में काफी संख्या में चिनाई के मंदिरों का निर्माण हुआ। सातवीं सदी ईसवी में ऐहोली और बादामी (वातापि) में एक-एक जैन गुफा भी खोदी गई।

राष्ट्रकूट महान् राजे थे। उन्होंने उत्तर भारत के समसामयिक प्रतीहार और पाल शासकों के विरुद्ध कई सैनिक अभियान किये और उन्हें पराजित भी किये परन्तु दकन की डँवाडोल स्थिति के कारण वे वहाँ अपना साम्राज्य स्थापति न कर सके।

सफल योद्धा होने के साथ-साथ राष्ट्रकूट अच्छे निर्माणकर्त्ता, साहित्यकार और धर्म के संरक्षक थे। उन्होंने जैनधर्म को पर्याप्त प्रश्रय प्रदान किया। राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष तो जैनधर्म अंगीकार कर लिया था। राष्ट्रकूट काल में दकन में कई जैन गुफाएँ खोदी गईं जिनमें एलोरा की जैन गुफाएँ अपनी कला एवं स्थापत्य के लिए विख्यात हैं। एलोरा के अतिरिक्त दकन के धाराशिव, पटना, अंकाई-तंकाई, चामर और भामेर नामक स्थानों में भी जैन गुफाएँ खोदी गईं। इनमें कुछ राष्ट्रकूटों के काल में और कुद बाद में उत्कीर्ण की गईं।

पश्चिमी गंगों के समय में श्रवणबेलगोल (कर्नाटक) जैनधर्म का एक बड़ा केन्द्र था। यहीं से दिगम्बर सम्प्रदाय की अनेक शाखायें विभिन्न दिशाओं में गईं। श्रवणबेलगोल की गोम्मटेश्वर की विशाल चट्टानी मूर्ति इस काल की अद्‌भुत कृति है। इसी काल में मैसूर के निकट दो जैन गुफाएँ भी खोदी गईं।

तमिलनाडु में जैनधर्म का प्रभाव प्राचीन काल से ही रहा है। तमिल साहित्य की रचना में जैन लेखकों ने महत्त्वपूर्ण योगदान किया। यही कारण है कि वहाँ के प्रायः हर गाँव में कोई-न-कोई जैन पुरावशेष प्राप्त होता है। पल्लव और पांड्य राजाओं ने बहुत-सी गुफाएँ खुदवाईं जिनमें कई मूलतः जैन थीं और बाद में ब्राह्मण धर्मावलम्बियों ने उन्हें अधिगृहीत कर लिया। विलाप्पाक्कम, पेच्चिपरइ, सित्तनवासल और अर्मामलइ में जैन गुफाएँ आज भी मौजूद हैं।

जैन गुफाओं के कुछ उदाहरण केरल में भी मिले हैं जो तमिलनाडु की जैन गुफाओं की समकालीन हैं।

जहाँ गुफा खुदवाने का कार्य अन्य धर्मावलम्बियों ने बहुत पहले बन्द कर दिया था वहीं जैनों ने यह कार्य बहुत बाद तक जारी रखा। पश्चात्कालीन गुफाओं का एक बड़ा समूह ग्वालियर (म० प्र०) में है जिसे तोमरवंशीय राजाओं ने पन्द्रहवीं सदी में खुदवाया था।

प्राचीन काल से ही जैन श्रमण नगर, ग्राम आदि बस्तियों से दूर निर्जन स्थानों अथवा पर्वत गुफाओं में रहकर तपस्या करते थे। ऐसी अनेक प्राकृतिक गुफाएँ तमिलनाडु में आज भी मौजूद हैं। प्रारंभ में जैन श्रमणों की संख्या कम होने से इस प्रकार के आयतनों से काम चल जाता रहा होगा लेकिन जब उनकी संख्या में वृद्धि हुई तब गुफा खुदवाने की भी आवश्यकता हुई होगी। परिणामस्वरूप विभिन्न पर्वत शृंखलाओं में अन्य धर्मावलम्बियों की तरह जैन गुफाएँ भी खोदी गईं। प्रारंभिक जैन गुफाएँ जैन श्रमणों के निवास एवं तपस्या हेतु ही खोदी गईं क्योंकि उनमें ऐसी कोई भी वस्तु नहीं प्राप्त हुई है जिसका उपयोग किसी धार्मिक प्रयोजन यानी पूजा-पाठ आदि के लिये किया जाता रहा हो।

जैनधर्म में मुनियों के लिये न केवल कठिन तपस्या का विधान किया गया है अपितु शारीरिक एवं मानसिक क्लेशों को सहन करने का भी उपदेश दिया गया है। उड़ीसा की जैन गुफाओं से इसका समर्थन होता है। वहाँ की कुछ जैन गुफाएँ इतनी संकरी हैं कि उनमें घुटने के बल लेटकर जाना पड़ता है और कुछ की ऊँचाई इतनी कम है कि उनमें सीधे खड़ा नहीं हुआ जा सकता। वहाँ के बाघ नामक गुफा से संकेत मिलता है कि उसमें रहने वाला श्रमण मृत्युमुख में रहते हुये ध्यान में तल्लीन रहता था क्योंकि गुफा का आकार व्याघ्रमुख जैसा है।

प्रारंभिक जैन गुफाएँ बिलकुल सादी एवं आवासीय हैं। कालान्तर में जब भक्ति आन्दोलन ने जोर पकड़ा और मूर्तिपूजा का प्रचार-प्रसार बढ़ा तब जैन गुफाओं में तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ भी उत्कीर्ण की जाने लगीं। जैनधर्म की मान्यता है कि इस सृष्टि का न तो कोई कर्त्ता है और न ही संहारकर्त्ता, अपितु यह स्वतः उत्पन्न है और मनुष्य अपने अच्छे-बुरे कर्म के द्वारा ही विभिन्न गतियों को प्राप्त होता है। अतएव प्रत्येक मनुष्य का परम लक्ष्य मोक्ष होना चाहिए क्योंकि मोक्ष मानव देह से ही संभव है। तीर्थंकर ऐसी ही महान् आत्माएँ हैं जो स्वयं पर विजय प्राप्त कर मुक्त हो गये हैं। इसीलिए उन्हें जिन (विजयी) भी कहा जाता है। मानवकल्याण हेतु वे उस परमतत्त्व का उपदेश करते थे और घूम-घूम कर उसका प्रचार-प्रसार करते थे। प्रत्येक इच्छुक व्यक्ति उसे ग्रहण कर सकता था क्योंकि वहाँ ऊँच-नीच, जाति-पाँति का कोई विभेद नहीं था। जैनधर्म में ऐसे चौबीस तीर्थंकर हुये हैं जिन्होंने धर्मोपदेश किया था। यही कारण है कि तीर्थंकर जैनधर्म में सबसे अधिक पूजनीय माने जाते हैं। जैन मतावलम्बी उनकी उसी प्रकार पूजा-अराधना करते हैं जिस प्रकार बौद्ध महात्मा बुद्ध की और हिन्दू शिव, विष्णु, सूर्य, महिषमर्दिनी आदि देवी-देवताओं की करते हैं। कालान्तर में जब जैन देवमण्डल का विकास हुआ तब प्रत्येक तीर्थंकर के साथ एक यक्ष और एक यक्षी की कल्पना की गई जो उनके अनुचर के रूप में दर्शाये जाने लगे। जैन गुफाओं में, खासतौर पर एलोरा की जैन गुफाओं में, बाहुबली की प्रतिमाएँ प्रमुखता से उत्कीर्ण हैं। बाहुबली प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ के पुत्र थे और उन्होंने घोर तपस्या कर केवलज्ञान प्राप्त किया था। इस घनघोर तपस्या का चित्रण उनकी प्रतिमाओं में भी हुआ है। उनके अविकल रूप को पैरों पर चढ़े वाल्मीकि और शरीर के अंग-प्रत्यंगों से लिपटी लताओं द्वारा दर्शाया गया है। जैन गुफाओं में कुछ एक हिन्दू देवी-देवताओं का भी चित्रण हुआ है जैसे उड़ीसा के खण्डगिरि नामक पहाड़ी में उत्कीर्ण अनन्तगुंफा में गजलक्ष्मी का अंकन।

प्राचीन भारत में इमारतों का दो प्रकार से निर्माण हुआ है- शैलकृत और चिनाईकृत। चिनाई के इमारतों में प्रयुक्त होने वाली निर्माण-सामग्री यानी ईंट, पत्थर, चूना आदि अन्यत्र से लाई गई है और इच्छित स्थान पर भवन का निर्माण कर दिया

गया है परन्तु शैलकृत इमारतें वहीं बनाई जा सकती हैं जहाँ जीवित चट्टान उपलब्ध हो। इसीलिए मैदानी इलाकों में चिनाईकृत भवनों का और पर्वत शृंखलाओं में शैलकृत गुफाओं का निर्माण हुआ है।

चिनाईकृत भवनों की तुलना में शैलकृत इमारतें अधिक स्थायी एवं सुरक्षित हैं। इसका प्रमुख कारण उनका एकाश्मक होना है। फिर भी जहाँ की चट्टान मुलायम किस्म की है वहाँ की गुफाएँ अधिक नष्ट हुई हैं। लेकिन इन गुफाओं को सबसे अधिक नुकसान मनुष्यों ने पहुँचाया है। पत्थर के भूखे लोग बिना कुछ समझे-बूझे इन गुफाओं को खोदकर न केवल उन्हें नष्ट कर डाले हैं अपितु इनका स्वरूप भी विकृत कर डाले हैं। उड़ीसा की उदयगिरि-खण्डगिरि की जैन गुफाएँ इन दरिन्दों की सर्वाधिक शिकार हुई हैं। तमिलनाडु में तो जैन गुफाओं को अधिकृत कर उन्हें हिन्दू गुफाओं के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है।

शैलकृत और चिनाईकृत इमारतों के अंग-प्रत्यंगों में विशेष अन्तर नहीं है। जो गुफाएँ सुरंग की तरह हैं उनका आंतरिक स्वरूप चिनाईकृत भवनों की तरह ही है। लेकिन जिन गुफाओं में शैलकर्म अन्दर और बाहर दोनों तरफ किया गया है वे चिनाईकृत भवनों की लगभग अनुकृति हैं। एलोरा का छोटा कैलाश और इन्द्रसभा का सर्वतोभद्र विमान इसके उदाहरण हैं। अंकाई-तंकाई की जैन गुफाओं के द्वार तो समसामयिक चिनाई के मंदिरों के द्वारों जैसे ही बनाये गये हैं।

शैलकृत गुफाओं के निर्माण में समकालीन काष्ठकर्म की पद्धति अपनाई गई है। यह प्रभाव प्रारंभिक गुफाओं में अधिक दिखाई देता है। उदाहरण के लिए राजगृह और उड़ीसा की गुफाओं के द्वारों की बगली शाखाएँ थोड़ा अन्दर की ओर झुकी हुई हैं। यह पद्धति काष्ठ की इमारतों में मिलती है क्योंकि बाहरी फेंकाव को रोकने के लिये यह जरूरी है परन्तु शैलकृत स्थापत्य में इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। चूँकि शैलवर्धकी काष्ठ की इमारतों का नकल कर रहा था इसलिये वह उस शैली को बिलकुल छोड़ न सका।

गुफा खोदने का काम बहुत आसान नहीं रहा होगा। आम आदमी यही सोचता होगा कि शैलवर्धकी छेनी-हथौड़ी लेकर कार्यस्थल पर जाता रहा होगा और बिना किसी पाइटभाड़े के गुफा खोदकर तैयार कर देता रहा होगा। लेकिन यह कार्य उतना आसान नहीं रहा होगा जितना देखने में लगता है। अत्यन्त सावधानी और योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने पर भी खामियाँ रह जाने की पूरी गुंजाइस रहती थी क्योंकि यदि एक बार गलती से कोई चट्टान कट गयी तो वह सदा के लिये नष्ट हो जाएगी। उदाहरण के लिए एलोरा के प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर (गुफा संख्या १६) में शैलवर्धकी ने कटाव करते समय जो भूलें कीं उन्हें उसने गोपुर, नन्दीमण्डप और महामण्डप को सेतुओं द्वारा जोड़ कर सुधार करने का प्रयास किया है।[८] इसे स्थापत्यगत दोष

ही कहा जाएगा। इसके विपरीत चिनाईकृत इमारतों में जोड़ने-घटाने की पूरी गुंजाइस होने से उनमें दोष आने की कम संभावना होती है। इसीलिए शैलकृत इमारत बनाने से पूर्व उसके सही स्वरूप का भान होना शैलवर्धकी के लिए आवश्यक होता था क्योंकि उसकी छोटी-सी भूल संपूर्ण इमारत को विकृत कर सकता था। अत: शैलकृत स्थापत्य में सर्वप्रथम गुफा का समुचित विन्यास तैयार किया जाता था और फिर खुदाई का कार्य प्रारंभ किया जाता था। चूँकि शैलघरों में खुदाई का कार्य ऊपर से नीचे की ओर किया जाता था अत: तक्षण के समय उसमें पाइट आदि लगाने की कोई अवश्यकता नहीं होती थी।

वास्तुशास्त्र के ग्रंथों में शैलघरों का कोई उल्लेख नहीं है। उनके लिए वास्तुशब्दावली भी उपलब्ध नहीं है। तथापि जो शब्दावली अन्य इमारतों के लिये मान्य है उसे जैन गुफाओं के लिए भी स्वीकार किया जा सकता है। प्रत्येक इमारत में अधिष्ठान, दीवाल और छत आवश्यक रूप से होते हैं। इनमें से किसी के अभाव में वह इमारत पूर्ण नहीं हो सकती है। जैन गुफाओं में गुफा की फर्श के नीचे का भाग ही अधिष्ठान है। जो आस्थान चट्टानी भित्ति द्वारा घेरा जाता है वही उसकी दीवाल है। जो चट्टान आस्थान को ढंके हुये है वही उसकी छत या वितान है। छत को रोकने के लिये प्राय: स्तंभ खड़े किये गये हैं। छत को मजबूती प्रदान करने के लिए स्तंभों पर भारपट्ट भी बिछाये गये हैं। यदि जगह छोटी है तो स्तंभ खड़ा न कर उसकी छत को भित्तियों पर ही टिकाया गया है। समय बीतने के साथ गुफाओं के वास्तु में परिवर्तन मिलता है। जहाँ प्रारंभिक गुफाएँ आवासीय उद्देश्य के लिए खोदी गईं, उनका आकार छोटा है और उनमें मूर्तिशिल्प कम है वहीं बाद की गुफाएँ पूजागृह के लिए खोदी गईं और पूजापाठ के लिए उनमें पर्याप्त मात्रा में मूर्तियाँ भी काढ़ी गईं।

जैन गुफाएँ या तो सुरंग की तरह हैं या उनके सामने स्तंभयुक्त बरामदा की रचना की गई है। जहाँ स्तंभयुक्त बरामदा है वहाँ गुफा का कुछ अंश तो बाहर से ही दीख जाता है लेकिन उसका असली रूप तो अन्दर प्रवेश करने पर ही ज्ञात होता है। बड़े आकार की गुफाओं में प्रांगण भी बनाया गया है। कभी-कभी गुफा को सीमांकित करने के लिये कपिशीर्षकयुक्त प्राकार और गोपुरद्वार भी बनाये गये हैं। यदि गुफा पूजागृह है तो उसके अन्दर मण्डप, गर्भगृह और छोटी-बड़ी देवकुलिकाएँ अथवा खत्तक बनाये गये हैं। स्तंभ, छत और द्वार के मुहार को सुसज्जित किया गया है। कुछ स्थानों पर दोमंजिली गुफाएँ भी बनाई गई हैं। कुछ गुफाएँ अन्दर और बाहर दोनों तरफ से काटकर बनाई गई हैं। ऐसी एकाश्मक गुफाएँ केवल एलोरा में ही उपलब्ध हैं और वे समकालीन चिनाई के मंदिरों की लगभग अनुकृति हैं।

शैलकृत इमारतों की कुछ सीमाएँ हैं। उन्हें वहीं बनाया जा सकता है जहाँ

पहाड़ी चट्टान हो। जहाँ पहाड़ी होगी वह स्थान बस्ती से दूर होगा क्योंकि कृषि योग्य भूमि के अभाव में लोग वहाँ बसेरा नहीं करेंगे। अतएव पहाड़ी में बने देवालयों में दर्शन-पूजा हेतु बस्ती के लोगों या मैदानी इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए बहुत आसान नहीं रहा होगा क्योंकि आवागमन का जो साधन आज उपलब्ध है उतना उस समय नहीं था जब ये गुफाएँ बनी थीं। संभवतः यही कारण है कि जब चिनाईकृत पूजागृहों का निर्माण भार एवं संतुलन पद्धति से प्रारम्भ हुआ तब शैलकृत स्थापत्य को क्रमशः तिलांजलि दे दी गई। इस नई पद्धति से न केवल इच्छित स्थान पर इमारतों के निर्माण की सुविधा प्राप्त हुई अपितु शैलकृत भवनों की जटिल प्रक्रिया से भी मुक्ति मिली। इतना ही नहीं, चिनाईकृत पद्धति से भव्य एवं विशाल इमारतों का निर्माण भी संभव हुआ। लेकिन एक दृष्टि से शैलकृतियों की कोई सानी ही नहीं है। जिस प्रकार सम्राट अशोक ने जगह-जगह चालीस-पचास फुट ऊँचे सुन्दर स्तंभ गड़वाये उसी प्रकार जैनियों ने श्रवणबेलगोल, कारकल और ग्वालियर में शैलकृत ऊँची-ऊँची जिन प्रतिमाएँ बनवाईं। इतनी ऊँची प्रतिमाएँ भारत के अन्य धर्मावलम्बियों ने समकालीन समय में नहीं बनवाईं।

गुफाएँ चित्रकला के लिए सबसे उपयुक्त पृष्ठभूमि तैयार करती हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि उनमें किसी प्रकार का जोड़ नहीं होता है। संभवतः इसीलिए अजंता के भित्तिचित्र अधिक सुरक्षित और अच्छे बन पड़े हैं। सित्तनवासल की जैनगुफा में भी इसी प्रकार सुंदर चित्र आज संरक्षित हैं और अजंता की याद ताजा कर देते हैं।

भारत में लगभग १२०० गुफाएँ विभिन्न अवस्थाओं में उपलब्ध हैं। उनमें तीन-चौथाई बौद्ध और शेष जैन एवं हिन्दू संप्रदाय से संबंधित हैं। इन गुफाओं का पहला समूह गया (बिहार) की बराबर और नागार्जुनी की पहाड़ियों में सम्राट अशोक और उसके पौत्र दशरथ ने आजीवक भिक्षुओं के निवास हेतु खुदवाया था। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि आजीवक संप्रदाय के संस्थापक मक्खलिगोशाल तीर्थंकर महावीर के ही शिष्य थे परन्तु कुछ सैद्धान्तिक मतभेद के कारण उन्होंने अपना पृथक् संप्रदाय बना लिया।[१] जिस प्रकार गया की गुफाएँ आजीवकों के लिए बनाई गईं उसी प्रकार राजगृह की सोनभण्डार नामक गुफाएँ जैन श्रमणों को दान दी गईं। आवासीय गुफाएँ द्वितीय सदी ईसवी तक बनती रहीं और इस कार्य में बौद्ध और जैन दोनों ने भूमिका निभाई। लेकिन बौद्धों ने आवासीय गुफाओं (बिहार या संघाराम) के साथ-साथ पूजा-पाठ के लिए अनेक चैत्यगृह भी बनवाये। इन चैत्यगृहों में पूजा हेतु एकाश्मक स्तूप उत्कीर्ण किये गये। इस प्रकार के चैत्यगृह जैनियों ने नहीं बनवाये। दो सौ पचास वर्ष बाद यानी पाँचवी सदी ईसवी के मध्य से जब गुफाओं का कटाव पुनः प्रारंभ हुआ तब बौद्धों ने चैत्यगृह और विहार तो बनवाये लेकिन उनमें बुद्ध की मूर्तियाँ भी उत्कीर्ण करवाईं। इसकी देखा-देखी जैनियों ने भी अपनी गुफाओं

में तीर्थंकरों की मूर्तियाँ प्रदर्शित करवाई। इसी काल से हिन्दू धर्मावलम्बियों ने भी अपने पूजागृह चट्टानों में कटवाने प्रारंभ किये। आठवीं सदी ईसवी में भारत में हिन्दूधर्म का प्रभाव इतना अधिक हुआ कि बौद्धधर्म का लगभग खातमा हो गया लेकिन जैनधर्म यथावत् फूलता-फलता रहा और जैन गुफाएँ अनवरत बनती रहीं। इस काल की सभी जैन गुफाएँ पूजागृह हैं और वास्तु की दृष्टि से उनमें और हिन्दू गुफाओं में विशेष अन्तर नहीं है।

दूसरी सदी ईसवी तक बनी जैन गुफाओं से यह पता लगाना कठिन है कि वे श्वेताम्बर संप्रदाय की हैं या दिगम्बर संप्रदाय की क्योंकि उनमें तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण नहीं हैं। बाद की सभी जैन गुफाओं में तीर्थंकरों की नग्न मूर्तियों के उत्कीर्ण होने से उनके दिगम्बर होने की स्पष्ट सूचना मिलती है। नग्नता केवल जिन मूर्तियों में ही दर्शायी गई है। ऋषभनाथ, पार्श्वनाथ और बाहुबली की प्रतिमाएँ तो क्रमशः उनके लट, सर्पछत्र और शरीर पर चढ़ी लताओं से आसानी से पहचानी जा सकती हैं परन्तु अन्य तीर्थंकरों की प्रतिमाओं की पहचान बिना उनके लांछन के संभव नहीं है। पद्मासन अवस्था में उन्हें हमेंशा ध्यानमुद्रा में और स्थानक अवस्था में हमेंशा कायोत्सर्गमुद्रा में दर्शाया गया है। कला की दृष्टि से तीर्थंकर प्रतिमाएँ सौन्दर्य विहीन हैं जबकि उनके शासनदेवताओं की मूर्तियाँ एवं अन्य मूर्तियाँ काफी आकर्षक हैं। गुफाओं को आकर्षक ढंग से सजाया भी गया है। यह सजावट गुफा की मुहार, द्वार, स्तंभ, भारपट्ट और वितान में मिलती है।

प्राकृतिक छटा और मनोहारी रूपकाम की वजह से अधिकांश जैन गुफाएँ आज भी आकर्षण का केन्द्र बनी हुई हैं। उनसे न केवल समकालीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन का परिचय प्राप्त होता है अपितु भारतीय कला एवं स्थापत्य के गौरवशाली इतिहास को समझने में सहायता भी मिलती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि जितने लंबे समय तक जैन गुफाएँ खोदी गईं उतनी लंबी अवधि तक अन्य किसी भी धर्मावलम्बी ने अपनी गुफाएँ नहीं खुदवाईं। यदि जैन गुफाओं को अलग कर दिया जाय तो भारतीय गुहा स्थापत्य का अध्ययन अधूरा रह जाएगा। चूँकि अभी तक जैन गुफाओं का स्वतंत्र रूप से अध्ययन नहीं किया गया है इसलिये प्रस्तुत अध्ययन उस दिशा में एक प्रयास मात्र है।

संदर्भ :

१. हीरालाल जैन, *भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान*, भोपाल, १९७५, पृ० ११-१८।
२. जिनप्रभसूरि, *विविधतीर्थकल्प*, संपा०- जिनविजय मुनि, शांतिनिकेतन, १९३४, पृ० १७-२०।

३. राजबली पाण्डेय, *हिस्टोरिक एण्ड लिटरेरी इंस्क्रिप्सन्स*, वाराणसी, १९६२, पृ० ४७।

४. आ० के० मुकर्जी, *दी एज आफ इंपिरियल यूनिटी*, संपा० आर० सी० मजुमदार, बंबई, १९६८, पृ० ६१।

५. वासुदेवशरण अग्रवाल, *भारतीय कला*, वाराणसी, १९७७, पृ० २२३-२४।

६ राजबली पाण्डेय, *पूर्वोक्त*, पृ० ४५-४८।

७. *वही*, पृ० २४५।

८. पर्सी ब्राऊन, *इंडियन आर्किटेक्चर* (बुद्धिस्ट एण्ड हिन्दू पीरियडस्), बंबई, १९७६, पृ० ७४।

९. हीरालाल जैन, *पूर्वोक्त*, पृ० ३०६।

द्वितीय अध्याय

जैन गुफाओं का विवरण

जैन गुफाएँ भारत के लगभग हर क्षेत्र में स्थित हैं (चित्र संख्या १)। वे वास्तु एवं शिल्प की भण्डार हैं। उनका विस्तृत विवरण इस लघु पुस्तिका में न तो संभव है और न ही अपेक्षित है। चूँकि प्रस्तुत अध्ययन स्थापत्यगत है अत: इसमें मूर्तिशिल्प, प्रतिमालक्षण और चित्रकला की विस्तार से चर्चा नहीं की गई है। इसका प्रमुख कारण यह है कि अन्यान्य ग्रन्थों में इन विषयों पर विस्तार से लिखा जा चुका है। निम्नोक्त पृष्ठों में जैन गुफाओं का तिथिक्रम से वर्णन किया गया है। जिस स्थान पर एकाधिक जैन गुफाएँ हैं वहाँ की सभी गुफाओं का विवरण एक साथ कर दिया गया है। ऐसे स्थलों की गुफाओं का विवरण तिथिक्रम के अनुसार न होकर क्रमानुसार है।

राजगिर की जैन गुफाएँ :

राजगिर या राजगृह (नालन्दा, बिहार) मगध जनपद की राजधानी थी। वहाँ की एक पहाड़ी में सोनभण्डार नामक दो जैन गुफाएँ हैं जो कि मौर्यकालीन बराबर और नागार्जुनी की गुफाओं से बहुत मिलती-जुलती हैं (चित्र संख्या २, ३, १६)। ये गुफाएँ भी पहाड़ी के समानान्तर खोदी गई हैं। बड़ी गुफा ३४' लम्बी, १७' चौड़ी और ११$^{१}/_{२}$' ऊँची है। इसकी ६$^{३}/_{४}$' लम्बवत् दीवाल चिकनाई गई है। छत थोड़ा मेहराबदार है। इसके एक किनारे पर प्रवेशद्वार और दूसरे किनारे पर वर्गाकार खिड़की है। गुफाओं में खिड़की का कटाव सर्वप्रथम यहीं मिलता है। द्वारशाखाएँ अंदर की ओर थोड़ी झुकी हुई हैं। गर्भशाला के सामने आठ फुट चौड़ा मुखमण्डप है जिसे दाहिनी तरफ थोड़ा हटाकर बनाया गया है। मुखमण्डप काष्ठ का था जो अब नदारत है परन्तु चट्टान में काटे गये छेद अवशिष्ट हैं जिनमें कभी काष्ठ की धन्नियाँ फँसाई गई थीं।

यहाँ की दूसरी गुफा उपर्युक्त से केवल तीस फुट दूर है। यह भी उसी शैली की है परन्तु आकार में उससे छोटी (२२'×१७') है और इसकी छत गिर गई है।

बड़ी गुफा के मुहार पर चौथी सदी ईसवी का एक अभिलेख है जिसमें उल्लेख है कि आचार्यरत्न मुनि वैरदेव ने इन गुफाओं में अर्हतों की प्रतिमाएँ स्थापित करवाईं।[१] अब ये मूर्तियाँ वहाँ नहीं हैं।

इन गुफाओं का पहाड़ी के समानान्तर विन्यास, सलामीदार द्वारशाखाएँ, मेहराबदार छत और चमकदार प्रभा बराबर और नागार्जुनी की गुफाओं की तरह ही

है परन्तु इनमें द्वार और खिड़की दोनों बनाये गये हैं तथा इनके सामने काष्ठ का मुखमण्डप बनाया गया है। इस प्रकार इनमें कुछ नवीनता है। इनसे बाद में बनी उड़ीसा की कुछ एक जैन गुफाओं और पश्चिम भारत के बौद्ध चैत्यगृहों में भी काष्ठ का मुखमण्डप बनाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि मूलतः ये एक कक्ष्यीय गुफाएँ थीं और मौर्य काल में जैन श्रमणों के निवास के लिए खोदी गई थीं। इन पर जैनों का अधिकार चौथी सदी ईसवी तक बना रहा क्योंकि इस काल का वहाँ से एक अभिलेख मिला है। संभवतः इसी समय काष्ठ का मुखमण्डप जोड़ा गया। मुखमण्डप के बाद में बनने का संकेत उसके विन्यास से भी मिलता है क्योंकि उसे गुफा के बिलकुल सीध में न बनाकर थोड़ा दाहिनी तरफ हटाकर बनाया गया है। यहाँ यह उल्लेख कर देना आवश्यक है कि बौद्ध गुफाओं की तरह जैन गुफाओं में भी मूलनायक के रूप में तीर्थंकर मूर्तियों की स्थापना गुप्तकाल से ही प्रारंभ हुई। तीर्थंकर की मूर्ति पहली बार उदयगिरि (म०प्र०) की गुफा में बनाई गई जो कि गुप्तकालीन गुफा है।

पभोसा की जैन गुफा :

इलाहाबाद से ३२ मील दक्षिण-पश्चिम में पभोसा नामक एक गाँव है जो गंगा-यमुना की अन्तरवेदी में स्थित एक पहाड़ी पर बसा है। इसी पहाड़ी की क्वार्टजाइट चट्टान में एक गुफा है जो लगभग ९' लम्बी यानी गहरी, ७१/२' चौड़ी और ३१/४' ऊँची है। श्रमणों के उठने-बैठने के लिए इसमें बाईं तरफ एक आसनपिण्डिका (९' × १३/४' × ११/४') बनाई गई है जैसा उदयगिरि-खण्डगिरि की जैन गुफाओं में मिलता है। इसकी छत मध्यसूत्र के दोनों तरफ गोलाकार और पार्श्व में समतल है। इसका द्वार (२१/४'×१३/४') इतना छोटा है कि उसमें घुटने के बल लेटकर ही जाया जा सकता है। द्वार के बायें तरफ लगभग डेढ़ फुट व्यास की दो खिड़कियाँ काटी गई हैं। गुफा में दो अभिलेख हैं जिनमें उल्लेख है कि प्रस्तुत गुफा को अहिच्छत्र के आषाढ़सेन ने काश्यपीय अर्हन्तों के लिये खुदवाया था। तीर्थंकर महावीर कश्यप गोत्र के ही थे। अभिलेखों की लिपि की शैली प्रथम सदी ईसवी पूर्व की प्रतीत होती है और यही इस गुफा की तिथि भी जान पड़ती है।[२]

उड़ीसा की जैन गुफाएँ :

भुवनेश्वर (उड़ीसा) से चार मील उत्तर-पश्चिम में उदयगिरि और खण्डगिरि नामक बलुए पत्थर की दो पहाड़ियाँ हैं जिनके बीच में एक पहाड़ी रास्ता है। यहाँ पर छोटी-बड़ी लगभग ३३ गुफाएँ हैं जिनमें १८ उदयगिरि में और १५ खण्डगिरि में हैं। ये गुफाएँ चेदिराज खारवेल और उसके परिजनों ने जैन श्रमणों के रहने व तपस्या करने के लिए खुदवाई थीं। लेकिन इनमें एक भी पूजागृह नहीं है जब कि

पश्चिम भारत की समसामयिक बौद्ध गुफाओं में भिक्षुओं के निवास हेतु विहार और पूजा के लिए चैत्यगृह ये दोनों बनाये गये हैं। संभवत: यहाँ का पूजागृह शैलकृत न होकर चिनाईकृत था। हाथीगुंफा नामक प्राकृतिक गुफा के ऊपरी सतह पर वृत्तायत प्रकार के चिनाईकृत चैत्यगृह का अवशेष प्राप्त भी हुआ है। ग्यारहवीं-बारहवीं सदी ईसवी में खण्डगिरि की कुछ गुफाओं में आवश्यक परिवर्तन एवं परिवर्धन कर उन्हें पूजागृह अवश्य बना दिया गया है। यह कार्य तीर्थंकर मूर्तियों का कटाव कर, फर्श की गहराई बढ़ाकर और गर्भशालाओं एवं मुखमण्डप के बीच की दीवालों को हटाकर किया गया है। चूँकि यहाँ कोई पहाड़ी नदी नहीं है अत: दोनों पहाड़ियों पर पानी पीने के लिए कुण्ड बनाये गये हैं। वास्तुगत विशेषताओं और अभिलेखों की लिपि के आधार पर इनकी तिथि ईसा पूर्व प्रथम सदी निर्धारित की जाती है।[३]

ये गुफाएँ किसी निश्चित योजना के अनुसार न होकर पहाड़ी की स्वाभाविक ऊँचाई-निचाई के अनुसार खोदी गई हैं और आवश्यकतानुसार उन्हें सोपान से जोड़ दिया गया है। खुदाई का काम चट्टान के ऊपरी सिरे के निकट से नीचे की ओर किया गया है ताकि उन पर अधिक भार न पड़े क्योंकि यहाँ की बलुए पत्थर की चट्टान बहुत मुलायम किस्म की है। उदयागिरि की गुफाएँ आकार में बड़ी और अधिक सुरक्षित हैं जब कि खण्डगिरि की गुफाएँ छोटी और परिवर्तित हैं। इसीलिए कुछ लोगों का अनुमान है कि खण्डगिरि की अधिकांश गुफाएँ बाद की हैं। लेकिन यह भ्रम इस कारण से है कि उनमें मध्यकालीन मूर्तियाँ और अभिलेख उत्कीर्ण हैं और उनके बीच की दीवालों को तोड़कर निकाल देने से उनका स्वरूप विशाल मण्डप जैसा हो गया है। पश्चिम भारत की हीनयानकालीन बौद्ध गुफाओं की तरह उड़ीसा की इन प्राचीन जैन गुफाओं में भी तीर्थंकर को मानवरूप में नहीं दर्शाया गया है अपितु प्रतीक रूप में ही (यथा चैत्यवृक्ष या केवलवृक्ष की पूजा का दृश्य) अंकित किया गया है। उनमें कहीं भी स्तूप, चक्र अथवा चरणपादुका का अंकन नहीं है।

उदयगिरि-खण्डगिरि की पहाड़ी में काटी गईं गुफाओं में आयताकार एक, दो, तीन या चार गर्भशालाएँ यानी कोठरियाँ और उनके सामने मुखमण्डप यानी बरामदा है। गर्भशालाएँ मुखमण्डप के पृष्ठभाग में अनिवार्यरूप से बनाई गई हैं लेकिन कुछ गुफाओं में इनका विन्यास पृष्ठ एवं पार्श्व दोनों तरफ किया गया है। कुछ एक गुफाओं (यथा उदयगिरि की गुफा संख्या ३) के सामने बरामदा नहीं है और उनके मुहार पर एक गहरी पट्टी है जिसका कटाव संभवत: पानी के बहाव को तोड़ने अथवा काष्ठ के छाजन को रोकने के लिए किया गया है। बड़े आकार की कुछ गुफाएँ (रानीगुंफा और स्वर्गपुरी-मंचपुरी) दोमंजिली हैं और उनकी ऊपरी मंजिल को निचली मंजिल के ठीक ऊपर न बनाकर पहाड़ी में थोड़ा पीछे की ओर हटाकर बनाया गया है जिससे उनके सामने एक खुली छत तैयार हो गई है। कुछ गुफाओं में (उदयगिरि

की गुफा संख्या १, ९, एवं १०; खण्डगिरि की गुफा संख्या ३) मुखमण्डपयुक्त गर्भशालाओं के सामने चतुश्शाल आँगन भी बनाया गया है।

गर्भशालाओं का आंतरिक भाग बिलकुल सादा है और उनको अलग करने वाली दीवालें बहुत पतली हैं। फुटकल सामान रखने के लिए उनमें ताखे भी नहीं हैं। उनमें सोने-बैठने के लिए चौकियाँ न काटकर फर्श को ही सामने तरफ ढालवाँ कर दिया गया है। अधिकांश गर्भशालाओं की ऊँचाई इतनी कम है कि उनमें आदमी सीधे खड़ा नहीं हो सकता। कुछ तो इतनी सँकरी हैं कि उनमें लेटना भी कठिन है। उनके द्वार छोटे हैं जिससे उनमें घुटने के बल सरक कर जाना पड़ता है। उनकी छत अर्धगोलाकार है। अंदर प्रकाश जाने के लिए उनमें प्रायः एकाधिक द्वार हैं। कुछेक गर्भशालाओं में छोटी खिड़कियाँ भी हैं। गर्भशालाओं के स्वरूप से लगता है कि वे जैन श्रमणों के रहने और उपासना करने के लिए ही खोदी गई थीं।

गर्भशालाओं की बाह्यभित्ति उड़ीसा की गुफाओं का सबसे आकर्षक भाग है। उनके प्रवेशद्वारों की शाखाएँ काष्ठकर्म की अनुकृति हैं क्योंकि वे थोड़ा सलामी में हैं। द्वारशाखाओं में अवशिष्ट छेदों से ज्ञात होता है कि उनमें कभी लकड़ी के किवाड़ अटकाये गये थे। द्वार के पार्श्वस्तंभ चौकोर एवं सादे हैं परंतु उनके शीर्षक बहुत अलंकृत हैं। कहीं-कहीं पार्श्वस्तंभों की यष्टि क्रमशः पधराई गई चौकोर चौकियों के ऊपर रखे घट में प्रविष्ट है और उनका शीर्षक औंधा पद्म, मेधियुक्त चौकी और सुन्दर पशुशीर्षक से बना है। शीर्षकों से उदित अर्धवृत्ताकार कमानचे हैं जिन पर मकर, गज, वृषभ अथवा हरिण-मुख से निर्गत भाँति-भाँति के लतर उत्कीर्ण हैं। कमानचों की बाह्यरेखा को शीर्षबिन्दु पर नोकीला कर या तो सादा छोड़ दिया गया है या वहाँ त्रिरत्न अथवा श्रीवत्स बना दिया गया है। कमानचों के गोलम्बर में वृक्षपूजा, गजलक्ष्मी आदि का अंकन है। कमानचों के बीच के भित्तिभाग पर कई आकर्षक दृश्य उत्कीर्ण हैं। दृश्यों के नीचे दो या तीन सूचियों से युक्त वेदिका का कटाव है जिसे यक्ष-यक्षी, गण आदि की ब्रैकेट मूर्तियाँ उठाये हुये हैं।

मुखमण्डप की फर्श एवं छत गर्भशालाओं से नीची है। उनके सामने एक कतार में स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ (पार्श्वस्तंभ) खड़े किये गये हैं और बरसाती पानी से बचाव के लिए उनके मुहार पर थोड़ा गोलाकार छाद्य निकाले गये हैं। उनमें उठने-बैठने के लिए आसनपिण्डिका और सामान रखने के लिए ताखे बनाये गये हैं। आमतौर पर स्तंभ ऊपर-नीचे चौकोर और बीच में अठपहल हैं और उन पर प्रायः आकर्षक पशुशीर्षक लगाये गये हैं। चौकोर यष्टि के मिलन बिन्दुओं के कोनों को कोरकर गोलाकार कर दिया गया है। पार्श्वस्तंभों की सम्मुखीन यष्टि भाग पर प्रायः शस्त्रधारी रक्षापुरुषों या राजपुरुषों की प्रभावशाली मूर्तियाँ खड़ी की गई हैं।

उदयगिरि की गुफाएँ :

गुफा संख्या १ (रानीगुंफा) : उदयगिरि की गुफाओं में यह (चित्र संख्या १७) सबसे विशाल और महत्त्वपूर्ण है। यह दोमंजिली है। इसमें एक चतुरस्र आँगन है जिसके पृष्ठ एवं पार्श्व भाग में मुखमण्डप से युक्त गर्भशालाएँ बनाई गई हैं जबकि सम्मुखीन पश्चिमी तरफ प्रवेशमार्ग है। इसकी ऊपरी मंजिल निचली के ठीक ऊपर न होकर थोड़ा पीछे की ओर है जिससे उसके सामने एक खुली छत तैयार हो गई है। छत पर जाने के लिए दोनों पार्श्वों में सोपान बनाया गया है। छत से दर्शक नीचे के खुले आँगन को भलीभाँति देख सकता है। खुली छत के दाहिनी ओर एक बड़ी आसन्दी है जिसमें बाँह और पावदान दोनों बनाये गये हैं। यह आसन किसी विशिष्ट व्यक्ति के लिए बना प्रतीत होता है। बड़ी गर्भशालाएँ तो निःसंदेह श्रमणों के रहने के स्थान थे परन्तु प्रस्तुत गुफा में कुछ ऐसे भी कक्ष्य हैं जिनका उपयोग फुटकल सामान रखने के लिए किया जाता रहा होगा। ऐसे ही दो कक्ष्य निचली मंजिल के दो कर्ण प्रदेशों में छत के नीचे बनाये गये हैं। यह गुफा वास्तु से अधिक अपने मूर्ति अलंकरण के लिए विख्यात है। इसकी निचली मंजिल के पृष्ठ भाग का मुखमण्डप गिर गया है जिससे उसके मुहार की मूर्तियाँ बहुत कुछ नष्ट हो गई हैं।

निचली मंजिल (चित्र संख्या ४ और ६) के दाहिने पार्श्व में तीन द्वारों से युक्त एक गर्भशाला और आसन्दीयुक्त मुखमण्डप है। मुखमण्डप के स्तंभ टूट गये हैं परन्तु उनके शीर्षक मौजूद हैं जिन पर एकल वृषभ या सिंह अथवा उनके संघाट उत्कीर्ण हैं। दो भित्तिस्तंभों का अधिष्ठान क्रमशः घटते हुये चौकोर चौकियों के पीठ से बना है; उनकी यष्टि क्रमशः चौकोर, अठपहल, चौकोर, अठपहल और चौकोर है; और उनका शीर्षक औंधा पद्म और गज अथवा अश्व मूर्तियों से बना है। यष्टि के सम्मुखीन पटल पर खड्ग एवं भाला लिये हुये रक्षापुरुष खड़े हैं। मुखमण्डप के प्रत्येक पार्श्वभित्ति में एक ताखा है। गर्भशाला के द्वारों के पार्श्वस्तंभों के सिरे पर मेधियुक्त चौकी और वृषभ या सपक्ष सिंह के शीर्षक हैं। अर्धवृत्ताकार कमानचों पर पशुमुख से निर्गत पद्मलता अथवा पत्रलता का अंकन है। कमानचों के शीर्ष पर त्रिरत्न या श्रीवत्स उत्कीर्ण है। कमानचों के बीच के कछौटों पर नीचे तरफ वेदिका अभिप्राय और ऊपरी तरफ चार दृश्य अंकित हैं। बायें से प्रथम दृश्य में हाथ जोड़े एक मानव दम्पती है। उसके बायें तरफ पेड़ के नीचे एक बौना और दायें तरफ उपहार की थाल लिये एक स्त्री खड़ी है। द्वितीय दृश्य में हाथ जोड़े एक पुरुष और अगल-बगल दो स्त्रियाँ बैठी हैं। उनके बायें और दायें छोर पर क्रमशः थाल और जलपात्र लिये हुए एक स्त्री खड़ी है। तृतीय दृश्य में नृत्य का दृश्य है जिसमें एक स्त्री एक मण्डप में नाच रही है और चार स्त्रियाँ मृदंग, ढक्का, वीणा और बाँसुरी बजा रही हैं। चतुर्थ दृश्य में एक आदमी पूजा के लिए जाने की मुद्रा में हाथ जोड़े खड़ा

हैं। उसके बगल में एक बालक और दो महिलाएँ थाल और घट लिये हुये खड़ी हैं।

निचली मंजिल के बायें पार्श्व में तीन गर्भशालाएँ हैं जिन्हें मुखमण्डप के तीन तरफ बनाया गया है। एक कक्ष्य में द्वार के अतिरिक्त खिड़की भी है। स्तंभ गिर गये हैं। मुखमण्डप के भित्तिस्तंभ दाहिने खण्ड की तरह ही हैं परन्तु उन पर उत्कीर्ण रक्षापुरुषों की मूर्तियाँ घिस गई हैं।

निचली मंजिल के पृष्ठ भाग में चार गर्भशालाएँ हैं जिनमें तीन मुखमण्डप के पीछे और चौथी उसके दाहिनी तरफ है। मुखमण्डप (४३' लम्बा) की छत और उसको रोकने वाले छः स्तंभ टूट गये हैं। मध्य गर्भशाला में तीन और प्रत्येक पार्श्व गर्भशाला में दो द्वार हैं जबकि दाहिनी गर्भशाला में एक ही द्वार है। गर्भशालाओं की सम्मुखीन भित्ति पर दाहिने खण्ड की तरह के अर्धस्तंभ, कमानचे और वेदिका (जिसे यक्ष-यक्षी उठाये हुए हैं) बनाये गये हैं। कमानचों के बीच के कछौटों पर नौ दृश्य उत्कीर्ण हैं। बायें से प्रथम दृश्य में अर्धवृत्ताकार छाजन से युक्त एक दोमंजिली इमारत है जिसके बायें तरफ आम का एक पेड़ है। एककक्ष्यीय ऊपरी मंजिल के द्वार से एक आदमी और द्विकक्ष्यीय निचली मंजिल के दो द्वारों से दो औरतें बाहर की ओर निहार रही हैं। दूसरे दृश्य में तीन मानव किसी चतुष्पद पर सवार हैं। एक अन्य व्यक्ति खड्ग लिये हुये उनके पास खड़ा है। यह दृश्य बहुत घिस गया है। तीसरे दृश्य में एक आरोहक राजपुरुष पैदल अनुचरों और एक घुड़सवार के साथ कहीं जा रहा है। चौथे दृश्य में गजारोहकों एवं पदाति सैनिकों का अंकन है। पाँचवें दृश्य में कोई राजपुरुष अपने दो सेवकों (एक छत्र लिए और दूसरा खड्ग लिये) के साथ खड़ा है। चार अन्य व्यक्ति उनके दाहिने खड़े हैं जिनमें दो अंजलिमुद्रा में हैं। छठे दृश्य में कोई राजपुरुष (क्योंकि उसके ऊपर छत्र लगाया गया है) अपने दो अनुचरों के साथ खड़ा है। सातवें दृश्य में एक राजपुरुष अपनी प्रजा अथवा दरबारियों के साथ चित्रित किया गया है जिनमें एक खड्ग लिये हुये और कुछ हाथ जोड़े हुये हैं। आठवें दृश्य में एक राजपुरुष अपने छत्रधारी अनुचर और हाथ जोड़े दूसरे अनुचर के साथ एक किनारे खड़ा है। इनसे हटकर दो स्त्रियाँ थाल और माल्यचंगेरी लिये हुये खड़ी हैं और दो अन्य घुटने के बल बैठी हुई हैं। आगे घुटने के बल बैठी हुई स्त्रियों में से एक एक अन्य व्यक्ति का चरण पकड़े हुये है जो उसके बाल को जोर से पकड़कर खींच रहा है। दोनों स्त्रियाँ पास में खड़े घोड़े से उतरकर आयी प्रतीत होती हैं। घोड़े के पास तीन अन्य व्यक्ति हाथ जोड़े खड़े हैं (चित्र संख्या १८)। नौवें दृश्य में एक राजा अपने छत्रधारी गण के साथ खड़ा है। उसके निकट कंधों पर लम्बी तलवारें रखे दो सैनिक खड़े हैं। उनसे थोड़ा हटकर चार स्त्रियाँ और दो पुरुष खड़े हैं। तीन स्त्रियाँ सिर पर घट लिये हुये हैं और एक

घुटने के बल बैठकर जलपात्र से अभिषेक करने की मुद्रा में है जबकि दो पुरुष स्वागतमुद्रा में खड़े हैं। देवला मित्र ने उपर्युक्त नौ दृश्यों में सम्राट खारवेल के राजधानी छोड़ने और विभिन्न राष्ट्रों पर विजय प्राप्त कर वापस लौटने का अनुमान लगाया है।[४]

छत के नीचे बनाये गये दो कर्ण कक्ष्यों की बाह्यभित्ति पर बन्दरों द्वारा हाथियों के बन्धन का दृश्य है। वानर इन महाकाय हाथियों को हाँके ले जा रहे हैं। नीचे तरफ एक हाथी पाश में जकड़ा भी है। ऊपरी तरफ वन्यजीवन और एक वानर तपस्वी का अंकन है। हाथी और बन्दरों के बीच छेड़-छाड़ की यह पुरानी लोककथा थी जिसका अंकन भरहुत की वेदिका पर भी हुआ है।[५] इन कक्ष्यों के द्वारों के पार्श्वस्तंभों की यष्टि क्रमशः घटते हुए चौकोर पीठों की चौकियों पर पधराये गये कुंभ में प्रविष्ट है और उनके शीर्षकों पर सपक्ष पशुसंघाट बनाये गये हैं। कमानचों पर पुष्पलता और कमानचों की चोटी पर त्रिरत्न उत्कीर्ण है।

ऊपरी मंजिल (चित्र संख्या ५) का भी स्तंभयुक्त मुखमण्डप (६३' लम्बा) नष्टप्राय है। इसमें कुल छः गर्भशालाएँ हैं जिनमें चार पृष्ठ भाग में और एक-एक पार्श्वभाग में हैं। पृष्ठभाग के हरेक गर्भशाला में दो द्वार हैं। द्वार के पार्श्वस्तंभों के शीर्ष पर सपक्ष अश्व, वृषभ, सिंह अथवा गज के संघाट हैं। कमानचों पर पद्मलता अथवा पत्रलता की सजावट है। एक कमानचे पर हाथियों का पीछा करते हुये बालकों का अंकन है। कमानचों की चोटी पर श्रीवत्स, त्रिरत्न, सर्प अथवा पद्म प्रदर्शित हैं। कमानचों के बीच के कछौटों पर वेदिका का भराव है जिसे वामनाकार गण उठाये हुये हैं। वेदिकाओं के ऊपर के भित्तिभाग पर नौ दृश्य उत्कीर्ण हैं जो इस गुफा के मुख्य आकर्षण हैं। बायें से इन दृश्यों का विवरण इस प्रकार है— प्रथम दृश्य में हवा में उड़ते हुये एक विद्याधर है जो पद्म और माल्यचंगेरी लिये हुये है।

दूसरे दृश्य में एक पहाड़ी कन्दरा है जिसमें शेर खड़ा है। पहाड़ी की तलहटी में एक पद्मसरोवर है जिसमें से निकलकर तीन बिगड़ी जंगली हाथियाँ दश स्त्रियों और एक पुरुष के झुण्ड को दौड़ा ली हैं। पुरुष और दो स्त्रियाँ डण्डे एवं प्रस्तरखण्ड से हाथियों पर प्रहार कर अपना बचाव कर रही हैं जब कि कुछ डरपोक महिलाएँ तितर-बितर होकर भाग रही हैं और कुछ अन्य वार करनेवालों की सहायता करने की मुद्रा में हैं।

तीसरे दृश्य में भी एक पहाड़ी कन्दरा है जिसमें खड़े दो बन्दर एक जहरीला साँप को आते देख डरे हुये हैं। इसके आगे एक इमारत है जिसके द्वार के सामने एक आदमी लेटा हुआ है और पास में बैठी एक स्त्री उसे देख रही है। इनके सामने एक स्त्री एक शस्त्रसज्जित पुरुष को हाथ पकड़कर ला रही है। फिर एक स्त्री और एक पुरुष हाथ में ढाल और तलवार लेकर युद्ध कर रहे हैं। अन्त में पुरुष स्त्री

को जिसके कमर में म्यान अभी भी लटक रही है, उठाये ले जा रहा है और स्त्री अपनी अंगुली से कुछ संकेत कर रही है। संभवत: यह स्त्री-उपहरण का दृश्य है। ऐसा ही दृश्य यहाँ की गुफा संख्या १० में भी प्रदर्शित है।

चौथे दृश्य के प्रथम खण्ड में तीन व्यक्ति, एक कोतल अश्व और उसे थामे हुए एक सूत है। अश्व के बगल में खड़े एक व्यक्ति के हाथ में चँवर और छत्र हैं जिससे सूचित होता है कि कोई नृप घोड़े पर चढ़कर आया था और उतर गया है। अन्य दो व्यक्तियों में एक दण्ड लिये हुए और दूसरा घट लिये हुए है। दृश्य के अगले खण्ड में धनुष-बाण लिये हुए नृप मृगों के झुण्ड पर शर-वृष्टि करने की मुद्रा में खड़ा है। उनके बीच में एक पुष्पित वृक्ष है जो जंगल का प्रतीक है। दृश्य के तीसरे और अंतिम खण्ड में नृप धनुष थामे आराम से एक वृक्ष के पास खड़ा है। इस वृक्ष की डाल पर एक स्त्री बैठी है और वृक्ष के नीचे एक मृग है। स्त्री राजा को मृग मारने से मना कर रही है। वासुदेवशरण अग्रवाल ने इस दृश्य की पहचान दुष्यन्त-शकुन्तला (चित्र संख्या १९) की कथा से किया है।[६]

पाँचवें दृश्य में वाद्य और नृत्य का प्रदर्शन है। इसमें तीन स्त्रियाँ नृत्यमुद्रा में हैं और तीन वादक क्रमश: मृदंग, झाँझ और वीणा बजा रहे हैं। उनके बाईं ओर कोई राजमहिषी अपने पाँच अनुचरों के साथ नृत्य का आनंद ले रही है जब कि दाईं ओर एक राजपुरुष अपने एक मात्र अनुचर के साथ नृत्य देख रहा है।

छठा दृश्य पूर्णत: नष्ट हो गया है। सातवें दृश्य में स्त्री-पुरुषों के तीन मिथुन-युगल मधुपान करते हुये दर्शाये गये हैं। आठवाँ दृश्य भी नष्ट हो गया है। नौवाँ दृश्य प्रथम जैसा ही है।

मुखमण्डप के पार्श्वस्तंभों के सम्मुखीन पटल पर उच्च उभार के साथ मूर्तियाँ काढ़ी गई हैं। दाहिनी तरफ की मूर्ति लम्बोदर, धोती पहने, सिंह पर सवार है जबकि बाईं तरफ कोई स्त्री वृषभ पर सवार है।

ऊपरी मंजिल के दाहिने खण्ड की गर्भशाला में दो द्वार हैं और उसके आसन्दीयुक्त बरामदा में एक अर्वाचीन स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ हैं। बाईं ओर के भित्तिस्तंभ पर उदीच्यवेश पहने कोई शकपुरुष कुन्त लिये हुये खड़ा है जबकि दाईं ओर के भित्तिस्तंभ पर खड्गधारी रक्षापुरुष है।

ऊपरी मंजिल के बायें खण्ड की गर्भशाला में एक द्वार और आसन्दीयुक्त मुखमण्डप है लेकिन यहाँ की गर्भशाला मुखमण्डप के बाईं ओर है और उसमें एक खिड़की भी काटी गई है। मुखमण्डप सँकरा है और उसमें दो भित्तिस्तंभ तो हैं पर स्तंभ गिर गया है।

चतुश्शाल आँगन के तीन तरफ लम्बी-चौड़ी कक्ष्याओं और मुखमण्डपों के

निर्माण के पीछे निर्माण-कर्त्ताओं का कोई विशेष प्रयोजन था। एक उद्देश्य नाट्यशालाओं की पूर्ति करना हो सकता है क्योंकि उसमें कुछ एक लोक प्रचलित कथाओं यथा दुष्यन्त-शकुन्तला, स्त्री-अपहरण आदि का अंकन भी हुआ है। इस बात की पुष्टि गुफा के न्यास से भी होती है क्योंकि ऊपरी मंजिल की खुली छत पर बैठकर दर्शक नीचे के खुले आँगन में मंचित नाट्यदृश्य को भलीभाँति देख सकता है।[७]

गुफा संख्या २ (बाजाघरगुंफा) : इसमें दो अलग-अलग गर्भशालाएँ और उनके अपने मुखमण्डप हैं। बाईं ओर की गर्भशाला की सामने वाली दीवाल, मुखमण्डप की आसन्दी और उसके बाईं तरफ का भित्तिस्तंभ पूर्णतः नष्ट हो गये हैं। सुरक्षित भित्तिस्तंभ के सिरे पर पक्षीमुख से युक्त पशुसंघाट उत्कीर्ण है जबकि स्तंभों के सिरे पर सपक्ष पशुओं का अंकन है।

दाहिनी गर्भशाला की भी सम्मुखीन दीवाल गिर गई है। मुखमण्डप के स्तंभ भी गिर गये हैं परन्तु भित्तिस्तंभ सुरक्षित हैं। भित्तिस्तंभ के ब्रैकेटशीर्ष पर गज उत्कीर्ण हैं।

गुफा संख्या ३ (छोटी हाथीगुंफा) : यह गुफा गुफा संख्या २ से कुछ ऊँचाई पर है। यह छोटे आकार की है और इसमें मुखमण्डप नहीं बनाया गया है। इसमें केवल एक गर्भशाला है जिसके एकमात्र प्रवेशद्वार में काष्ठ के दरवाजे फँसाने के लिए ऊपर-नीचे छेद बनाये गये हैं। द्वार की शाखाएँ थोड़ा सलामी में हैं। द्वार के पार्श्वस्तंभों पर सपक्ष जानवरों के शीर्षक हैं। द्वार के कमानचे पर पद्म की बेल की सजावट है। कमानचे का ऊपरी सिरा नोकीला है। कमानचे के प्रत्येक पार्श्व में तीन सशक्त गज हैं जिनमें ऊपरी तरफ का गज सबसे छोटा और पुष्प लिये खड़ा है। दाहिनी छोर पर आम का एक पेड़ भी है। गजों के नीचे तीन सूचियों से युक्त वेदिका का कटाव है। वेदिका के स्तंभों पर पद्म के फुल्ले बनाये गये हैं। गुफा के मुहार पर एक त्रुटित अभिलेख है।

गुफा संख्या ४ (अल्कापुरीगुंफा) : गुफा संख्या ३ के निकट स्थित इस गुफा में दो बड़ी गर्भशालाएँ एक के ऊपर एक खोदी गई हैं। इनकी छतें थोड़ा गोलाकार हैं। निचली गर्भशाला की सामने वाली दीवाल और उसके मुखमण्डप को पत्थर के भूखे लोग खोदकर उठा ले गये हैं। गर्भशाला और मुखमण्डप के फर्श को भी एक मीटर गहरा कर दिया गया है। मुखमण्डप के एक सुरक्षित भित्तिस्तंभ के सिरे पर पीठ से पीठ सटाये सपक्ष अश्व सरपट दौड़ने की मद्रा में हैं।

ऊपरी गर्भशाला में जाने के लिए शैलकृत सोपान है। उसके आसन्दीयुक्त मुखमण्डप के स्तंभ अर्वाचीन हैं परन्तु दो ब्रैकेटशीर्ष प्राचीन हैं। एक पर एक राजशाही गज दो अन्य गजों (एक छत्र पकड़े और दूसरा चवँर पकड़े) के साथ चित्रित है

जबकि दूसरे पर मुख में शिकार पकड़े सिंह उत्कीर्ण है। ब्रैकेटों के ऊपरी तरफ मानव अथवा विहंग के मुख से युक्त सपक्ष जानवरों का अंकन है। बाईं ओर के भित्तिस्तंभ के सिरे पर एक आदमी है जो बायें हाथ से स्त्री को और दायें हाथ से गजमुण्ड पकड़े है। इसी प्रकार दाईं ओर के भित्तिस्तंभ के सिरे पर नागपाश में बँधा गज है। गर्भशाला में तीन द्वार हैं। इस गर्भशाला के दाईं ओर एक छोटा-सा कक्ष्य है जिसके बन्द मुखमण्डप में पार्श्व भाग से प्रवेश किया जाता है।

गुफा संख्या ५ (जया-विजयागुंफा) : यह गुफा गुफा संख्या ४ के ऊपरी गर्भशाला के बगल में है। इसमें दो गर्भशालाएँ और आसन्दीयुक्त मुखमण्डप हैं। मुखमण्डप के स्तंभ अर्वाचीन हैं परन्तु उसके भित्तिस्तंभ प्राचीन हैं। भित्तिस्तंभों के सम्मुखीन पटल पर रक्षापुरुषों के स्थान पर स्त्री-पुरुष खड़े हैं जैसा पश्चिम भारत के बौद्ध चैत्यगृहों में प्रायः देखा जाता है। बाईं ओर के भित्तिस्तंभ पर धोती पहने एक पुरुष खड़ा है जबकि दाईं ओर के भित्तिस्तंभ पर एक अर्धनग्न स्त्री तोते से बात करती हुई दिखाई गई है जो उसकी अंगुली पर बैठा है। इन भित्तिस्तंभों के शीर्षक भी अनूठे हैं। स्त्रीमूर्ति से युक्त स्तंभ के ब्रैकेट-शीर्ष पर शालभंजिका का और पुरुषमूर्ति से युक्त स्तंभ-शीर्ष पर सिंह का अंकन है।

प्रत्येक गर्भशाला में एक द्वार है। द्वार के पार्श्वस्तंभों के सिरे पर सपक्ष पशुसंघाट हैं। उनमें से चार एकशृंगी जानवर हैं। कमानचों पर मकरमुख से निर्गत पुष्पलता या पत्रलता की सजावट है। कमानचों के कछौटों के निचले भाग पर तीन सूचियों से युक्त वेदिका का अलंकरण है। वेदिका के ऊपर एक जगह चतुरस्त्र वेदिका में केवलवृक्ष उत्कीर्ण है। उसके हरेक तरफ हाथ जोड़े एक आदमी और पुष्प की थाल लिये एक औरत वृक्ष की पूजा के लिए खड़ी है। वृक्ष के ऊपर छत्र और पार्श्व में ध्वज भी लगाये गये हैं जो उसकी पवित्रता के सूचक हैं। ऊपरी कोनों में पुष्पचंगेरी लिये हुये आकाशगामी देव हैं। इस पूरे दृश्य में बोधिवृक्ष अथवा केवलवृक्ष की पूजा को दर्शाया गया है।

इस गुफा के नीचे की चट्टान में एक और गर्भशाला है जिसका द्वार बड़ा है और उसकी मेहराबदार छत ऊँची है।

गुफा के ऊपरी तरफ भी दो गर्भशालाएँ हैं जो नष्ट हो चली हैं।

गुफा संख्या ६ (पनसगुंफा) : इसके सामने पनस (कटहल) का वृक्ष होने से इसे पनसगुंफा कहा गया है। यह गुफा सामने तरफ बिलकुल खुली हुई है क्योंकि पत्थर के लालची इसके सम्मुखीन भाग को खोदकर उठा ले गये हैं और इसकी फर्श को लगभग एक मीटर गहरा कर दिये हैं।

गुफा संख्या ७ (ठाकुराणीगुंफा) : गुफा संख्या ६ के बायें स्थित यह गुफा

दोमंजिली है। निचली मंजिल में एक गर्भशाला और आसन्दीयुक्त मुखमण्डप है। निचली मंजिल की गर्भशाला अपेक्षाकृत ऊँची एवं बड़ी है और उसकी छत थोड़ा गोलाकार है। मुखमण्डप में एक स्तंभ है जिसके आंतरिक ब्रेकेट-शीर्ष पर सरपट दौड़ते हुए युगल अश्व उत्कीर्ण हैं। स्तंभ और भित्तिस्तंभों के सिरों पर मकरसंघाट और सपक्ष जानवरों (कुछ के मुख पक्षियों के) के संघाट बने हैं।

ऊपरी मंजिल की गर्भशाला के सामने का आसन्दीयुक्त मुखमण्डप बन्द है और उसमें स्तंभ नहीं खड़े किये गये हैं। उसमें पार्श्व भाग से अर्धवृत्ताकार द्वार द्वारा प्रवेश किया जाता है।

गुफा संख्या ८ (पातालपुरीगुंफा) : इसमें चार गर्भशालाएँ हैं-- दो पृष्ठ भाग में और एक-एक आसन्दीयुक्त मुखमण्डप के पार्श्व भाग में। मूलतः मुखमण्डप में तीन स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ खड़े किये गये थे जिनमें मध्यस्तंभ टूट गया है। स्तंभों के सिरे पर भोंडे किस्म के पशुसंघाट बनाये गये हैं। एक सुरक्षित ब्रैकेट पर ढाल एवं बरछा लिये हुये एक आदमी सिंह से लड़ रहा है। इस गुफा की गर्भशालाएँ थोड़ी ऊँची हैं जिससे आदमी उनमें सीधे खड़ा हो सकता है। गर्भशालाओं की छत मेहराबदार है और उनका मुहार बिलकुल सादा है। गर्भशालाओं के बीच की पतली दीवाल गिर जाने से वे एककक्ष्यीय हो गई हैं।

गुफा संख्या ९ (मंचपुरी और स्वर्गपुरीगुंफा) : यह गुफा दोमंजिली है। निचली मंजिल को मंचपुरी और ऊपरी मंजिल को स्वर्गपुरी कहा जाता है। ऊपरी मंजिल का न्यास निचली मंजिल के ठीक ऊपर न कर थोड़ा पीछे की ओर से किया गया है जिससे सामने तरफ एक खुली छत बन गई है।

निचली मंजिल में कुल चार गर्भशालाएँ हैं जो दो खण्डों में विभक्त हैं। बाईं खण्ड में तीन गर्भशालाएँ हैं जिनमें दो आसन्दीयुक्त मुखमण्डप के पृष्ठ भाग में और एक उसके दाहिने पार्श्व भाग में है। मुखमण्डप के चार स्तंभ अर्वाचीन हैं लेकिन युगल घुड़सवारों अथवा स्त्रीमूर्ति से सज्जित उनके शीर्षक प्राचीन हैं। दो भित्तिस्तंभों के सम्मुखीन पटल पर खड्गधारी रक्षापुरुषों की मूर्तियाँ उच्च उभार के साथ उत्कीर्ण हैं। द्वारों के पार्श्वस्तंभों की यष्टि चौकोर चौकियों के क्रमशः घटते हुये पीठों पर रखे घट में प्रविष्ट है जबकि उनके शीर्षकों पर पशुसंघाट बने हैं। अर्धवृत्ताकार कमांचों पर पुष्पलता या पत्रलता की सज है। पत्रलता की मोड़-मुड़क में पशु और उसका पीछा करते हुये बालक का क्रम से अंकन है। कमानचों के निचले भाग में तुलाओं के सिरे काटे गये हैं जबकि उनके शीर्ष पर त्रिरत्न या श्रीवत्स उत्कीर्ण हैं। कमानचों के कछौटों में दो या तीन सूचियों से युक्त वेदिका का भराव है। वेदिका को ब्रैकेटमूर्तियाँ उठाये हुये हैं। वेदिका के ऊपर के भित्ति भाग पर एक जगह पूजा का दृश्य है जिसमें एक ऊँचे चबूतरे पर कोई मांगलिक वस्तु रखी है और वह छत्र से आच्छादित है।

चबूतरे के प्रत्येक तरफ एक आराधक घुटने के बल बैठा है। दाहिनी तरफ के आराधक के पीछे चार व्यक्ति हाथ जोड़े खड़े हैं जो एक हाथी पर सवार होकर आये प्रतीत होते हैं। हाथी सुन्दर है और थोड़ा दाहिनी ओर उत्कीर्ण है। चार व्यक्तियों में एक राजा प्रतीत होता है क्योंकि वह मुकुट पहने है। इनके ऊपरी तरफ दो गंधर्वों और सूर्य का अंकन है और दाहिनी छोर पर यानी हाथी के ऊपर पुष्प की थाल लिये हुये विद्याधर है। बाईं ओर के आराधक के पीछे की मूर्तियाँ नष्ट हो गई हैं। गर्भशालाओं की छत थोड़ा मेहराबदार है। वेदिका पर एक अभिलेख है जिसमें कलिंग के महामेघवाहन वंश के राजा कूदेपसीरी वक्रदेव द्वारा प्रस्तुत गुफा के खुदवाने का उल्लेख है। उपर्युक्त दृश्य का मुकुटधारी राजा संभवतः वक्रदेव ही है।[८]

दाहिने खण्ड में एक गर्भशाला और एक मुखमण्डप है। मुखमण्डप की छत को रोके एक स्तंभ और दो अर्धस्तंभ बिलकुल सादे हैं। अर्धस्तंभों के सम्मुखीन पटल पर यहाँ भी खड्‌गधारी रक्षापुरुष खड़े हैं।

स्वर्गपुरी नामक ऊपरी मंजिल में एक लंबी गर्भशाला और गर्भशाला के सामने खुला आँगन या छत है जिस पर चढ़ने के लिए ढालवाँ पथ बनाया गया है। गर्भशाला में तीन प्रवेशद्वार हैं और इसकी छत नीची है। एक छोटी गर्भशाला पार्श्वभाग में भी है जिसमें एक ही द्वार और आसन्दीयुक्त मुखमण्डप है जो संप्रति गिर गया है। द्वारों के पार्श्वस्तंभों के सिरों पर सपक्ष अश्व एवं मृग हैं। कमानचों पर मकरमुख से निर्गत पुष्पलता और पत्रलता का अंकन है। कमानचों के कछौटों के निचले भाग पर छाद्य का कटाव है जिसे भारवाहक उठाये हुये हैं। गुफा के मुहार पर एक अभिलेख है जिसके अनुसार इस गुफा का कटाव खारवेल की मुख्य महिषी ने कराया था।

गुफा की सम्मुखीन खुली छत के बाहरी किनारे को वेदिका से घेर दिया गया है। वेदिका की रचना स्तंभों, तीन-तीन आड़ी सूचियों और उष्णीष से की गई है। वेदिका के स्तंभों पर पद्म और अर्धपद्म उत्कीर्ण हैं जबकि उसके निचले भाग पर चतुष्पदपंक्ति (गज आदि) की गोंट है।

गुंफा संख्या १० (गणेशगुंफा) : इसका वर्तमान नाम इसकी गर्भशाला की पृष्ठभित्ति पर उत्कीर्ण गणेशमूर्ति के कारण पड़ा है।

इसमें दो गर्भशालाएँ और आसन्दीयुक्त मुखमण्डप हैं। गर्भशालाओं की छत नीची है। मुखमण्डप (३०'×६') में मूलतः पाँच स्तंभ और दो अर्धस्तंभ खड़े किये गये थे। लेकिन बाद में दाहिनी ओर के दो स्तंभों को काटकर निकाल दिया गया। इसी समय इस चौड़े खुले भाग के प्रत्येक पार्श्व में आम्र की डाल पकड़े एक स्वतंत्र गजमूर्ति रखी गई और पृष्ठभित्ति पर गणेश की मूर्ति उत्कीर्ण की गई। अर्धस्तंभों के सम्मुखीन पटल पर उच्च उभार में बनाये गये बरछाधारी रक्षापुरुष खड़े हैं और उनके शीर्षकों

पर डीलदार वृषभ बैठे हैं। स्तंभों के सुरक्षित ब्रैकेट-शीर्षकों पर पुष्प, टोंटीदार जलपात्र, थाल आदि लिये हुये पुरुष या भंगिमामय स्त्री मूर्तियाँ खड़ी हैं जबकि ब्रैकेटों के पार्श्वभाग पर पुष्पमाला प्रदर्शित है।

प्रत्येक गर्भशाला में दो प्रवेशद्वार हैं जिनकी शाखाएँ थोड़ा सलामी में हैं। द्वारों के पार्श्वस्तंभों की यष्टि चौकोर चौकियों के पीठ पर रखी है और उनके शीर्षकों के नीचे मेधियुक्त फलक है। शीर्षकों पर हरिण, वृषभ, अश्व अथवा सिंह के संघाट हैं। कमानचों पर पुष्पलता और पत्रलता अंकित हैं जबकि उनके नोकीले शीर्ष भाग पर त्रिरत्न अथवा श्रीवत्स उत्कीर्ण है। कमानचों के कछौटों में वेदिका का अलंकरण है। वेदिका को वामनाकार गण उठाये हुये हैं। वेदिका के ऊपर के भित्तिभाग पर दो जगह दो दृश्य उत्कीर्ण हैं।

बाईं ओर का दृश्य रानीगुंफा के ऊपरी मंजिल के तृतीय दृश्य जैसा ही है। यहाँ पर भी दृश्य के बाईं छोर पर मकान के सामने एक आदमी लेटा हुआ है और पास में बैठी एक स्त्री उसे देख रही है। बिस्तर के पास ही लेटे हुये आदमी की ढाल व तलवार रखी है। आगे के दृश्य में एक औरत एक आदमी के हाथ को पकड़कर विस्तर पर सोये आदमी की तरफ लें जा रही है। फिर एक आदमी और औरत हाथ में ढाल एवं तलवार लिये हुये युद्ध कर रहे हैं। अंत में एक पुरुष स्त्री को उठाये लिये जा रहा है (चित्र संख्या २०)। रानीगुंफा की तुलना में यहाँ का दृश्य ऊँचे स्तर का है तथा मूर्तियों के भाव ज्यादा सरल एवं स्वाभाविक हैं।

दूसरे दृश्य के बाईं छोर पर कुछ पैदल सैनिक ढाल और तलवार लिये हुये तीन गजारोही व्यक्तियों का पीछा कर रहे हैं। हाथी पर सवार पिछला व्यक्ति थैली खोलकर मुद्रायें बिखेर रहा है। बीच का व्यक्ति, जो कि अधिक सम्मानित लग रहा है, पीछा करते हुये सैनिकों पर बाण चला रहा है। हाथी पर सबसे आगे एक स्त्री बैठी है जो हाथ में वीणा और अंकुश लिये हुये उसे हाँक रही है। इसके बाद एक वृक्ष है और वृक्ष के बाद हाथी घुटनों के बल झुक गया है और उस पर सवार तीन व्यक्ति उतर रहे हैं। अगले दृश्य में वे पैदल चल रहे हैं। इसमें पिछला व्यक्ति कंधे पर थैला उठाये हुये, बिचला (स्त्री) आम्रलुम्बी लिये हुये और अगला धनुष पकड़े हुये चल रहा है। अंत में वही स्त्री एक राजसी आसन पर दुःखी मुद्रा में बैठी है और उसका पुरुष साथी उसे सांत्वना दे रहा है तथा साथवाला व्यक्ति उसका धनुष लिये खड़ा है। वासुदेशरण अग्रवाल ने इस दृश्य की पहचान उदयन-वासवदत्ता की कथा से किया है।[१]

प्रत्येक गर्भशाला की पृष्ठभित्ति पर बाद के काल की एक मूर्ति उत्कीर्ण है। बाईं ओर की गर्भशाला में ध्यानमुद्रा में आसीन तीर्थंकर की और दाईं ओर की गर्भशाला में महाराजलीला में बैठे गणेश की मूर्ति है। गणेश की मूर्ति के दाहिने तरफ ८वीं-

९वीं सदी ईसवी का भीमट वैद्य का एक अभिलेख है जिसमें उल्लेख है कि उक्त प्रतिमा भौमराजा शान्तिकर के शासन काल में उत्कीर्ण की गई।

गुफा संख्या ११ (जम्बेश्वरगुंफा) : इसमें दो द्वारों से युक्त एक गर्भशाला और आसन्दीयुक्त एक मुखमण्डप है। मुखमण्डप की छत एक स्तंभ और दो अर्धस्तंभों पर रुकी है जिनके ब्रैकेट सादे हैं। दाहिनी द्वार के मुहार पर एक अभिलेख है जिसमें उसे महामदा की पत्नी नाकिय द्वारा खुदवाया बताया गया है।

इस गुफा के उत्तर-पश्चिम में एक छोटी गुफा है जो सामने तरफ बिलकुल खुली है।

गुफा संख्या १२ (बाघगुंफा) : छोटे आकार की एककक्ष्यीय इस गुफा का वर्तमान नाम इसलिये पड़ा क्योंकि इसका विन्यास जमुहाते हुये व्याघ्रमुख जैसा है। इसके दन्तयुक्त ऊपरी जबड़े में मुखमण्डप की छत और गले में भीतरी गर्भशाला (७^{३}/$_{४}$' चौड़ा, ६^{१}/$_{४}$' गहरा और ३^{१}/$_{२}$' ऊँचा) में जाने के लिए द्वार बनाया गया है। द्वार की शाखाएँ अन्दर की ओर झुकी हुई हैं। द्वार के पार्श्वस्तंभों की यष्टि चौकोर चौकियों के पीठ पर रखे कुंभ में प्रविष्ट है जबकि उनके शीर्षक पद्मकोष, मेधियुक्त चौकी और गजसंघाट से बने हैं। द्वार के ऊपर की मेहराब सादी है लेकिन उसकी चोटी को नोकीला कर दिया गया है। मेहराब के दोनों तरफ वेदिका की सजावट है। मुखमण्डप की छत में एक जगह छिपकली उत्कीर्ण है। मुहार के दाईं ओर दो पंक्तियों का एक अभिलेख है जिसके प्रारंभ में त्रिरत्न और अंत में स्वस्तिक बनाया गया है। अभिलेख में सभूति नामक श्रमण का उल्लेख है जो मानो मृत्युमुख में रहते हुये ध्यान में तल्लीन रहता था।

गुफा संख्या १३ (सर्पगुंफा) : यह एककक्ष्यीय छोटी गुफा है। इसके संकरे मुखमण्डप के मुहार का स्वरूप त्रिफण सर्प जैसा होने से इसे सर्पगुंफा कहा जाता है। फण के नीचे की चट्टान को चौकोर बनाकर उसमें छोटा-सा द्वार खोदा गया है जिसमें लेटकर ही भीतरी कक्ष्य में पहुँचा जा सकता है। इसमें दो छोटे अभिलेख हैं। एक में चूलकम और कोठाजी का उल्लेख है जबकि दूसरे में कम्म और हलखिणा नामक दो व्यक्तियों द्वारा इस गुफा के खुदवाने का उल्लेख है।

गुफा संख्या १४ (हाथीगुंफा) : यह एक विशाल प्राकृतिक गुफा है। इसका महत्त्व गुफा के मुहार पर उत्कीर्ण खारवेल के प्रसिद्ध अभिलेख के कारण है।

गुफा संख्या १५ (धनघरगुंफा) : इसमें एक लम्बी गर्भशाला और आसन्दीयुक्त एक मुखमण्डप है। गर्भशाला में तीन प्रवेशद्वार हैं। मुखमण्डप में दो स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ खड़े किये गये हैं। बाईं ओर के भित्तिस्तंभ के सम्मुखीन पटल पर दण्डधारी रक्षापुरुष खड़ा है। भित्तिस्तभों के ब्रैकेटों पर गज अथवा सिंह

उत्कीर्ण हैं। स्तंभों के ब्रैकेट-शीर्ष प्राय: नष्ट हो गये हैं, कुछ एक अवशिष्ट ब्रैकेटों पर पद्मपुष्प अंकित है। द्वारों के पार्श्वस्तंभों के शीर्षकों पर पद्मकोष, मेधियुक्त पीठ और पशुसंघाट बने हैं। द्वार के कमानचों को चोटी पर नोकीला कर दिया गया है। कमानचों के कछौटों में दो सूचियों से युक्त वेदिका का भराव है जिसे ब्रैकेट मूर्तियाँ उठाये हुये हैं।

गुफा संख्या १६ (हरिदासगुंफा) : इस गुफा का यह नाम इसलिये पड़ा क्योंकि पिछली शती में इसमें हरिदास नामक एक साधु रहता था। इसमें एक बड़ी गर्भशाला और आसन्दीयुक्त एक मुखमण्डप है। गर्भशाला में सलामीदार शाखाओं से युक्त तीन द्वार हैं और उसकी छत थोड़ा गोलाकार है। मुखमण्डप की छत एक स्तंभ और दो भित्तिस्तभों पर आश्रित है। यह अनलंकृत है। इसके मुहार पर एक अभिलेख है जिसमें उल्लेख है कि इसे चूलकम और कोठाजी ने खुदवाया था। ये दोनों नाम गुफा संख्या १३ के अभिलेख में भी आये हैं।

गुफा संख्या १७ (जगन्नाथगुंफा) : इसे जगन्नाथगुंफा इसलिये कहा गया कि इसमें जगन्नाथजी का पश्चात्कालीन एक चित्र है। उदयगिरि की यह सबसे लम्बी गुफा है। इसमें चार द्वारों से युक्त एक लम्बी-चौड़ी गर्भशाला और आसन्दीयुक्त एक मुखमण्डप है। मुखमण्डप में तीन स्तंभ और दो अर्धस्तंभ खड़े किये गये हैं। मध्यस्तंभ की यष्टि क्रमश: चौकोर, अठपहल, चौकोर, अठपहल और चौकोर है और इसके कोने कोर दिये गये हैं। स्तंभों और अर्धस्तंभों के सिरे मृगसंघाट, कल्पनाप्रसूत जानवर (धड़ मकर का और मुख एकशृंगी जानवर का; धड़ पशु का और मुख पक्षी का), मत्स्य, पक्षी, पुष्प और पूर्णघट से सज्जित हैं। स्तंभों के आन्तरिक ब्रैकेट नष्ट हो गये हैं जबकि केवल चार बाहरी तरफ के ब्रैकेट सुरक्षित हैं और उन पर क्रमश: भारपुत्रक, माला व पुष्प की थाल लिये हुये विद्याधर, माला लिये हुये सपक्ष किन्नर और भारवाहक गण अंकित हैं। मुखमण्डप में दो ताखे भी बनाये गये हैं। गुफा की छत थोड़ा गोलाकार है।

गुफा संख्या १८ (रसुईगुंफा) : गुफा संख्या १७ के बगल में स्थित इस गुफा को रसोई घर बना लिया गया था जब जगन्नाथगुंफा में जगन्नाथजी का चित्र पूजित था। इसमें एक छोटी गर्भशाला और स्तभरहित संकरा मुखमण्डप है। यह बिलकुल सादी है।

खण्डगिरि की गुफाएँ :

गुफा संख्या १ (तातोवागुंफा संख्या १) : उदयगिरि की गुफा संख्या १७ से सोपान द्वारा दो पहाड़ियों के बीच में बनाई गई सड़क पर आया जाता है और फिर १५ मीटर चलकर सोपान द्वारा यहाँ की गुफा संख्या १ में पहुँचा जाता है।

तातोवा गुफाओं का नाम उनके द्वार के कमानचों पर उत्कीर्ण तोता की मूर्तियों के कारण पड़ा है (चित्र संख्या २१)।

प्रथम तातोवा गुफा में एक छोटी गर्भशाला और आसन्दीयुक्त एक मुखमण्डप है। मुखमण्डप में एक स्तंभ और दो अर्धस्तंभ हैं। स्तंभों के आंतरिक ब्रैकेट पर मुचकुंद और पद्म के पुष्प अंकित हैं। अर्धस्तभों के सम्मुखीन पटल पर खड्गधारी रक्षापुरुष खड़े हैं। मुखमण्डप के प्रत्येक पार्श्व में एक ताखा बनाया गया है। मुखमण्डप की फर्श गर्भशाला की फर्श से नीची है और उसका छाद्य गिर गया है।

गर्भशाला में दो द्वार हैं। द्वार के पार्श्वस्तंभों के शीर्ष पर सिंहसंघाट अथवा वृषभसंघाट है। द्वार के कमानचों पर मकरमुख से निर्गत पत्रलता अथवा पुष्पलता की सज है और उनके कछौटों के निचले भाग पर शालाकार छाजन के ऊपर वेदिका का अलंकरण है। छाजन के नीचे घुड़िया लगी हैं। कमानचों के बीच के भित्तिभाग यानी कछौटों पर एक जगह एक अभिलेख है जिसमें उल्लेख है कि यह गुफा पादमुलिक निवासी कुसुम ने खुदवाई है।

गुफा संख्या २ (तातोवागुंफा संख्या २) : इसका विन्यास उपर्युक्त गुफा जैसा ही है परन्तु आकार में उससे बड़ी एवं अधिक अलंकृत है। मुखमण्डप के स्तंभ अर्वाचीन हैं लेकिन उनके ब्रैकैट-शीर्ष प्राचीन हैं और उन पर मुचकुंद एवं पद्मपुष्प, नर्तक एवं वादक अथवा पुष्पचंगेरी लिये हुये स्त्री-मूर्ति अंकित हैं। गर्भशाला में तीन द्वार हैं। द्वार के पार्श्वस्तंभों की यष्टि नीचे तरफ चौकोर और ऊपरी तरफ अठपहल है और उसका निचला भाग चौकोर चौकियों के पीठ पर रखे घट में प्रविष्ट है। इन स्तभों के ऊपरी सिरों पर पद्मकोष, रज्जु अथवा मणिबन्ध से युक्त कण्ठ और चौकोर पीठ के ऊपर सशक्त जानवरों (सिंह, गज अथवा वृषभ) की सुन्दर युगल मूर्तियाँ हैं। अर्धवृत्ताकार कमानचों पर पुष्पलता, पद्मलता अथवा अंगूर की बेल, उनके दोनों पार्श्वों पर कपोत एवं तोते अथवा मृग के जोड़े, उनकी चोटी पर त्रिरत्न, और अर्धगोलाकार भित्ति भाग पर मुचकुंद, फूलमाला अथवा पद्मपुष्प का अंकन है। कमानचों के आंतरिक भाग में धन्नियों का कटाव है और उनके बीच में वेदिका का भराव स्तूपियुक्त छाद्य के नीचे किया गया है जबकि आमतौर पर इसे छाद्य के ऊपर बनाया जाता है। छाद्य के एक सिरे पर गज और दूसरे पर सिंह उत्कीर्ण है। गर्भशाला की थोड़ा गोलाकार छत ऊँची है।

गुफा संख्या ३ (अनन्तगुंफा) : इसके प्रवेशद्वार पर एक नागमिथुन उत्कीर्ण है। इसी कारण इसे अनन्तगुंफा कहा जाता है। इसका विन्यास तातोवा गुफा की तरह ही है परन्तु अलंकरण की दृष्टि यह गुफा खण्डगिरि की गुफाओं में सर्वोत्तम है। इसमें एक लम्बी गर्भशाला (२४१/२'×७'), आसन्दीयुक्त मुखमण्डप (२७'×७') और सामने तरफ खुला आँगन है। गर्भशाला की छत ऊँची और थोड़ी गोलाई में

है और उसमें आदमी आसानी से खड़ा हो सकता है। इसकी पृष्ठभित्ति पर चौकोर चौकियों के पीठ पर त्रिरल अत्कीर्ण है। त्रिरत्न के प्रत्येक तरफ त्रिरत्न, श्रीवत्स और स्वस्तिक प्रदर्शित हैं। मध्यकाल में दाहिने तरफ के श्रीवत्स और स्वस्तिक के नीचे तीर्थंकर की अपूर्ण मूर्ति अंकित कर दी गई है। मुखमण्डप की फर्श को, जो मूलतः नीची थी, चिनाई द्वारा आसन्दी के बराबर कर दिया गया है। मुखमण्डप की छत तीन स्तंभों और दो अर्धस्तंभों पर टिकी है। अर्धस्तंभों के ब्रैकेट-शीर्ष पर गजारोही, घुड़सवार, गज आदि उत्कीर्ण हैं जबकि स्तंभों के ब्रैकेट-शीर्ष पर कुंभाण्डों एवं हाथ जोड़े युगल-स्त्रियों का अंकन है।

गर्भशाला में चार द्वार हैं (चित्र संख्या २२) और उसके द्वारों के पार्श्वस्तंभ, कमानचे और कमानचों के गोलम्बर एवं कछौटे काफी अलंकृत हैं। पार्श्वस्तंभों की यष्टि चौकोर चौकियों के पीठ पर रखे कुंभ में प्रविष्ट है जबकि शीर्षक पद्मकोश, चौकोर फलक और वृषभ, सिंह आदि पशुयुग्मों से बना है। पार्श्वस्तंभों की यष्टि पर मणिबन्ध, कुंजराक्ष, लहरदार रेखाएँ एवं मणिबन्ध, अथवा पुष्पमालाओं की खड़ी पट्टिकाएँ हैं। यष्टि के ऊपर-नीचे अर्धपद्म बनाकर उन्हें इन अलंकृत पट्टिकाओं से जोड़ दिया गया है। तुलाओं के सिरे पर आश्रित कमानचों पर वृषभों एवं सिंहों का पीछा करते हुए बालकों, पुष्पमालाओं अथवा चोंच में पुष्प पकड़े बारह हंसों का अंकन है। कमानचों की चोटी पर श्रीवत्स या त्रिरत्न बना है जबकि उनके चार गोलम्बरों में चार सुंदर दृश्य उत्कीर्ण हैं।

बायें से प्रथम दृश्य में एक बड़ा गज दो छोटे गजों के साथ प्रदर्शित है। सभी गज सशक्त हैं।

द्वितीय दृश्य में एक मुकुटधारी व्यक्ति चार घोड़ों के रथ पर सवार है। उसका बायाँ हाथ कटि पर और दाहिना वक्ष पर है। उसके पार्श्व में दो चामरधारिणी खड़ी हैं। ऊपरी तरफ सूर्य, चन्द्र और तारे अंकित हैं। रथ के दाहिने पहिये के पास एक वामनाकार गण खड़ा है जो एक हाथ में टोंटीदार झारी और दूसरे में ध्वज लिये हुये है। वासुदेवशरण अग्रवाल ने रथ पर सवार व्यक्ति की पहचान सूर्य से और चामरधारिणियों की उनकी दो पत्नियों (ऊषा एवं प्रत्यूषा) से की है।[१०]

तृतीय दृश्य में गजलक्ष्मी का अंकन है। देवी कमल के ऊपर खड़ी है और उसके दोनों ओर उठते हुये कमलों पर खड़े दो गज घटाभिषेक मुद्रा में हैं (चित्र संख्या २३)।

चतुर्थ दृश्य में चतुरस्र वेदिका के मध्य में खड़े चैत्यवृक्ष की पूजा का अंकन है। छत्र से आच्छादित चैत्यवृक्ष के दाहिनी ओर हाथ जोड़े एक आदमी और बाईं ओर फूलमाला लिये हुये एक औरत खड़ी है। प्रत्येक के साथ टोंटीदार जलपात्र लिये हुये वामनाकृति गण भी खड़े हैं (चित्र संख्या २४)।

हंससज्जित कमानचे के त्रिरत्न से दो सर्प निकलते हुए दिखाये गये हैं। कमानचों के बीच के भित्ति भाग पर पुष्पमाला व पुष्पचंगेरी लिये हुये विद्याधरों का अंकन है जो कमानचों की ओर जा रहे हैं। विद्याधरों के ऊपर वेदिका एवं कपिशीर्षक और त्रिकोण कमल का क्रम से अंकन है। मुखमण्डप में एक अभिलेख है जिसमें प्रस्तुत गुफा को दोहद के श्रमणों का बतलाया गया है।

गुफा संख्या ४ (तेन्तुलिगुंफा) : इस गुफा के सामने तेन्तुलि (इमली) का पेड़ होने से इसे तेन्तुलिगुंफा कहा जाता है। इसमें एक गर्भशाला और आसन्दीयुक्त एक मुखमण्डप है। मुखमण्डप में एक स्तंभ और दो अर्धस्तंभ हैं। स्तंभ के आंतरिक ब्रैकेट-शीर्ष पर पद्मकलिका लिए हुये स्त्री और बाहरी पर मस्तचाल में गज उत्कीर्ण है। अर्धस्तंभ अपूर्ण हैं। गर्भशाला में दो द्वार हैं। द्वारों के पार्श्वस्तंभों की यष्टि चौकोर चौकियों के क्रमशः घटते हुय पीठ पर पधराये गये कुंभ में प्रविष्ट है जबकि उनका शीर्षक औंधा पद्म, सादी चौकी और सिर झुकाये युगल गज या सिंह से बना है। द्वारों के ऊपर के कमानचे सादे हैं और उनकी चोटी नुकीली है।

गुफा संख्या ५ (खण्डगिरिगुंफा) : गुफा में खण्ड या दरार होने से इसे खण्डगिरि गुफा कहा जाता है। इसमें दो गर्भशालाएँ एक के ऊपर बनाई गई हैं। दानों खण्डित एवं बिलकुल सादी हैं।

गुफा संख्या ६ (ध्यानगुंफा) : इसमें एक गर्भशाला और दो स्तंभों और दो अर्धस्तंभों पर आश्रित मुखमण्डप है। गर्भशाला और मुखमण्डप के बीच की दीवाल को बाद में तोड़कर निकाल देने से अब यह एक खुले मण्डप की तरह दीखता है।

गुफा संख्या ७ (नवमुनिगुंफा) : इसे नवमुनिगुंफा इसलिए कहा जाता है कि इसमें नौ तीर्थंकरों यानी मुनियों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इसमें दो गर्भशालाएँ और एक मुखमण्डप है। लेकिन बाद में इसकी ढालवाँ फर्श को गहरा कर और तीर्थंकरों की मूर्तियों का कटाव कर इसे पूजा-गृह बना दिया गया। इतना ही नहीं, पूजागृह बनाते समय बीच की दीवालों को तोड़कर निकाल दिया गया जिससे यह एक खुले मण्डप जैसे हो गया है। इसी समय मुखमण्डप के टूटे हुये स्तंभों की जगह चिनाईकृत स्तंभ भी खड़े कर दिये गये।

इस गुफा में पाँच अभिलेख हैं जिनमें एक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उसमें कुलचन्द्र के शिष्य शुभचन्द्र का उल्लेख है जो कि उड़ीसा के सोमवंशी राजा उद्योतकेशरी (११वीं सदी ईसवी) के शासन काल में देशीगण के आचार्य थे।[११]

दाहिनी गर्भशाला की पृष्ठभित्ति पर उच्च उभार के साथ खत्तकों में निम्न सात तीर्थंकरों की पद्मासनस्थ मूर्तियाँ ध्यानमुद्रा में उत्कीर्ण हैं– ऋषभ, अजित, संभव,

अभिनंदन, वासुपूज्य, पार्श्व और नेमि। लेकिन इनके सिर के पीछे न तो प्रभामण्डल है और न ही वक्ष पर श्रीवत्स अंकित है जबकि त्रिछत्र और उनके पार्श्व चामरधर एवं लांछन उत्कीर्ण हैं। इनके नीचे इनकी सात शासनदेवियाँ-- चक्रेश्वरी, रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृंखला, गांधारी, पद्मावती और अम्बिका– औसत उभार के साथ उत्कीर्ण हैं। इनके बाईं ओर महाराजलीलामुद्रा में गणेश हैं। जैन देवियों का यह चित्रण सप्तमातृकाओं से अनुप्राणित लगता है।

गर्भशाला की दाहिनी भित्ति पर सप्तफणाटोप से युक्त पार्श्वनाथ और बैल के साथ ऋषभनाथ की दो पद्मासनस्थ मूर्तियाँ ध्यानमुद्रा में उत्कीर्ण हैं। उनके पार्श्व में चामरधर भी खड़े हैं। गर्भशाला की बाईं भित्ति पर चन्द्रप्रभ की एक छोटी मूर्ति उनके लांछन चन्द्र के साथ उत्कीर्ण है।

गुफा संख्या ८ (बारभुजीगुंफा) : गुफा का वर्तमान नाम मुखमण्डप की पार्श्वभित्ति पर उत्कीर्ण बारहभुजी देवी प्रतिमा के कारण पड़ा है। इसमें एक लम्बी गर्भशाला और स्तंभयुक्त एक मुखमण्डप है। गर्भशाला की छत थोड़ा गोलाकार है। मूलतः यह एक विहार था जैसा उसके फर्श के सामने तरफ ढालवाँ होने से ज्ञात होता है। परन्तु मूर्तियाँ उत्कीर्ण कर जब उसे पूजागृह बनाया गया तब उसके फर्श को और गहरा कर दिया गया ताकि आदमी उसमें आसानी से खड़ा हो सके। उसी समय मुखमण्डप की आसन्दीसहित पृष्ठभित्ति, जिसमें तीन द्वार बनाये गये थे, को भी तोड़कर हटा दिया गया और टूट चले पुराने स्तंभों के स्थान पर दो चिनाईकृत स्तंभ खड़े कर दिये गये। इसका समर्थन अवशिष्ट प्राचीन ब्रैकेट-शीर्षकों से होता है जिनपर मुचकुंद और पद्म का अंकन है। मुखमण्डप की बाईं भित्ति में एक ताखा और सामने तरफ छाद्य भी बनाया गया है।

गर्भशाला की दीवालों पर निम्न २५ तीर्थंकरों (पार्श्वनाथ की दो) की प्रतिमाएँ उनकी शासनदेवियों एवं लांछनों के साथ उत्कीर्ण हैं- (१) ऋषभनाथ (बैल, चक्रेश्वरी), (२) अजितनाथ (गज, रोहिणी), (३) संभवनाथ (अश्व, प्रज्ञप्ति), (४) अभिनंदननाथ (बन्दर, वज्रशृंखला), (५) सुमतिनाथ (चकवा, पुरुषदत्ता), (६) पद्मप्रभ (पद्म, मनोवेगा), (७) सुपार्श्वनाथ (स्वस्तिक, काली), (८) चन्द्रप्रभ (चन्द्र, ज्वालामालिनी), (९) सुविधिनाथ (मकर, महाकाली), (१०) शीतलनाथ (श्रीवत्स, मानवी), (११) श्रेयांसनाथ (गैंडा, गौरी), (१२) वासुपूज्य (महिष, गांधारी), (१३) विमलनाथ (वराह, वैरोट्या), (१४) अनन्तनाथ (बाज, अनन्तमती), (१५) धर्मनाथ (वज्र, मानसी), (१६) शान्तिनाथ (हरिण, महामानसी), (१७) कुन्थुनाथ (बकरा, विजया), (१८) अरनाथ (नन्द्यावर्त्त, तारा), (१९) मल्लिनाथ (घट, अपराजिता), (२०) मुनिसुव्रत (कूर्म, बहुरूपिणी), (२१) नमिनाथ (नीलोत्पल, चामुण्डा), (२२) नेमिनाथ (शंख, अंबिका), (२३) पार्श्वनाथ (सर्प, पद्मावती) और (२४) महावीर (सिंह, सिद्धायिका)।

सभी तीर्थंकर ध्यानमुद्रा में बैठे हैं, उनके दोनों तरफ चामरधर खड़े हैं, उनके ऊपर त्रिछत्र (पार्श्वनाथ को छोड़) वना है, उनके सिर के पीछे प्रभामण्डल (पार्श्वनाथ के पीछे सर्प का घटाटोप होने से प्रभामण्डल नहीं है) है और उनके ऊपरी तरफ आकाशगामी गंर्धव एवं विद्याधर हैं लेकिन उनके वक्षस्थल पर श्रीवत्स का अंकन नहीं है। शासनदेवियाँ अर्धपर्यंकासनमुद्रा बैठी हैं परन्तु महामानसी पद्मासन अवस्था में और बहुरूपिणी शयनमुद्रा में हैं (चित्र संख्या २५)।

पार्श्वनाथ की दूसरी मूर्ति बड़ी, नग्न और कायोत्सर्गमुद्रा में है और सप्तफण के घटाटोप से आच्छादित है। ऊपरी तरफ गंधर्व और फूलमाला लिये हुये विद्याधर हैं। तीर्थंकर के प्रत्येक तरफ नागदेव और चामरधर खड़े हैं परन्तु उनकी शासनदेवी अनुपस्थित है। संभवतः यह मूलनायक की प्रतिमा है क्योंकि पृष्ठभित्ति में उसे प्रथम स्थान पर उत्कीर्ण किया गया है।

मुखमण्डप की बाईं भित्ति पर बीसभुजी चक्रेश्वरी का अंकन है जो गरुडवाहन के साथ ललितासनमुद्रा में बैठी है। उसके सिर पर बैल के साथ ऋषभनाथ का अंकन है। मुखमण्डप की दाहिनी भित्ति पर बारहभुजी रोहिणी अपने वाहन बैल के साथ ललितासनमुद्रा में उत्कीर्ण है। उसके सिर पर अजितनाथ की प्रतिमा उनके वाहन गज के साथ अंकित है।

गुफा संख्या ९ (त्रिशूलगुंफा, सत्वखरा या महावीरगुंफा) : मूलतः यह भी एक विहार था जिसमें दो स्तंभों और दो अर्धस्तंभों से युक्त मुखमण्डप और तीन द्वारों से युक्त गर्भशाला थी। लेकिन बाद में बीच की दीवाल को तोड़कर और फर्श को नीचा कर उसे पूजागृह बना दिया गया। गर्भशाला की तीन तरफ की भित्तियों पर २४ तीर्थंकरों की भोंडी प्रकार की नग्न मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं जो १४वीं सदी के बाद की लगती हैं। इनमें आठ (ऋषभ, अजित, शीतल, पार्श्व, वासुपूज्य, विमल, श्रेयांस और महावीर) कायोत्सर्गमुद्रा में और शेष पद्मासनमुद्रा में हैं। सभी के साथ दो-दो चामरधर भी खड़े हैं। कायोत्सर्ग मूर्तियों के साथ नाग भी हैं। गर्भशाला के पृष्ठभाग में चिनाईकृत पीठ बनाकर उस पर ऋषभनाथ की तीन कायोत्सर्ग मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं जो ११वीं-१२वीं सदी की लगती हैं।

गुफा संख्या १० : गुफा संख्या ९ के आगे स्थित यह गुफा नष्टप्राय है क्योंकि पत्थर के भूखे इसे खोदकर नष्ट कर डाले हैं। इसकी अवशिष्ट पृष्ठभित्ति पर ऋषभनाथ की दो कायोत्सर्ग मूर्तियाँ और अंबिका की त्रिभंग मूर्ति उत्कीर्ण हैं।

गुफा संख्या ११ (ललाटेन्दुकेसरीगुंफा) : यह भी नष्टप्राय है। मूलतः इसमें दो गर्भशालाएँ और स्तंभयुक्त एक मुखमण्डप था जिसके स्तंभ, बीच की दीवाल और अधिकांश निचले भाग को पत्थर के लिए खोद डाला गया है। बाईं ओर की गर्भशाला के पृष्ठ एवं बाईं पार्श्वभित्ति पर ऋषभनाथ की दो और पार्श्वनाथ की तीन

कायोत्सर्ग मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इसी प्रकार दाहिनी गर्भशाला में पार्श्वनाथ की दो और ऋषभनाथ की एक कायोत्सर्ग मूर्ति है। इसी गर्भशाला की पृष्ठभित्ति पर एक अभिलेख है जिसमें उल्लेख है कि सोमवंशीनरेश उद्योतकेशरी ने कुमारगिरि (खण्डगिरि) पर वापी और मंदिर की मरम्मत करवाई और वहाँ पर चौबीस तीर्थकरों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठापित करवाई।

गुफा संख्या १२-१५ : गुफा संख्या १२ और १३ में दो-दो गर्भशालाएँ हैं परन्तु इनका आसन्दीयुक्त मुखमण्डप गिर गया है।

एकादशी नामक गुफा संख्या १४ में एक बड़ी गर्भशाला है जो सामने तरफ खुली हुई है और जिसकी छत चिनाईकृत आधुनिक स्तंभों पर टिकी हुई है।

गुफा संख्या १५ में एक छोटी गर्भशाला है और उसका संमुखीन भाग खुला हुआ है।

जूनागढ़ की जैन गुफाएँ :

गुजरात प्रान्त के जूनागढ़ नगर के पास गिरनार पर्वत है जहाँ जैन तीर्थंकर नेमिनाथ ने केवलज्ञान प्राप्त किया था। इस पर्वत श्रेणी पर १२वीं-१३वीं सदी ईसवी में जैन मंदिरों का निर्माण भी हुआ परन्तु वहाँ पर कभी कोई जैन गुफा नहीं खोदी गई। लेकिन जूनागढ़ की एक अन्य पहाड़ी पर बाबा प्यारामठ के पास कुछ गुफाएँ अवश्य खोदी गईं जो या तो जैन हैं या जैनों का उन पर अधिकार रहा है (चित्र संख्या ७)।

यहाँ की गुफाएँ तीन पंक्तियों में काटी गई हैं। प्रथम और तृतीय यानी उत्तरी और दक्षिणी पंक्तियों की गुफाएँ लगभग एक-दूसरे के समानान्तर हैं और उनका मुहार दक्षिण दिशा में है जबकि दूसरी पंक्ति की गुफाओं का न्यास इनके पूर्वी छोर पर उत्तर-दक्षिण दिशा में किया गया है और उनका मुहार पूर्व की ओर है। यहाँ पर एक गर्भशाला से युक्त ९, द्विगर्भवाली ४ और त्रिगर्भवाली २ गुफाएँ हैं। गर्भशालाओं के सामने दो चौकोर एवं सादे स्तंभों से युक्त मुखमण्डप है। मुखमण्डप और गर्भशाला को संकीर्ण अंतराल से जोड़ दिया गया है।

त्रिगर्भवाली एक गुफा के मुखमण्डप की छत छह स्तंभों पर टिकी है। इन स्तंभों पर निकाले गये छज्जे को शार्दूलों से सज्जित छह घुड़िया रोके हैं। मुखमण्डप के मुहार पर प्रारंभिक किस्म के चैत्यगवाक्ष भी उत्कीर्ण हैं। ऐसा ही एक चैत्यगवाक्ष प्रथम पंक्ति की गुफाओं के मुहार पर भी उत्कीर्ण है। त्रिगर्भीय इस गुफा की मध्य गर्भशाला का पृष्ठ भाग अर्धचन्द्राकार यानी अर्धगोलाकार है और इसकी सपाट छत चार चौकोर स्तंभों पर टिकी है। परन्तु इसके अर्धवृत्ताकार भाग में स्तूप का कोई अवशेष नहीं है जिससे स्पष्ट है कि यह बौद्ध चैत्यगृह नहीं है। इसका अर्धगोलाकार

विन्यास भी बौद्ध चैत्यगृहों जैसा नहीं है क्योंकि न तो इसमें कण्ठाहार जैसी स्तंभमाला है और न ही अश्वनाल जैसा चैत्यगवाक्ष। गुफा के सामने एक बड़ा आँगन भी बनाया गया है।

दक्षिणी समूह की एक एकगर्भीय गुफा के गर्भ में एक ही स्तंभ खड़ा किया गया है जो कि अठपहल एवं अलंकृत है।

संभवत: जूनागढ़ की उपर्युक्त गुफाएँ जैन श्रमणों के निवास के लिए खोदी गई थीं। इसका समर्थन इस बात से होता है कि दो गुफाओं के द्वारों के सिरदल पर स्वस्तिक, भद्रासन, मीनयुगल, कलश, दर्पण, श्रीवत्स आदि प्रख्यात जैन मांगलिक चिन्ह अंकित हैं। दूसरे यहाँ की एक गुफा में क्षत्रप जयदामन के पौत्र रुद्रसिंह प्रथम (१०३-११८ ई०) का एक अभिलेख मिला है जिसमें केवलज्ञान और जरामरण जैसे पूर्णत: जैन पारिभाषिक शब्दों का उल्लेख है। तीसरे जैन साहित्य में उल्लेख है कि जैनाचार्य धरसेन गिरिनगर (गिरनार) की चन्द्रगुफा में निवास करते थे।[१२] यदि त्रिगर्भीय अर्धचन्द्राकार गुफा ही चन्द्रगुफा रही हो तो कोई आश्चर्य नहीं।

उदयगिरि की जैन गुफा :

उदयगिरि (विदिशा जिला, म०प्र०) की पहाड़ी में छोटी-बड़ी कुल बीस गुफाएँ हैं जिनमें गुफा संख्या २० जैन है। यह गुफा पहाड़ी के पूर्वी किनारे पर है और बलुए पत्थर की चट्टन में खोदी गयी है। उदयगिरि की गुफाओं में यह सबसे विशाल है। यह ५०' लम्बी और १६' चौड़ी है। इसमें पाँच कक्ष्य हैं। मध्य के दो कक्ष्यों में युगल कोष्ठ बनाकर उनमें पद्मासन जिन की मूर्तियाँ ध्यानमुद्रा में उत्कीर्ण हैं जो कि अत्यन्त खण्डित अवस्था में हैं। इनमें एक पार्श्वनाथ की है। मूर्ति के आसन्दी पर आराधकों के साथ धर्मचक्र अंकित है (चित्र संख्या २६)। गुफा में गुप्त संवत् १०६ (४२६ ई०) का एक अभिलेख है जिसमें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिमा का उल्लेख भी है।[१३]

महाराष्ट्र की जैन गुफाएँ :

महाराष्ट्र के दकन ट्रैप में भारत की सर्वाधिक गुफाएँ खोदी गईं हैं। इनमें अधिकांश तो बौद्ध और हिन्दू धर्म से संबंधित हैं, जैनियों की भी यहाँ कई गुफाएँ हैं। तिथिक्रम से इनका विवरण इस प्रकार है।

धाराशिव की जैन गुफाएँ :

शोलापुर से ३७ मील उत्तर धाराशिव में सातवीं सदी ईसवी में सात जैन गुफाएँ खोदी गईं। इनका कटाव मुलायम किस्म की चट्टान में किया गया है। पश्चिमी

छोर से प्रारंभ यहाँ की पहली गुफा छोटी और अपूर्ण है। दूसरी गुफा (चित्र संख्या ८) प्रथम से न केवल बड़ी है अपितु वास्तु की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण है। उसके सामने तरफ ७८' लम्बा और १०$^{१}/_{४}$' चौड़ा एक मुखमण्डप है जिसकी सम्मुखीन छत को रोकने वाले सभी स्तंभ गिर गये हैं परन्तु पार्श्व छोर के दो सुरक्षित भित्तिस्तंभों से ज्ञात होता है कि स्तंभ भारीभरकम एवं चौकोर थे और उनके ब्रैकेट-शीर्ष अलंकृत थे। स्तंभों पर बिछाये गये भारपट्ट के ऊपर एक शोभापट्टी थी जिस पर तीर्थंकरों की मूर्तियाँ और चैत्यगवाक्ष अंकित थे। आंतरिक मण्डप (८२' गहरा और ७९' से ८५' तक चौड़ा) चतुश्शाल आँगन की तरह है जिसके सामने तरफ पाँच प्रवेशद्वार और पृष्ठ भाग के मध्य में गर्भगृह है। इसकी छत ३२ चौकोर स्तंभों पर टिकी है जिन्हें क्रमशः बीस और बारह की दो वर्गाकार शृंखला में खड़ा किया गया है। स्तंभ-शीर्षकों के कुछ ब्रैकेटों पर पत्रवल्लरी का कटाव भी है। गर्भगृह के सामने के चार स्तंभों की यष्टि गोलाकार है और उन पर तडि प्रकार के ब्रैकेट-शीर्ष लगाये गये हैं। जैन श्रमणों के निवास के लिए मण्डप में, बौद्ध विहारों की तरह, २२ गर्भशालाएँ बनाई गई हैं जिनमें आठ-आठ दोनों पार्श्वों में और तीन-तीन गर्भगृह के अगल-बगल हैं। गर्भगृह में सप्तफणाटोप से आच्छादित पार्श्वनाथ की पद्मासनस्थ मूर्ति ध्यानमुद्रा में उत्कीर्ण है। मूर्ति के आसन पर अंकित चक्र के अगल-बगल दो मृग हैं जैसा बुद्धमूर्तियों में पाया जाता है और परिकर पर शार्दूल, चामरधर और विद्याधर अंकित हैं। गर्भगृह की प्रतिमा को चारों ओर से कोर कर बनाया गया है जिससे वहाँ पर एक आंतरिक प्रदक्षिणापथ तैयार हो गया है। मूलतः गुफा के सामने एक खुला आँगन था। गुफा के बाईं ओर एक पानीयघर भी है।

यहाँ की तीसरी गुफा दूसरी जैसी ही है। इसमें भी एक वर्गाकार मण्डप (प्रत्येक भुजा ५९' और ऊँचाई ११$^{१}/_{४}$') और आयताकार मुखमण्डप हैं। मुखमण्डप की छत अठपहल प्रकार के छः सादे स्तंभों पर टिकी है और उसके दाहिने छोर पर एक अपूर्ण कक्ष्य है। मुखमण्डप से मण्डप में जाने के लिए पाँच प्रवेशद्वार हैं। मण्डप में बीस स्तंभ एक ही वर्गाकार शृंखला में खड़े किये गये हैं और उसमें केवल बारह गर्भशालाएँ ही हैं। पृष्ठ भाग में बनाया गया गर्भगृह उपर्युक्त गुफा की अनुकृति मात्र है।

यहाँ की चौथी गुफा का आंतरिक मण्डप २८' गहरा और २६$^{१}/_{२}$' चौड़ा है। मण्डप की छत को रोकने वाले चारों स्तंभ संप्रति गिर गये हैं। इसमें चार गर्भशालाएँ और एक गर्भगृह है।

यहाँ की गुफा संख्या ५ में तीन खण्ड हैं जिनमें पानी भरा हुआ है।

यहाँ की छठी गुफा में दस स्तंभों पर आश्रित मण्डप और स्तंभयुक्त मुखमण्डप हैं। मुखमण्डप के स्तंभ सादे एवं चौकोर हैं और उन पर तरंग शैली के शीर्षक

लगाये गये हैं (चित्र संख्या २७)। मण्डप में दो प्रकोष्ठ और गर्भगृह हैं और उसमें जाने के लिए पाँच प्रवेशद्वार हैं।

गुफा संख्या ७ में भी मण्डप और मुखमण्डप हैं। मण्डप में जाने के लिए ११ द्वार हैं जिनके सिरदल पर पशु आदि की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। गुफा में जल भरा हुआ है।

एलोरा की जैन गुफाएँ :

लगभग सवा मील उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली एलोरा की पहाड़ी में बौद्ध, हिन्दू और जैन इन तीनों धर्मावलम्बियों ने गुफाएँ खुदवायीं। यहाँ पर सर्वप्रथम बौद्धों ने दक्षिणी छोर से गुफाएँ (संख्या १ से १२) खुदवानी प्रारंभ कीं। तत्पश्चात् हिन्दुओं ने गुफाएँ (संख्या १३ से २९) खुदवाईं। अन्त में जैनों ने पहाड़ी के उत्तरी सिरे पर पाँच गुफाएँ (संख्या ३० से ३४) खुदवाईं। सभी जैन गुफाएँ राष्ट्रकूट नरेशों के शासनकाल में आठवीं-नौवीं सदी ईसवी में खोदी गईं।

एलोरा की गुफा संख्या ३० (छोटा कैलाश) : पश्चिमाभिमुख यह एक अपूर्ण गुफा है और वहाँ के प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर (गुफा संख्या १६) का छोटा रूप है (चित्र संख्या २८)। इसमें १३०' लम्बा और ८०' चौड़ा प्रांगण है जिसके पृष्ठ यानी पूर्वी छोर से क्रमशः त्रितल विमान (१४½'× १२½'), अन्तराल, गूढमण्डप (३६¼'×३६¼') और मुखचतुष्की (१०'×१०') का विन्यास किया गया है जबकि पश्चिमी भाग में प्रतोली जैसा प्रवेशद्वार है। गूढमण्डप में दो पार्श्वचतुष्कियाँ भी बनाई गई हैं। विमान के अधिष्ठान और कटि प्रदेश को बिना तराशे छोड़ दिया गया है, ऊपरी तल नाटे और अर्पित शैली के हैं और ग्रीवा-शिखर नदारत है। लेकिन विमान के दक्षिणी भाग को अच्छी तरह संस्कारित कर उसमें कपोतरूपी प्रस्तर और कूट-शाला से सज्जित हार बनाया गया है। विमान के सम्मुख भाग में बनाये गये शुकनास के महानासी में सिंहासनस्थ जिनमूर्ति और उसके प्रत्येक पार्श्व में निधिमूर्ति है। विमान के गर्भगृह की फर्श गूढमण्डप के फर्श से ऊँची है और उसमें तीन पद के सोपान द्वारा प्रवेश किया जाता है। पंचशाख गर्भगृहद्वार रत्न, गंधर्व, स्तंभ, वल्लि और खल्व स्वरूप है। द्वार के एक तरफ पार्श्वनाथ की और दूसरी तरफ बाहुबली की कायोत्सर्ग मूर्ति है। द्वार के उत्तरंग के ऊपर एक श्रेणी में कूट बनाये गये हैं। गर्भगृह में सिंहासन पर जिन आसीन हैं। जिनमूर्ति के दोनों तरफ चामरधर और ऊपर त्रिछत्र है। गर्भगृह की एक पार्श्वभित्ति पर अठभुजी चक्रेश्वरी का अंकन है जिससे प्रतीत होता है कि प्रस्तुत गुफा ऋषभदेव को समर्पित थी।

गूढमण्डप के तराशे गये दक्षिणी दीवाल में कर्ण और भद्र बनाये गये हैं और इनके बीच में सलिलान्तर बनाकर पंजरकोष्ठ दर्शाये गये हैं। कर्णों पर विद्याधरों की

युगल मूर्तियाँ और पंजरकोष्ठों में यक्ष-यक्षी की मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं। कपोतरूपी प्रस्तर के नीचे भूतमाला का अंकन है और ऊपर कूट-शाला का हार है। चतुष्कियों के अधिष्ठान और कक्षासन अनगढ़ हैं जबकि उनके द्वार और स्तंभ संस्कारित हैं। इनका त्रिशाख द्वार रत्न, विद्याधरी और स्तंभ से बना है और उसके बाहरी किनारे पर द्वारपाल खड़े हैं। गूढमण्डप की छत सोलह स्तंभों पर टिकी है। स्तंभ चौकोर, अठपहल और गोलाकार इन तीनों शैलियों के हैं। अंतराल के दो भित्तिस्तंभों के बीच में मकरतोरण बनाया गया है। स्तंभों की पोतिका तरंग अथवा चित्रशैली की है। गूढमण्डप की आंतरिक भित्ति पर बाईस जिन मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। गूढमण्डप की समतल बाहरी छत पर गोलाकार पट्ट का कटाव तो है परन्तु उस पर पद्मछत्र अंकित नहीं है जैसा हम वहाँ के प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर में पाते हैं।

एलोरा की गुफा संख्या ३१ : इसके सम्मुख भाग में चार स्तंभों पर आधृत मुखमण्डप और पृष्ठभाग में गर्भगृह है। मुखमण्डप की बाईं भित्ति पर पार्श्वनाथ की और दाईं भित्ति पर बाहुबली की आकर्षक कायोत्सर्ग मूर्ति उत्कीर्ण की गई है जबकि गर्भगृह द्वार के एक तरफ गजारूढ़ सर्वानुभूति की और दूसरी तरफ सिंहवाहिनी अंबिका की मूर्ति है। गर्भगृह में तीर्थंकर महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति अनुचरों के साथ उत्कीर्ण है। छोटे आकार की यह गुफा इन्द्रसभा के बाहर दाहिनी तरफ है।

एलोरा की गुफा संख्या ३२ (इन्द्रसभा) : यह दोमंजिली है (चित्र संख्या ९)। दखिणाभिमुख इस गुफा के सामने तरफ कपिशीर्षकयुक्त प्राकार है जिसमें प्रवेश करने के लिए गोपुर-द्वार बनाया गया है। गोपुर पर शालाशिखर है जिसके शीर्ष पर एक स्तूपी और दो सिंह बैठाये गये हैं (चित्र संख्या २९)। गोपुर को पार कर एक आयताकार प्रांगण में प्रवेश किया जाता है। प्रांगण के मध्य में एक सर्वतोभद्र विमान बनाया गया है (चित्र संख्या ३०)। विमान के दाहिनी ओर एक सुन्दर मानस्तंभ और बाईं ओर एक विशाल गज है। सर्वतोभद्र मंदिर में पहुँचने के लिए उत्तर और दक्षिण में आठ-नौ पद की सोपानमाला है। विमान द्वि-अंग प्रकार का है। उसका अधिष्ठान ऊँची जगती, पद्म, त्रिपट्ट कुमुद, अन्तरपट्ट और कपोत से बना है। कटि के प्रत्येक भद्र में दो सुन्दर स्तंभ और प्रत्येक कर्ण में एक कुड्यस्तंभ बनाया गया है।कटि के ऊपरी सिरे पर कपोतरूपी छाद्य है जिसे वल्लिमण्डल से सज्जित किया गया है। कपोत के ऊपर का ठाट द्वितलीय है। प्रथम तल कण्ठ, तुलापट्ट, मकरमाला और सुन्दर कर्णकूटों एवं पंजरनासियों से सज्जित हार से बना है। द्वितीय तल में केवल पंजरनासियाँ हैं और उसके कपोतरूपी प्रस्तर के ऊपर व्यालमाला प्रदर्शित है। इसकी वेदी, ग्रीवा और शिखर अठपहल हैं। स्तूपी इस समय मौजूद नहीं है। विमान के अन्दर एक समवसरणपट्ट है जिसके चारों पटल पर जिनमूर्ति उत्कीर्ण है।

प्रांगण के पश्चिमी तरफ एक मण्डप है जिसमें दो शृंखलाओं में छः स्तंभ खड़े

किये गये हैं। मण्डप की बाईं भित्ति पर पार्श्वनाथ की और दाईं भित्ति पर बाहुबली की कायोत्सर्ग मूर्ति उत्कीर्ण है जबकि पृष्ठभित्ति में गर्भगृह बनाकर उसमें महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति अनुचरों के साथ उत्कीर्ण है। गर्भगृह द्वार के एक तरफ गजारूढ़ सर्वानुभूति और दूसरी तरफ सिंहवाहिनी अंबिका है। इस मण्डप और मुख्य गुफा के बीच में दो स्तंभों से युक्त एक छोटा-सा मण्डप है जिसमें सर्वानुभूति और अंबिका की आकर्षक मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इसी तरह प्रांगण के पूर्वी तरफ भी दो कक्ष्य हैं जिनमें एक सादी और दूसरी स्तंभविहीन मण्डप एवं गर्भगृह से युक्त है। यहाँ भी पश्चिमी तरफ की गुफाओं जैसी ही मूर्तियाँ बनाई गई हैं परन्तु मण्डप की पार्श्वभित्तियों पर चार जिनमूर्तियाँ भी उत्कीर्ण हैं।

प्रांगण के पीछे यानी उत्तर तरफ बरामदारूपी मुखमण्डप है जिसमें जाने के लिए सोपान है। मुखमण्डप की छत आगेपीछे दो-दो स्तंभों और दो-दो भित्तिस्तंभों पर आश्रित है और उसके प्रत्येक पार्श्व में गर्भशाला बनाई गई है। प्रत्येक गर्भशाला के सामने स्तंभविहीन मण्डप भी है। मुखमण्डप के बाईं ओर के भित्तिस्तंभों पर शांतिनाथ की दो कायोत्सर्ग मूर्तियाँ हैं जिन पर उत्कीर्ण अभिलेख से ज्ञात होता है कि इनका कटाव ब्रह्मचारिन् सोहिल ने १०वीं सदी ईसवी में किया था। बाईं ओर की गर्भशाला के स्तंभविहीन सम्मुखीन मण्डप की बाईं भित्ति पर पार्श्वनाथ एवं महावीर की और दाहिनी भित्ति पर महावीर एवं बाहुबली की कयोत्सर्ग मूर्तियाँ हैं जबकि गर्भशाला के द्वार के एक तरफ सर्वानुभूति की और दूसरी ओर अंबिका की मूर्ति उत्कीर्ण की गई है। गर्भशाला के अंदर तीर्थंकर महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति है। स्तंभविहीन इस मंडप में चित्रों के अवशेष भी मिले हैं। दाहिनी ओर की गर्भशाला के स्तंभविहीन मण्डप की बाईं भित्ति पर बाहुबली की और दाईं भित्ति पर पार्श्वनाथ की कायोत्सर्ग मूर्ति बनाई गई है जबकि गर्भशाला के द्वार के अगल-बगल सर्वानुभूति और अंबिका हैं। गर्भशाला के अन्दर यहाँ भी महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति उत्कीर्ण है। दाहिने ओर के मण्डप के सामने ही सोपानमाला है जिससे ऊपरी मंजिल पर चढ़ा जाता है।

मुखमण्डप के पृष्ठ भाग में एक अपूर्ण मण्डप है जो लगभग वर्गाकार है। इसमें बारह स्तंभ एक वर्ग में खड़े किये गये हैं। मण्डप के प्रत्येक तरफ एक आयताकार अपूर्ण आलिन्द बनाया गया है। मण्डप के पीछे दो स्तंभों से युक्त अन्तराल और फिर गर्भगृह है जिसमें तीर्थंकर महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति ध्यानमुद्रा में उत्कीर्ण है।

मुखमण्डप के दाहिने सिरे पर बनाये गये सोपान द्वारा ऊपरी मंजिल के भव्य मण्डप के सामने स्थित आयताकार मुखमण्डप (५४'×१०') में प्रवेश किया जाता है। मुखमण्डप के एक छोर पर सर्वानुभूति की और दूसरे छोर पर अंबिका की

विशालकाय आसीन मूर्ति बनाई गई है। मुखमण्डप को सामने तरफ वेदिका-कक्षासन की नाटी दीवाल से घेर दिया गया है। कक्षासन के आसनपट्ट पर भद्रक प्रकार के दो अलंकृत स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ खड़े किये गये हैं जो मुखमण्डप की सम्मुखीन छत को रोके हुये हैं। इनके सीध में मुखमण्डप के पीछे दो मिश्रक शैली के स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ खड़े कर मण्डप को मुखमण्डप से अलग किया गया है।

ऊपरी मंजिल (चित्र संख्या १०) के मण्डप (५५' गहरा और ७८' चौड़ा) में बारह अत्यंत अलंकृत प्रकार के स्तंभ (चित्र संख्या ३१) खड़े कर मध्य में नाभि और प्रत्येक तरफ आयताकार आलिन्द बनाया गया है। स्तंभ चार प्रकार के हैं। प्रथम वर्ग के स्तंभों का अधिष्ठान भिट्ट, पद्म, त्रिपट्ट कुमुद और पद्म से बना है। उनकी यष्टि क्रमशः चौकोर एवं सादी, घटपल्लव और फाँकेदार संकीर्ण घट या लशुन से युक्त है जबकि शीर्षक फाँकेदार दो ऊर्ध्वपद्म और बल्लिसज्जित आमलक से निर्मित है। द्वितीय वर्ग के स्तंभों का अधिष्ठान प्रथम वर्ग जैसा ही है परन्तु उनकी यष्टि क्रमशः चौकोर एवं सादे भाग, आकर्षक पल्लव सज्जित कर्ण, सोलहपहलदार सादे भाग, मुक्तामाला, मणिबन्ध और चन्द्रशालाओं से सज्जित सोलहपहलदार संकीर्ण घट या लशुन से बना है। उनका शीर्षक सोलहपहलदार दो ऊर्ध्वपद्म एवं मणिमाला से अलंकृत सोलहपहलदार कुमुद से बना है। तृतीय वर्ग के स्तंभों का अधिष्ठान भी उपर्युक्त जैसा ही है परन्तु यहाँ पर उसे भद्रक स्वरूप प्रदान कर दिया गया है। उनकी यष्टि का एक-चौथाई निचला भाग चौकोर एवं सादा है और ऊपरी भाग फाँकेदार है। फाँकेदार भाग क्रमशः चौकोर पर मूर्तियुक्त, मुक्तामाला, रत्नपट्ट और घट या लशुन से युक्त है। उनका शीर्षक दो ऊर्ध्वपद्म और सादी पट्टिका से युक्त आमलक से बना है। चतुर्थ वर्ग के स्तंभों का अधिष्ठान तृतीय वर्ग जैसा ही है। उनकी यष्टि का निचला भाग चौकोर एवं सादा है और ऊपरी भाग पल्लव और फाँकेदार लशुन से बना है। उनका शीर्षक तीन ऊर्ध्वपद्म एवं आमलक विनिर्मित है। स्तंभों के ऊपर अलंकृत भारपट्ट बिछाये गये हैं। मण्डप के पार्श्वालिन्द और पृष्ठभित्ति में अनेक जिन मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। मण्डप के मध्य में सर्वतोभद्र जिनप्रतिमा काटी गई है जो संप्रति टूट गई है। जिनसर्वतोभद्रिका के ठीक ऊपर वाले वितान में पद्म उत्कीर्ण है।

गर्भगृह द्वार चतुश्शाख प्रकार का है। यह रत्न, स्तंभ, रूप (जिन मूर्तियों से सज्जित) और रूप (विद्याधरी की मूर्तियों से अलंकृत) स्वरूप है। द्वार के दोनों ओर द्वारपाल खड़े हैं। बाईं ओर के द्वारपाल के बाहरी किनारे पर कायोत्सर्ग पार्श्वनाथ की एक विशाल मूर्ति अनुचरों के साथ उत्कीर्ण है जबकि दाईं ओर उसी तरह बाहुबली की मूर्ति है जो कि एलोरा की बाहुबली (गोम्मटेश्वर) की मूर्तियों में सर्वोत्तम है। गर्भगृह के अन्दर तीर्थंकर महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति ध्यानमुद्रा में आसीन है।

ऊपरी मण्डप के दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम कर्ण के पास एक द्वार है

जिससे मुखमण्डप की विशालमूर्ति के पीछे बनाये गये एक कक्ष्य में प्रवेश किया जाता है और फिर उसे पार कर प्रांगण के दोनों पार्श्वों में बनाये गये बरामदारूपी मुखमण्डप में प्रवेश किया जाता है जिसकी छत चार चौकोर स्तंभों और चार भित्तिस्तंभों पर टिकी है और जिसके दक्षिणी छोर पर मातंग की मूर्ति उत्कीर्ण है। प्रत्येक तरफ के मुखमण्डप के पीछे चार चौकोर स्तंभों पर आधृत मण्डप और गर्भगृह हैं। पूर्वी मण्डप में पार्श्वनाथ, महावीर, सिद्धायिका और बाहुबली की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं और चित्र भी बनाये गये हैं। गर्भगृह में महावीर की ध्यानमुद्रा में आसीन मूर्ति है और गर्भगृह द्वार के दोनों ओर द्वारपाल खड़े हैं। पश्चिमी मण्डप का मुहार और स्तंभ बहुत सुन्दर हैं। शैली की दृष्टि से ये स्तंभ उत्तरी तरफ के मण्डप की तरह के हैं परन्तु उनसे छोटे और पतले हैं। मण्डप की पार्श्वभित्ति के मध्य खण्ड में एक तरफ पार्श्वनाथ की और दूसरी तरफ बाहुबली की कायोत्सर्ग मूर्ति उत्कीर्ण है जबकि उनके अगल-बगल महावीर की मूर्तियाँ अंकित हैं। गर्भगृह में महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति ध्यानमुद्रा में आसीन है। पश्चिमी गुफा के प्रवेश कक्ष्य के द्वार के एक तरफ चक्रेश्वरी की और दूसरी तरफ सरस्वती की आकर्षक मूर्तियाँ भी उत्कीर्ण हैं।

इन्द्रसभा का मुख्य आकर्षक प्रत्येक मंजिल के मुहार की वह शोभापट्टी है जिसे कपोतरूपी छाद्य के ठीक ऊपर बनाया गया है। निचली शोभापट्टी पर गज और सिंह का क्रम से अंकन है जबकि ऊपरी पर भाँति-भाँति के अल्पविमान बनाकर उनमें जिनमूर्तियाँ दर्शायी गई हैं।

एलोरा की गुफा संख्या ३३ (जगन्नाथसभा) : यह भी दोमंजिली है (चित्र संख्या ११, १२)। इसमें एक खुला प्रांगण है जिसमें दक्षिण दिशा से प्रवेश किया जाता है। लेकिन इसके प्रांगण में इन्द्रसभा जैसा प्राकार और सर्वतोभद्र मंदिर नहीं हैं। प्रांगण के पार्श्व एवं पृष्ठ भाग में गुफाएँ खोदी गई हैं। पश्चिमी यानी बाईं ओर की गुफा में एक मुखमण्डप, मुखमण्डप के पीछे चार चौकोर स्तंभों से युक्त लगभग वर्गाकार मण्डप और मण्डप के पृष्ठ भाग में गर्भगृह है जिसमें तीर्थंकर महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति ध्यानमुद्रा में आसीन है। प्रांगण से मुखमण्डप में जाने के लिए सोपान है। मुखमण्डप के सम्मुखीन मध्य भाग की चट्टान को काटकर चौड़ा रास्ता बनाया गया है और उसके दोनों किनारों पर चट्टानी भित्ति खड़ी की गई है जबकि उसके पीछे दो चौकोर स्तंभ खड़े कर मुखमण्डप को मण्डप से अलग किया गया है। मुखमण्डप के एक सिरे पर सर्वानुभूति की और दूसरे पर अंबिका की मूर्ति उत्कीर्ण है। मण्डप के स्तंभों का चौकोर अधिष्ठान उपान, जाड्यकुंभ और सादी पट्टिका से बना है और उसके प्रत्येक पटल पर त्रिकोणपट्ट बनाया गया है। स्तंभयष्टि का निचला भाग चौकोर है जिसके ऊपरी सिरे पर सुन्दर पल्लव दर्शाये गये हैं। फिर सोलहपहलदार सादा भाग है। उसके ऊपर अठपहल भाग है जिसे मुक्तामाला, रत्नमाला और नासि से सजाया

गया है। यष्टि का ऊपरी सिरा सोलहपहलदार संकीर्ण घट या लशुन से बना है जिसके एकान्तर पटलों पर नासि की शिखाएँ बनाई गई हैं। स्तंभ-शीर्ष ग्रीवा, दो ऊर्ध्वपद्म और रत्नपट्ट से सज्जित पहलदार कुमुद से बना है। उनकी पोतिका गोलाकार एवं सादी है। मण्डप के सम्मुखीन आलिन्द के एक छोर पर पार्श्वनाथ की और दूसरे छोर पर बाहुबली की कयोत्सर्ग मूर्ति उत्कीर्ण है।

प्रांगण के दाहिनी यानी पूर्वी तरफ एक स्तंभविहीन मुखमण्डप और एक कोठरी है जिनमें पश्चिमी तरफ की गुफा की ही तरह मूर्तियाँ बनाई गई हैं।

प्रांगण के पृष्ठ यानी उत्तरी तरफ की गुफा में जाने के लिए सोपान बनाया गया है। इसके सम्मुख भाग में आगे-पीछे चार चौकोर स्तंभों से युक्त आयताकार मुखमण्डप, मध्य में भी चार स्तंभों से युक्त वर्गाकार मण्डप और पृष्ठ भाग में अन्तरालयुक्त गर्भगृह है। मुखमण्डप के एक छोर पर सर्वानुभूति और दूसरे पर अंबिका की मूर्ति अनुचरों के साथ उत्कीर्ण है। मूर्तियों के ऊपर सुन्दर तोरण भी बनाये गये हैं। मण्डप के एक ओर की पार्श्वभित्ति पर पार्श्वनाथ की और दूसरी ओर बाहुबली की कायोत्सर्ग मूर्ति उत्कीर्ण है जबकि गर्भगृह में महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति ध्यानमुद्रा में उत्कीर्ण है। अन्तराल के सामने सुन्दर तोरण बनाया गया है जिसे पार कर ही अन्दर प्रवेश किया जाता है। इस गुफा के स्तंभ तीन प्रकार के हैं। उनके अधिष्ठान और पोतिका तो पश्चिमी गुफा के स्तंभों जैसे ही हैं परन्तु उनकी यष्टि और शीर्षक में अन्तर है। अलंकरण के आधार पर उन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता हैं। प्रथम वर्ग के स्तंभों की यष्टि क्रमशः सादे चौकोर भाग, घटपल्लव और फाँकेदार संकीर्ण घट या लशुन से बना है जबकि शीर्षक मणिबन्धुयुक्त ग्रीवा, दो ऊर्ध्वपद्म और वल्लिसज्जित कुमुद से युक्त है। द्वितीय वर्ग के स्तंभों की यष्टि क्रमशः चौकोर भाग (जिसका निचला भाग सादा और ऊपरी भाग कर्णपल्लव से सज्जित है), सोलह-पहलदार भाग, मुक्तामाला एवं गणमूर्तियों से युक्त पट्टिका, रत्नपट्ट और नासियुक्त संकीर्ण घट या लशुन से बना है जबकि शीर्षक दो ऊर्ध्वपद्म और रत्नविजड़ित कुमुद से बना है। तृतीय वर्ग के स्तंभ पूर्णतः चौकोर हैं। उनकी यष्टि क्रमशः सादे चौकोर भाग, फाँकेदार चौकोर भाग (जिसके प्रत्येक पटल पर मूर्ति उत्कीर्ण है), मुक्तामाला, रत्नपट्ट और फाँकेदार लशुन से बना है जबकि शीर्षक फाँकेदार दो ऊर्ध्वपद्म और रत्नपट्टसज्जित कुमुद से बना है।

उत्तरी गुफा के मुखमण्डप के पूर्वी तरफ दक्षिणाभिमुख एक और कक्ष्य है जिसके गर्भगृह में तीर्थंकर महावीर की ध्यानमुद्रा में आसीन मूर्ति और स्तंभविहीन सम्मुखीन मण्डप में पार्श्वनाथ और बाहुबली की कायोत्सर्ग मूर्ति उत्कीर्ण हैं। इसी गुफा के दाहिनी तरफ ऊपरी मंजिल में जाने का सोपान है। ऊपरी मंजिल में आयताकार मण्डप और लगभग वर्गाकार गर्भगृह है। मण्डप में बारह स्तंभों को आयताकार घेरे में खड़े कर

बीच में नाभि और चहुँओर आलिन्द बनाया गया है। मण्डप के पृष्ठ भाग में गर्भगृह है जबकि सम्मुख भाग में वेदिका-कक्षासन की नाटी दीवाल है। कक्षासन के आसनपट्ट पर दो चौकोर स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ मुहार की छत को रोके हुये हैं। मुहार के ऊपरी तरफ कपोत और चतुष्पदों से सज्जित शोभापट्टी है। वेदिका-कक्षासन के बाहरी छोरों पर उच्च उभार के साथ गजमूर्ति उत्कीर्ण हैं। वेदिका और कक्षासन के बाकी स्थानों में क्रमशः मिथुनों और पूर्णकुंभों की सज है (चित्र संख्या ३२)।

उत्तरी गुफा के मण्डप के स्तंभों का अधिष्ठान चौकोर है और वह उपान, जाड्यकुंभ, धारान्वित कुमुद और पद्मपट्टिका विनिर्मित है। उनकी पोतिका तरंग शैली की है और उनके मध्य पट्ट पर वल्लि उत्कीर्ण है। उनकी यष्टि के अलंकरण में भिन्नता है। अलंकरण के आधार पर उन्हें दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम वर्ग के स्तंभों की यष्टि क्रमशः सोहलपहलदार सादे संकीर्ण भाग, फाँकेदार गोलाकार भाग, चार सुन्दर पल्लवों से सज्जित भाग और मुक्तामाला से अलंकृत गोलाकार संकीर्ण घट या लशुन से बना है जबकि उनका शीर्षक तीन ऊर्ध्वपद्म और आमलक या धारान्वित कुमुद (वल्लिपट्ट से युक्त) से बना है (चित्र संख्या ३३)। द्वितीय वर्ग के स्तंभों (जिसमें कक्षासन के भी स्तंभ शामिल हैं) की यष्टि का आधा निचला भाग चौकोर एवं सादा है और उसके ऊपरी सिरे पर कर्णपल्लव या वल्लि उत्कीर्ण है। उसके ऊपर फाँकेदार लम्बा लशुन है। शीर्षक फाँकेदार तीन ऊर्ध्वपद्मों और वल्लिपट्टयुक्त आमलक से बना है। मण्डप के पार्श्व और पृष्ठ भित्तियों पर महावीर और पार्श्वनाथ की अनेक मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। गर्भगृह के दोनों ओर दो कायोत्सर्ग मूर्तियाँ हैं और उनके निकट बाईं ओर सर्वानुभूति और दाईं ओर अंबिका अपने गज एवं सिंह वाहन के साथ आसीन हैं। गर्भगृहद्वार की शाखाओं पर चौबीस तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं लेकिन द्वार के निचले भाग पर एक ओर मकरवाहिनी गंगा और दूसरी ओर कच्छपवाहिनी यमुना खड़ी है। गर्भगृह में जिनेन्द्र भगवान् की सिंहासनारूढ़ मूर्ति आसीन है।

एलोरा की गुफा संख्या ३४ : यह एक छोटी गुफा है और जगन्नाथसभा के निकट पश्चिम तरफ स्थित है। एलोरा की यह अंतिम गुफा है। इसमें आयताकार मुखमण्डप, चौकोर मण्डप और गर्भगृह हैं। दो स्तंभों और दो अर्धस्तंभों से बना मुखमण्डप संप्रति गिर गया है। चार स्तंभों से युक्त मण्डप की सम्मुखीन दीवाल के मध्य में प्रवेशद्वार और पार्श्व में दो वातायन बनाये गये हैं। मण्डप के एक पार्श्व में तीर्थंकर पार्श्वनाथ की और दूसरे में बाहुबली की कायोत्सर्ग मूर्ति उत्कीर्ण है जबकि गर्भगृह के प्रवेशमार्ग के एक ओर सर्वानुभूति और दूसरी ओर अंबिका विराजमान है। मण्डप में कई द्वितीर्थिक जिन मूर्तियाँ भी उत्कीर्ण हैं। गर्भगृह में महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति ध्यानमुद्रा में अवस्थित है।

पटना की जैन गुफा :

पीतलखोरा के पास पटना (खानदेश, महाराष्ट्र) एक गाँव है जहाँ नागार्जुन की कोठरी नामक एक जैन गुफा है। इसके सामने तरफ मुखमण्डप है जो १८' लंबा और ६' चौड़ा (एक तरफ केवल ४' चौड़ा) है और उसकी सम्मुखीन छत दो चौकोर स्तंभों पर आश्रित है। मुखमण्डप के बाईं यानी दक्षिणी छोर पर एक कक्ष्य है जिसकी पृष्ठभित्ति में आसनपट्ट बनाया गया है। गुफा के आंतरिक भाग में २०' चौड़ा और १४' से १६' गहरा मण्डप है जिसमें असमान आकार के दो स्तंभ खड़े किये गये हैं। बाईं ओर के स्तभ के निचले भाग पर सर्वानुभूति की और दाईं ओर के स्तंभ के निचले भाग पर अंबिका की आसीन मूर्ति उत्कीर्ण है। मण्डप की पृष्ठभित्ति में पीठ के ऊपर पद्मासनस्थ जिन की मूर्ति ध्यानमुद्रा में उत्कीर्ण है। जिनमूर्ति के प्रत्येक तरफ गजमुण्ड, कायोत्सर्ग जिन, चामरधर, मकर, विद्याधर आदि का अंकन है जबकि शीर्ष पर त्रिछत्र बनाया गया है। जिनमूर्ति से थोड़ा हटकर दोनों ओर एक-एक और पद्मासनस्थ जिन की लगभग दो फुट ऊँची मूर्ति उत्कीर्ण की गई है। मण्डप की बाईं भित्ति पर एक आदमकद कायोत्सर्ग जिनमूर्ति प्रभामण्डल, त्रिछत्र और अनुचरों के साथ उत्कीर्ण है। मण्डप की दाहिनी दीवाल में तीन कोष्ठ बनाये गये हैं जिनमें अलग से मूर्तियाँ स्थापित की गई थीं। चूँकि यह गुफा एलोरा की जैन गुफाओं से बहुत मिलती-जुलती है अतः इसकी खुदाई भी नौवी-दसवीं सदी ईसवी में हुई होगी।[१४]

अंकाई-तंकाई की जैन गुफाएँ :

मंमाड रेलवे स्टेशन (महाराष्ट्र) से पाँच मील दूर अंकाई-तंकाई नामक दो सटी पहाड़ियाँ है जहाँ तीन ब्राह्मण गुफाएँ अंकाई की चट्टान में और सात जैन गुफाएँ तंकाई की पहाड़ी में खोदी गई हैं। ये गुफाएँ ग्यारहवीं-बारहवीं सदी में खोदी गईं और ये समकालीन चिनाई के मंदिरों की अनुकृति हैं।

गुफा संख्या १ : यह दोमंजिली है (चित्र संख्या १३, १४, १५)। निचली मंजिल के सामने तरफ दो अलंकृत स्तंभों और दो अर्धस्तंभों से युक्त आयताकार मुखमण्डप है जिसकी पिछली भित्ति के मध्य में सुन्दर नवशाखद्वार बनाया गया है। द्वारशाखाओं पर क्रमशः मणिरत्न, पुष्प, मालाधर, अप्सरा, ललितासन देव, व्याल, पत्र, पुष्प और मणिरत्न का अंकन है। द्वितीय एवं बाह्यशाखा के दोनों ओर बकुलमाला भी प्रदर्शित है। शाखाओं के निचले भाग पर आठ-आठ अनुचरों के साथ देवी की मूर्ति खड़ी की गई है जबकि ललाट पर जिन की पद्मासनस्थ मूर्ति उत्कीर्ण है। उत्तरंग पर केवल चार आंतरिक शाखाओं को ही दर्शाया गया है। उत्तरंग के ऊपर कपोतरूपी तीन छाद्य क्रमशः बनाये गये हैं। छाद्यों के ऊपरी तरफ हंसों के जोड़े

प्रदर्शित हैं। सबसे ऊपर जिनमूर्तियों से युक्त पाँच कोष्ठ बनाये गये हैं। कोष्ठों के बीच-बीच में शार्दूलों का अंकन है। उदुम्बर नष्ट हो गया है (चित्र संख्या ३६)।

आंतरिक मंडप में चार चौकोर एवं अत्यंत अलंकृत स्तंभ खड़े किये गये हैं। स्तंभशीर्षकों पर चतुर्भुजी भारपुत्रक हैं। समतल मध्य वितान में पद्मपुष्प उत्कीर्ण है जिसकी पंखुड़ियों को तीन संकेन्द्रित वृत्तों में संजोया गया है। मण्डप के पीछे बनाया गया गर्भगृह बिलकुल खाली एवं सादा है परन्तु उसका द्वार प्रवेशद्वार जैसा ही सुन्दर एवं अलंकृत है।

ऊपरी मंजिल में दो स्तंभों से युक्त आयताकार मुखमण्डप और गर्भगृह हैं। दोनों ही कक्ष्य खाली एवं सादे हैं।

गुफा संख्या २ : यह भी दोमंजिली है (चित्र संख्या ३४)। सामान्यतः यह गुफा वहाँ की गुफा संख्या १ जैसी ही है लेकिन इसके मुखमण्डप में स्तंभ न खड़ेकर चट्टानी भित्ति बनाई गई है जिससे वह प्रवेशमार्ग को छोड़ बन्द-सा है। निचली मंजिल के मुखमण्डप (२६'×१२') की बाईं भित्ति यानी पश्चिमी छोर की दीवाल में कोष्ठ बनाकर उसमें अलग पत्थर की सर्वानुभूति की गजारूढ़ विशाल मूर्ति स्थापित कर दी गई है जबकि उसके पूर्वी छोर की दीवाल के कोष्ठ में अंबिका की मूर्ति स्थापित की गई है। मुखमण्डप की पृष्ठभित्ति के मध्य में बनाया गया द्वार गुफा संख्या १ जैसा ही अलंकृत है। वर्गाकार आंतरिक मण्डप (२५'×२५') का न्यास भी गुफा संख्या १ जैसा ही है परन्तु यहाँ पर छोटा-सा अंतराल भी बनाया गया है जिसे पार कर पृष्ठ भाग में बनाये गये गर्भगृह में प्रवेश किया जाता है। गर्भगृह द्वार सादा है और उसके ललाट पर जिनमूर्ति उत्कीर्ण है। गर्भगृह वर्गाकार (१३'×१३') है और उसकी पृष्ठभित्ति में केवल पीठ ही उत्कीर्ण है।

ऊपरी मंजिल पर जाने के लिए निचली मंजिल के मुखमण्डप के दाहिनी छोर पर सोपान है। ऊपरी मंजिल में आयताकार एक बन्द मुखमण्डप है जिसके बाहरी पर्दे में चौकोर जालियाँ काटी गई हैं। मुखमण्डप के प्रत्येक पार्श्व में अर्धउभार के साथ सिंह उत्कीर्ण है। आंतरिक मण्डप वर्गाकार (२०'×२०') है और उसकी समतल छत को रोकने वाले चार स्तंभ अपूर्ण हैं।गर्भगृह (९'×६') की पृष्ठभित्ति में मूर्ति रखने के लिए केवल पीठ ही उत्कीर्ण है।

गुफा संख्या ३ : यह गुफा वहाँ की गुफा संख्या २ के निचली मंजिल जैसी है। इसके मुखमण्डप (२५'×९') के सामने वाले पर्दे में भी जाली काटी गई है। मुखमण्डप के एक ओर की पार्श्वभित्ति पर सर्वानुभूति की और दूसरी ओर अंबिका की मूर्ति चामरधरों एवं गंधर्वों के साथ उत्कीर्ण है। दोनों मूर्तियाँ भित्तिस्तंभों और मकरतोरण से बने कोष्ठ में दर्शायी गई हैं। अंबिका के साथ आम्रवृक्ष का जो अंकन

है उसे रूढ़िगत शैली में तोरण पर छह आम्र पल्लवों द्वारा दिखाया गया है। आंतरिक मण्डप (२९'×२५') में यहाँ भी चार अलंकृत स्तंभ खड़े किये गये हैं और इसका प्रवेश द्वार कम अलंकृत है। परन्तु मध्य वितान में उत्कीर्ण पद्म चार संकेन्द्रित वृत्तों में निबद्ध है। पहले और चौथे वृत्त तो सादे हैं जबकि दूसरे में सोलह पद्म पंखुड़ियाँ बनाकर उनमें नर्तकों और वादकों का और तीसरे में चौबीस पंखुड़ियाँ बनाकर उनमें देवी-देवताओं का अंकन है। समूचे पद्म को मणिरत्न से सज्जित अठकोण घेरे में रखा गया है। घेरे के चार बाहरी कोनों में भी नर्तकों एवं वादकों का अंकन है (चित्र संख्या ३५)।

मण्डप के पृष्ठ भाग में अन्तराल है जिसकी पार्श्वभित्तियों पर दो आदमकद नग्न जिनमूर्तियाँ कायोत्सर्गमुद्रा में अनुचरों के साथ उत्कीर्ण हैं। बाईं ओर की मूर्ति की पहचान शान्तिनाथ से और दाईं ओर की मूर्ति की पहचान पार्श्वनाथ से की जाती है।[१५] गर्भगृहद्वार में शाखाएँ तो काटी गई हैं परन्तु उन पर मूर्तियाँ नहीं दर्शायी गई हैं। गर्भगृह (१२'×१२') में मूर्ति रखने के लिए केवल पीठ बनाया गया है।

गुफा संख्या ४ : इसके सामने एक आयताकार (३०'×८') मुखमण्डप है जिसकी सम्मुखीन छत को रोकने के लिए दो भारी-भरकम सादे चौकोर स्तंभ खड़े किये गये हैं। मुखमण्डप की पिछली दीवाल में बनाया गया प्रवेशद्वार गुफा संख्या १ जैसा ही है परन्तु इस पर मूर्तियों की भरमार है। आंतरिक मण्डप (१८' गहरा और २४' लंबा) की छत को दो स्तंभ और इन्हीं की सीध में बनाये गये भित्तिस्तंभ रोके हुए हैं। स्तंभों की पोतिका पर भारपुत्रक न होकर पत्रलता उत्कीर्ण है। मण्डप की पृष्ठभित्ति के समूचे लंबाई वाले भाग में एक पद का आसनपट्ट है जो गर्भगृह में प्रवेश करने के लिए सोपान के उद्देश्य की पूर्ति भी करता है। गर्भगृह में केवल आसन का कटाव है। मुखमण्डप के एक स्तंभ पर ११-१२वीं सदी ईसवी का एक अभिलेख है। इसी समय अंकाई-तंकाई की गुफाएँ खोदी भी गई थीं।

यहाँ की शेष तीन गुफाएँ आकार में छोटी एवं अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में हैं। इन के प्रवेशद्वार वहाँ की गुफा संख्या १ व २ जैसे ही अलंकृत हैं। एक गुफा के गर्भगृह में ध्यानमुद्रा में आसीन जिनमूर्ति भी है।

चामर की जैन गुफाएँ :

नासिक (महाराष्ट्र) से कुछ मील उत्तर-पश्चिम में चामर नामक पहाड़ी है जहाँ ११-१२वीं सदी ईसवी में अथवा कुछ बाद में दो जैन गुफाएँ खोदी गईं। इनमें जैन तीर्थंकरों की अनेक मूर्तियाँ हैं जो पद्मासन अथवा कायोत्सर्ग मुद्रा में प्रदर्शित हैं। इनके अतिरिक्त उनमें सर्वानुभूति और अंबिका की प्रतिमाएँ हैं। एक गुफा में अनुचरों के साथ जिनचौबीसी भी है। गुफाओं के पास ही एक विशाल चट्टानी मूर्ति

है जिसका सर्पछत्र से युक्त केवल ऊर्ध्व भाग ही काटा गया है। ये गुफाएँ पोरस (porus) चट्टान में काटी गई हैं।

भामेर की जैन गुफाएँ :

धुलिया (महाराष्ट्र) से ३० मील पश्चिम में भामेर की पहाड़ी है जहाँ चार जैन गुफाएँ हैं। इनमें एक एककक्ष्यीय विहार है और दो भण्डारिका जैसी हैं। लेकिन चौथी कुछ महत्त्व की है। इसमें ७४' लंबा एक मुखमण्डप है जिसके बाईं छोर पर एक अपूर्ण कोठरी है। मुखमण्डप के पृष्ठ भाग में तीन मण्डप (प्रत्येक २४'×२०') हैं जिनमें एक-एक प्रवेशद्वार है। प्रत्येक मण्डप की छत चार चौकोर स्तंभों और उनके सीध में बनाये गये अर्धस्तंभों पर आश्रित है। इनकी दीवाल पर पार्श्वनाथ और अन्य जिनों की कई मूर्तियाँ हैं जो नष्ट हो चली हैं। ये गुफाएँ चामरलेण की समकालीन प्रतीत होती हैं।

कर्नाटक की जैन गुफाएँ :

कर्नाटक अति प्राचीन काल से जैनधर्म का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। बौद्ध यहाँ प्रभावहीन थे लेकिन जैन सक्रिय थे और विभिन्न स्थानों में सुरक्षित उनकी अनेक गुफाएँ इसकी साक्षी हैं। एकाश्मक प्रतिमाओं के निर्माण में तो वे सबको मात दे गये।

बादामी की जैन गुफा :

प्रस्तुत गुफा का कटाव थोड़ा पीछे की ओर से किया गया है जिससे सामने तरफ एक संकीर्ण उपशाला बन गया है। उपशाला में नीचे तरफ आसनपट्ट और ऊपरी तरफ कपोतरूपी छाद्य बनाया गया है। छाद्य में पतली धन्नियों का कटाव है और उसके मध्य भाग में कुबेर की एक मूर्ति उत्कीर्ण है। उपशाला के पीछे मुखमण्डप, मण्डप और गर्भगृह का विन्यास है। मुखमण्डप (३१'×६$^{१}/_{२}$') की सम्मुखीन छत चार चौकोर स्तंभों और दो भित्तिस्तंभों पर टिकी हुई है। मध्य भाग में खड़े किये गये स्तंभों के बीच की दूरी पार्श्ववाले स्तंभों से अधिक है। स्तंभों का अधिष्ठान सादा है। उनकी यष्टि के निचले भाग पर गोलाकार पट्ट बनाकर उनमें पद्म, मिथुनयुग्म, लतापत्र, मकर आदि उत्कीर्ण हैं जबकि यष्टि के ऊपरी भाग पर रत्नमाला, मणिबन्ध और मिथुनमूर्तियों से सज्जित खारेदार लशुन है। उनका शीर्षक दो ऊर्ध्वपद्म, तडि (Cushion) और दोहरी पोतिका (Double Corbel) से बना है। लशुन में आक्रामक व्यालों की ब्रैकेट मूर्तियाँ पिरोई गई हैं जो ऊपरी तरफ छाद्य को रोके हैं। इसी प्रकार के छह स्तंभ आंतरिक भाग में खड़ा कर दोनों मण्डपों को अलग किया गया है परन्तु उनकी यष्टि के निचले भाग पर कायोत्सर्ग जिनमूर्तियाँ उत्कीर्ण

है। मण्डप के दोनों पार्श्व छोरों के स्तंभों और भित्तिस्तंभों के बीच में चट्टानी भित्ति का पर्दा लगाया गया है। मण्डपों के स्तंभों पर बिछाये गये भारपट्ट सादे हैं। लेकिन इनसे तैयार कुछ वितानों में विद्याधर की युगल मूर्तियाँ अंकित हैं। मण्डप की दीवाल पर तीर्थंकरों की मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं जबकि मुखमण्डप के एक छोर पर बाहुबली की और दूसरे छोर पर पार्श्वनाथ की आदमकद कायोत्सर्ग मूर्ति अनुचरों के साथ उत्कीर्ण है।

चन्द्रशिला सहित चार पद के सोपान द्वारा पृष्ठ भाग के मध्य में स्थित गर्भगृह में प्रवेश किया जाता है। गर्भगृह का पंचशाख द्वार काफी अलंकृत है। द्वारशाखाओं के निचले भाग पर द्वारपाल खड़े हैं और सिरदल पर शाला और अट्टालक प्रकार के अल्पविमान बनाकर उनमें जिनमूर्तियाँ स्थापित हैं। गर्भगृह में तीर्थंकर महावीर की एक पद्मासनस्थ मूर्ति ध्यानमुद्रा में है। महावीर सिंहासन पर आसीन हैं और उनके प्रत्येक पार्श्व में चामरधर, शार्दूल और मकर बनाये गये हैं। इसकी तिथि सातवीं सदी ईसवी निर्धारित की जाती है।

ऐहोली की जैन गुफा :

यह गुफा बादामी की जैन गुफा से थोड़ी बड़ी है। इसमें सामने तरफ मुखमण्डप, बीच में मण्डप और पीछे गर्भगृह है। मुखमण्डप (३२'×७१/४') की सम्मुखीन छत एक कतार में खड़े किये गये चार चौकोर एवं सादे स्तंभों पर आश्रित है। इसकी छत में मकर, पुष्प आदि उत्कीर्ण हैं। मुखमण्डप के बाईं छोर की दीवाल पर उच्च उभार के साथ तीर्थंकर पार्श्वनाथ की कायोत्सर्ग मूर्ति अनुचरों के साथ काढ़ी गई है। उनके ऊपर सर्प का घटाटोप है। उनके दाहिने तरफ छत्र लिये हुये पद्मावती खड़ी है और बायें तरफ नमस्कारमुद्रा में धरणेन्द्र बैठा है (चित्र संख्या ३९)। मुखमण्डप के दाहिने सिरे की भित्ति पर उसी शैली में बाहुबली की कायोत्सर्ग मूर्ति उनकी बहनें ब्राह्मी और सुन्दरी के साथ काढ़ी गई है (चित्र संख्या ३८)।

आंतरिक मण्डप (१५'×१७३/४') में जाने का मार्ग आठ फुट चौड़ा है जिसमें दो स्तंभ खड़ाकर उसे तीन खण्डों में विभक्त कर दिया गया है। मण्डप के प्रत्येक पार्श्व में एक गर्भशाला (१४'×५') है जिसके सामने भी दो स्तंभ खड़े किये गये हैं। मण्डप की छत के मध्य खण्ड में बड़े आकार का पद्म उत्कीर्ण है। पद्म के चार कोनों में चार छोटे पद्म और खाली स्थानों में मकर, मत्स्य, पुष्प और मानवमुखयुक्त चन्द्रशालाएँ बनाई गई हैं। बाईं गर्भशाला की पृष्ठभित्ति पर तीर्थंकर महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति चामरधरों और आराधकों के साथ उत्कीर्ण है।

मण्डप के पृष्ठ भाग में वर्गाकार (८१/४'×८१/४') गर्भगृह है जिसके सामने भी दो स्तंभ खड़े कर उसमें तीन प्रवेशमार्ग बना दिये गये हैं (चित्र संख्या ३७)।

इन प्रवेशमार्गों के पार्श्वगत चट्टान पर एलीफेंटा की तरह के दो विशालकाय द्वारपाल अनुचरों (एक के साथ वामनाकार पुरुष और दूसरे के साथ वामनाकार स्त्री) के साथ खड़े हैं। मण्डप से गर्भगृह में जाने के लिए तीन पद का सोपान है। गर्भगृह के सम्मुखीन स्तंभों का अधिष्ठान चौकोर है। उनकी यष्टि को क्रमश: अठपहल, फाँकेदार, अठपहल, लशुन या कुंभ और कुमुद से युक्त बनाया गया है। उनकी पोतिका के ब्रैकेट तिर्यक् प्रकार के हैं। गर्भगृह की पृष्ठभित्ति पर तीर्थंकर महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति पार्श्वचरों के साथ उत्कीर्ण है। महावीर ध्यानमुद्रा में सिंहासन पर बैठे हैं। संभवत: यहा गुफा ७०० ई० के थोड़ा बाद में बनी थी।

कर्नाटक की अन्य जैन गुफाएँ :

मेलकोटे (मैसूर जिला) की ग्रेनाइट पत्थर की चट्टान में अतीयनरेश गुणशील (आठवीं सदी ईसवी का पूर्वार्ध) के समय में दो जैन गुफाएँ खोदी गईं जो बिलकुल सादी और महत्त्वहीन हैं।

श्रवणबेलगोल की चन्द्रगिरि नामक पहाड़ी के ऊपर बाहुबली गोम्मटेश्वर की एक ५८' ऊँची प्रतिमा है जिसे ग्रेनाइट पत्थर में चारों ओर से कोर कर बनाया गया है। उत्तराभिमुख इस नग्न मूर्ति पर चमकदार प्रभा भी है। कायोत्सर्गमुद्रा में उत्कीर्ण इस विशाल मूर्ति में कलाकार ने प्रतिमाशास्त्रीय और महापुरुषीय लक्षणों को बड़े ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। इसे गंगनरेश राजमल्ल (९७४-८४ ई०) के मंत्री चामुण्डराय ने बनवाया था। इसके अनुसरण पर बाद में कर्नाटक में गोम्मटेश्वर की मूर्तियाँ कारकल (१४३२ ई०) और वेणूर (१६०४ ई०) में भी बनाई गईं परन्तु वे उतनी भव्य और विशाल नहीं हैं।

तमिलनाडु की जैन गुफाएँ :

तमिलनाडु दिगम्बर जैन संप्रदाय का महत्त्वपूर्ण केन्द्र था। यहाँ की पहाड़ियों में अनेक प्राकृतिक गुफाएँ हैं जिनमें प्राचीन काल में जैन मुनियों के बैठने एवं साधना करने के लिए आसन्दी बनाई गई है। इन आसन्दियों पर मौर्यकाल जैसी चमकदार प्रभा भी है। छठी-सातवीं सदी ईसवी के बाद कुछ प्राकृतिक गुफाओं में जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ भी उत्कीर्ण की गईं।[१६] वल्लिमलइ (उत्तरी अर्काट जिला) की प्राकृतिक गुफा में महावीर, पार्श्वनाथ और बाहुबली की कई प्रतिमाएँ आज भी सुरक्षित हैं। कुछ प्रतिमाओं के अगल-बगल सर्वानुभूति और अंबिका तथा ऊपरी तरफ विद्याधरों का अंकन है। विलाप्पाक्कम (उत्तरी अर्काट जिला), पेच्चिपरइ (तिरुनेलवेली जिला) और सित्तनवासल (तिरुचिरापल्ली जिला) में कुछ जैन गुफाएँ खोदी भी गईं। तमिलनाडु की ये गुफाएँ ग्रेनाइट जैसे कठोर चट्टान में खुदी हैं।

विलाप्पाक्कम की पूर्वाभिमुख पंचपाण्डव गुफा :

यह एक आयताकार, विशाल, अपूर्ण जैन गुफा है। जमीन से साढ़े चार फुट ऊँची इसकी फर्श तक पहुँचने के लिए सोपान नहीं बनाया गया है। दानों किनारों पर आधुनिक सीढ़ियाँ अवश्य बनाई गई हैं। गुफा की ऊँचाई नौ फुट है और उसके मुहार पर फुटभर का समतल छाद्य है। इसकी सम्मुखीन छत को भारी-भरकम छह स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ रोके हुये हैं। सभी स्तंभ बिलकुल चौकोर हैं अर्थात् उन्हें बीच में अठपहल नहीं किया गया है जबकि तत्कालीन पल्लव स्तंभों में यह अवश्यमेव पाया जाता है। उनकी पोतिका अपूर्ण है क्योंकि कुछ को छोड़ उन्हें गोलाकार नहीं किया गया है। छाद्य से छह फुट की ऊँचाई पर पानी का एक पतला झरना है और झरने से चार फुट की ऊँचाई पर एक उथला चौकोर कोष्ठ है जो कि गुफा के बिलकुल मध्य सूत्र में अवस्थित है। कोष्ठ में कम उभार के साथ जैन तीर्थंकर की एक मूर्ति उत्कीर्ण है। सम्मुखीन स्तंभमाला के पीछे वैसी ही एक और स्तंभमाला है जिससे सामने तरफ मुखमण्डप और पीछे तरफ संकरा अर्धमण्डप बन गया है। गुफा की फर्श में पीछे से सामने की ओर तीन इंच की ढाल है। उसकी पृष्ठभित्ति में सात आयताकार (प्रत्येक ५१/२' × २१/२') कोष्ठ बनाये गये हैं जिनकी फर्श से ऊँचाई तीन फुट, गहराई एक फुट और बाहर की ओर निकास छह इंच है। गुफा की छत लगभग समतल है। के० आर० श्रीनिवासन का मत है कि मूलतः यह एक शैव गुफा थी और महेन्द्रवर्मन प्रथम (लगभग ५८०-६३० ई०) के राज्यकाल के अंतिम वर्षों में खोदी गई थी तथा बाद में इस पर जैनों ने अधिकार कर लिया।[१७] लेकिन इसे शैव कहने का कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं है। चूँकि यह क्षेत्र अति प्राचीन काल से जैनधर्म के प्रभाव में था और गुफा के ऊपर तीर्थंकर की मूर्ति भी काटी गई है अतः प्रस्तुत गुफा के जैन होने की ज्यादा संभावना है। आर० नागस्वामी का भी यही मत है।[१८]

पेच्चिपरइ की जैन गुफा :

इसमें एक मण्डप और मण्डप के प्रत्येक पार्श्व में अपूर्ण गर्भशाला है जिसमें पार्श्वनाथ की एक अपूर्ण मूर्ति उत्कीर्ण है, जैसा सर्प के घटाटोप से सुस्पष्ट है। मण्डप की पृष्ठभित्ति को किसी के अंकन के लिए खाली छोड़ दिया गया है। मण्डप के मुहार पर बनाये गये छाद्य में धन्नियों का कटाव है। संभवतः इसकी खुदाई आठवीं सदी ईसवी में हुई थी।

सित्तनवासल की जैन गुफा :

इसमें एक अर्धमण्डप (२२१/२' × ७ १/२' × ८१/२') और वर्गाकार गर्भगृह

(१०'×१०'×७१/२') है। अर्धमण्डप के सामने तरफ दो स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ खड़े किये गये हैं। स्तंभों का निचला और ऊपरी भाग चौकोर और मध्य भाग अठपहल है और उन पर पदुमक के अलंकरण हैं। उन पर तरंग शैली की पोतिका लगाई गई है। स्तंभों पर बिछाये गये भारपट्ट पर वक्राकार छाद्य लटकाया गया है। अर्धमण्डप में एक ओर ध्यानमुद्रा में आसीन पार्श्वनाथ की और दूसरी ओर किसी जैन आचार्य की मूर्ति उत्कीर्ण है। अर्धमण्डप की पृष्ठभित्ति में बनाये गये गर्भगृह के प्रवेशद्वार (५१/२'×२१/२') के सामने व्यालहस्त सोपान है। गर्भगृह की छत में धर्मचक्र उत्कीर्ण है। गर्भगृह की दीवाल पर उच्च उभार में तीन मूर्तियाँ काटी गई हैं जिनमें दो आदिनाथ और पार्श्वनाथ की और तीसरी किसी जैन आचार्य या अर्हत् की है। गुफा की संपूर्ण दीवाल, स्तंभ और छत में सुंदर चित्र बनाये गये हैं। चित्रों में समवसरण का दृश्य, पुष्कर झील, राजदम्पति आदि उल्लेखनीय हैं।[१९] ये चित्र अंजता के भित्तिचित्रों के समकक्ष हैं। गुफा के बगली चट्टान पर पांड्यनरेश अवनिपशेखर श्रीवल्लभ (लगभग ८१५-८६२ ई०) का एक अभिलेख है जिसमें गुफा के सामने के चिनाईकृत मुखमण्डप के बनाये जाने का उल्लेख है। मुखमण्डप के निर्माण से गुफा के भित्तिचित्रों को काफी हद तक सुरक्षित रखने में सहायता मिली। यह गुफा आठवीं या नौवीं सदी ईसवी के प्रारंभ में बनी थी।

अर्मामलइ की गुफा :

उत्तरी अर्काट जिला में स्थित यह एक विशाल प्राकृतिक गुफा है जिसे बाद में त्रिकूटवसति में परिवर्तित कर दिया गया। इस गुफा के वितान में सित्तनवासल की तरह चित्र बनाये गये हैं जिनमें पुष्करणी, राजपुरूषों, हंसों, दिग्पालों आदि के चित्र उल्लेखनीय हैं।[२०]

केरल की जैन गुफाएँ :

तमिलनाडु की तरह केरल में भी प्राकृतिक गुफाएँ हैं जिनमें ऐतिहासिक काल में तीर्थंकरों और उनकी शासनदेवियों की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण की गईं परन्तु श्रमणों के उठने-बैठने के लिए आसन्दी नहीं बनाई गई।

केरल की सबसे महत्त्वपूर्ण गुफा कन्याकुमारी जिला में स्थित तिरुच्चारणत्तुमलइ की गुफा है जिसमें आयनरेश विक्रमादित्य वरगुण (लगभग ८८५-९२५ ई०) का एक अभिलेख है। इस अभिलेख में तिरुच्चारणत्तुमलइ के भटियार (भट्टारक) को स्वर्ण-आभूषण दान में प्राप्त होने का उल्लेख है। इस प्राकृतिक गुफा में उत्कीर्ण पार्श्वनाथ और पद्मावती की दो स्थानक मूर्तियाँ, अनुचरों के साथ महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति और अंबिका की त्रिभंग मूर्ति बहुत आकर्षक हैं। पार्श्वनाथ और पद्मावती के

ऊपर सप्तफण छत्र है जबकि महावीर के ऊपर त्रिछत्र है।

कल्लिल (पेरुम्बावुर, इरनाकुलम जिला) में एक चट्टानी गुफा है जिसे बाद में भगवती मंदिर के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। इस गुफा के मुहार पर महावीर की एक अपूर्ण मूर्ति उत्कीर्ण है। गुफा की पृष्ठभित्ति पर महावीर की एक पद्मासनस्थ मूर्ति अनुचरों के साथ बनाई गई है। यहाँ पर भी उनके शीर्ष पर त्रिछत्र बनाया गया है। यह गुफा भी नौवीं सदी ईसवी में बनाई गई थी।[२१]

ग्वालियर की जैन गुफाएँ :

जहाँ अन्य धर्मावलम्बियों ने गुफा खुदवाने का कार्य बन्द कर दिया वहीं जैनों ने यह कार्य बाद में भी जारी रखा। पश्चात्कालीन जैन गुफाओं का एक बड़ा समूह ग्वालियर (म० प्र०) की दुर्गवाली पहाड़ी की बलुआ पत्थर की खड़ी चट्टान में उत्कीर्ण है। सन् १५२७ ई० में मुगल बादशाह बाबर ने यहाँ की तीर्थंकर मूर्तियों की नग्नता से घृणा कर उन्हें तोड़वा डाला है। इनका निर्माण तोमरवंशीय दुंगरेन्द्र सिंह और कीर्त्ति सिंह के समय में १४४०-१४८० ई० में हुआ था।

वास्तु एवं शिल्प की दृष्टि से ये गुफाएँ एलोरा अथवा अन्य पूर्ववर्ती जैन गुफाओं से अपेक्षाकृत नीरस और घटिया किस्म की हैं लेकिन इनकी संख्या, विस्तार और मूर्तियोजना के समक्ष ये दोष उतने मायने नहीं रखते। वस्तुतः यहाँ की गुफाएँ लयण प्रधान न होकर मूर्तिप्रधान हैं।

सामान्यतः ग्वालियर की गुफाओं को पाँच वर्गों में विभाजित किया जाता है।

उरवही की घाटी के दक्षिण में स्थित मुख्य समूह में तीर्थंकरों की कुल बाईस विशाल और नग्न मूर्तियाँ हैं। इनमें एक ऋषभदेव की पद्मासनस्थ मूर्ति है जिस पर दुंगरेन्द्र सिंह के समय का १४४० ई० का अभिलेख है। एक मूर्ति नेमिनाथ की है जो तीस फीट ऊँची है। यह मूर्ति भी पद्मासनमुद्रा में बैठी है। इस समूह की एक अन्य मूर्ति सत्तावन फीट ऊँची है। स्थानकमुद्रा में खड़ी यह मूर्ति ग्वालियर की सबसे ऊँची जिनमूर्ति है। इन मूर्तियों के बीच-बीच में बनाये गये कोष्ठकों में छोटी-बड़ी अन्य मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।

दक्षिण-पश्चिम समूह में मुख्यतः पाँच मूर्तियाँ हैं। इनमें एक लेटी हुई स्त्री की है जिसपर चमकदार ओप है। स्त्री के बगल में एक पुरुष और एक स्त्री अपने बच्चे के साथ बैठे हैं। बच्चे की पहचान वर्धमान महावीर से और मानवदंपति की पहचान सिद्धार्थ और त्रिशला से की जाती है।[२२]

उत्तर-पश्चिम समूह में अनके मूर्तियाँ हैं जिनमें एक ऋषभनाथ की १४७० ई० की है।

उत्तर-पूर्वी समूह में चार शैलकृत गुफाएँ हैं। उनके सामने चौबीस फुट चौड़ा और दश फुट ऊँचा स्तंभयुक्त बरामदा है। इस समूह की गुफा संख्या १ (३६'×१२') बिलकुल सादी है। गुफा संख्या २ में दो कोष्ठ हैं (१२'×९'×१४') और उनमें दो प्रवेशद्वार और एक खिड़की है। उसमें एक सुंदर स्तंभ भी है। स्तंभ की यष्टि गोलाकार और पत्रलता से सज्जित है तथा उसका शीर्षक पद्मांकित है। द्वार के ऊपर जिनमूर्तियाँ प्रदर्शित हैं। गुफा के अन्दर किन्नर की एक और पार्श्वनाथ की दो प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। गुफा संख्या ३ (३३'×१८') में सोलह फीट ऊँची एक जिनमूर्ति उत्कीर्ण है। गुफा संख्या ४ में विभिन्न आकार के कई कोष्ठ हैं और उनके सामने स्तंभयुक्त बरामदा (१६'×२०') भी है। स्तंभों के शीर्षकों को पत्रलता से सज्जित कर दिया गया है। एक कोष्ठ में पार्श्वनाथ की कई प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं। एक अन्य कोष्ठ में तीर्थंकर की पच्चीस फुट ऊँची प्रतिमा है जिसके परिकर पर गंधर्वों का सुन्दर अंकन है।

दक्षिण-पूर्वी समूह की गुफाएँ लगभग आधे मील के विस्तार में खुदी हुई हैं। इन गुफाओं के द्वार आठ से दश फुट ऊँचे हैं और उनकी चौड़ाई लगभग चार फुट है। इन द्वारों की बगली शाखाओं के ऊपर अलंकृत ब्रैकेट और कमानचे बनाए गये हैं। कमानचों के कछौटों पर जलाभिषेक करते हुए गजों का अंकन है जबकि द्वार के ऊपर जिनमूर्तियों का प्रदर्शन है। गुफाओं के मुखपट्ट पर प्रस्तर की रचना कर उसे वानस्पतिक, ज्यामितिक, भित्तिस्तंभों और सुन्दर कमानचों से सज्जित कर दिया गया है। वितानों को भी बहुविध सजाया गया है। इन अलंकरणों के कारण इस समूह की गुफाएँ अपनी अलग पहचान रखती हैं। यहाँ पर बाईस से तीस फुट ऊँची अट्ठारह और आठ से पन्द्रह फुट ऊँची अट्ठारह से भी अधिक तीर्थंकर प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं।

संदर्भ :

१. देबला मित्र, *जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर*, भाग- १, संपा०- ए० घोष, नई दिल्ली, १९७४, पृ० ७०।

२. ए० फुहरर, 'पभोसा इंस्क्रिप्सन्स'', *एपीग्राफिया इण्डिका*, भाग- २, पृ० २४०-४३।

३. देबला मित्र, *पूर्वोक्त*, पृ० ७४-७८।

४. देबला मित्र, *उदयगिरि एण्ड खण्डगिरि*, नई दिल्ली, १९७५, पृ० २५।

५. वासुदेवशरण अग्रवाल, *भारतीय कला*, पृ० १९३।

६. वही, पृ० १९१।

७. वही, पृ० १८८।

८. देबला मित्र, *उदयगिरि एण्ड खण्डगिरि*, पृ० ३८।

९. भारतीय कला, पृ० १९०।
१०. वही, पृ० १९५।
११. देबला मित्र, *उदयगिरि एण्ड खण्डगिरि*, पृ० ५९।
१२. हीरालाल जैन, *भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान*, पृ० २५८।
१३. जान फेथफुल फ्लीट, *कार्पस इंस्क्रिप्सनम इंडिकेरम*, भाग- ३, वाराणसी, १९६३, पृ० २५८।
१४. जेम्स बर्जेस, *दी केव टेम्पल्स आफ इण्डिया*, दिल्ली, १९६९, पृ० ४९३।
१५. वही, पृ० ५०७-०८।
१६. के० वी० सौन्दरराजन, *आसपेक्टस् आफ जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर*, संपा०- यू० पी० शाह, अहमदाबाद, १९७५, पृ० १४०।
१७. के० आर० श्रीनिवासन, *केव टेम्पल्स आफ दी पल्लवज्*, नई दिल्ली, १९६४, पृ० ९७।
१८. आर० नागस्वामी, *आसपेक्टस् आफ जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर*, पृ० १२४।
१९. सी० शिवराममूर्ति, *इंडियन पेंटिंग*, दिल्ली, १९७०, पृ० ५६-५७।
२०. के० आर० श्रीनिवासन, *आसपेक्टस् आफ जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर*, पृ० १८२-८३।
२१. एच० सरकार, *आसपेक्टस् आफ जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर*, पृ० २१६-१७।
२२. के० के० चक्रवर्ती, *ग्वालियर फोर्ट*, नई दिल्ली, १९८४, पृ० ४३।

जैन गुफाओं का स्थापत्यगत विकास

जैन गुफाओं के उपर्युक्त सर्वेक्षण और बौद्ध एवं हिन्दू गुफाओं से उनकी तुलना करने पर कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य प्रकट होते हैं। यह सर्वविदित है कि बौद्ध गुफाएँ महात्मा बुद्ध के प्रतीक और मानवरूप में दर्शाये जाने से क्रमशः हीनयान और महायान इन दो वर्गों में विभाजित की जाती हैं। उसी आधार पर जैन गुफाओं को भी दो वर्गों में बाँटा जा सकता है। दोनों संप्रदाओं की गुफाओं का यह वर्गीकरण उनमें बुद्ध अथवा जिन (तीर्थंकर) की मूर्तियों के होने या न होने पर आधारित है। जहाँ प्रथम वर्ग की जैन गुफाओं में तीर्थंकर की मूर्तियाँ अनुपस्थित हैं और वे प्राचीन हैं वहीं द्वितीय वर्ग की गुफाओं में तीर्थंकर की मूर्तियाँ आवश्यकरूप से मौजूद हैं और वे पश्चात्कालीन हैं।

प्रथम वर्ग की जैन गुफाएँ :

इस वर्ग में राजगृह, पभोसा, उदयगिरि-खण्डगिरि और जूनागढ़ की जैन गुफाएँ शामिल हैं। इन स्थलों की सभी जैन गुफाएँ जैन श्रमणों के विहार के लिए बनाई गई हैं क्योंकि उनमें एक भी ऐसी गुफा नहीं है जिसे पूजागृह या चैत्यगृह कहा जा सके जबकि पश्चिम भारत की समकालीन बौद्ध गुफाओं में चैत्यगृह और विहार दोनों प्राप्त होते हैं। उदयगिरि में एक चैत्यगृह का अवशेष अवश्य मिला है परन्तु उससे कोई निष्कर्ष निकालना कठिन है क्योंकि वह शैलकृत न होकर चिनाईकृत है। इसी प्रकार जूनागढ़ के एक विहार का न्यास वृत्तायत तो है परन्तु उसमें स्तूप नहीं बनाया गया है जबकि बौद्ध चैत्यगृहों में स्तूप आवश्यकरूप से मिलता है। इस वर्ग की जैन गुफाओं में कहीं भी स्तूप का अंकन भी नहीं है यद्यपि जैनधर्म में स्तूप-पूजा प्रचलित थी। मथुरा का प्रसिद्ध जैन स्तूप इसका प्रमाण है। उदयगिरि की कुछ-एक जैन गुफाओं में केवलवृक्ष (बौद्ध बोधिवृक्ष) की पूजा का दृश्य अवश्य दिखलाया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारंभिक जैन गुफाएँ जैन श्रमणों के रहने एवं तपस्या करने के लिए ही खोदी गई थीं।

प्रथम वर्ग की जैन गुफाओं में मांगलिक चिन्हों यथा त्रिरत्न (सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, और सम्यक् चारित्र का प्रतीक), श्रीवत्स, स्वस्तिक आदि का अंकन तो हुआ है परन्तु तीर्थंकर की प्रतिमाएं कहीं नहीं उत्कीर्ण हैं जबकि तीर्थंकर की मूर्तियाँ बुद्ध की मूर्तियों से पहले ही बननी प्रारंभ हो गई थीं। मौर्यकालीन कुछ नग्न जिनमूर्तियाँ लोहानीपुर (पटना, बिहार) से प्राप्त भी हुई हैं। उदयगिरि (उड़ीसा) के

हाथीगुंफा अभिलेख में जिन-प्रतिमा का उल्लेख भी है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल तक जैनधर्म में मूर्तिपूजा का प्रचलन बहुत कम था और ज्ञान प्राप्त करने के लिये पूजा से अधिक तपस्या पर बल दिया जाता था। सभवतः इसीलिए पभोसा और उदयगिरि-खण्डगिरि में जैन श्रमणों के लेटने और तपस्या करने के लिए कम ऊँचाई की गुफाएँ खोदी गईं। इतना ही नहीं, उनकी गर्भशालाओं में शयन हेतु चौकियाँ भी नहीं काटी गईं हैं जबकि समसामयिक बौद्ध विहारों में चतुश्शाल आँगन बनाकर उनके तीन तरफ छोटी-छोटी कोठरियाँ बनाई गई हैं और बौद्ध भिक्षुओं के सोने-बैठने के लिए उनमें चौकियाँ काटी गई हैं। पभोसा में इसकी पूर्ति फुट भर चौड़ी आसन्दी बनाकर और उदयगिरि-खण्डगिरि में फर्श को ढालवाँ करके की गई है। उदयगिरि की बाघगुंफा और सर्पगुंफा में रहकर तपस्या करने वाले श्रमण तो महान् साधक रहे होंगे। संभवतः बाघगुंफा की परंपरा में ही तमिलनाडु में पल्लवकालीन यालिमंडपों का निर्माण हुआ।

भारत में सर्वप्रथम मौर्य सम्राट अशोक और उसके पौत्र दशरथ ने (ईसा पूर्व तीसरी शती) बिहार की बराबर और नागार्जुनी की पहाड़ियों में आजीवक भिक्षुओं के लिए गुफाएँ खुदवाईं। इसी समय राजगृह (बिहार) में दो एककक्ष्यीय जैन गुफाएँ भी खोदी गईं जिनमें तत्कालीन गुफा-स्थापत्य की लगभग सभी विशेषतायें–पहाड़ी के समानान्तर विन्यास, सलामीदार द्वारशाखाएँ, थोड़ा गोलाकार वितान और चमकदार प्रभा–मौजूद हैं लेकिन खिड़कियों का कटाव इनकी अपनी विशेषता है। राजगृह के बाद संभवतः पभोसा (इलाहाबाद, उ०प्र०) की जैन गुफा खोदी गई। एककक्ष्यीय इस गुफा की छत नीची है और उसमें उठने-बैठने के लिए आसन्दी बनाई गई है। ये दोनों विशेषताएँ उड़ीसा की जैन गुफाओं (प्रथम सदी ईसा पूर्व) के आवश्यक अंग हैं। उपर्युक्त तीनों गुफाएँ बिलकुल सादी और सामान्य आकार-प्रकार की हैं। फिर भी इनसे जैन गुफाओं के प्रारम्भिक स्वरूप का पता चल जाता है। लेकिन इनके कुछ ही समय बाद उड़ीसा की उदयगिरि-खण्डगिरि की पहाड़ियों में जैन गुफाओं की एक लंबी शृंखला खोदी गई जिनके वास्तु और शिल्प में काफी विकास दिखाई देता है।

उड़ीसा की जैन गुफाओं का कटाव पहाड़ी के समानान्तर न कर गहराई (longitudinal) में किया गया है। पूर्ववर्ती गुफाओं की तरह यहाँ भी एककक्ष्यीय गुफाएँ (यथा उदयगिरि की गुफा संख्या ३) खोदी गईं परन्तु उनके एकल द्वार और मुहार पर अलंकरण बनाये गये हैं और ऊपरी तरफ एक गहरी पट्टी काटी गई है ताकि वर्षा के पानी के बहाव को तोड़ा जा सके। परन्तु इस प्रकार की गुफाओं की संख्या बहुत कम है। अधिकांश गुफाओं में कई गर्भशालाएँ हैं और उनमें एकाधिक द्वार (एककक्ष्यीय गुफा में भी) बनाये गये हैं। इसके अतिरिक्त इनके सामने एक पंक्ति

में स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ (pilaster) खड़े कर मुखमण्डप की रचना की गई है जिससे वे अधिक भव्य, विशाल और उपयोगी सिद्ध हुईं। मुखमण्डप को और उपयोगी बनाने के लिए उसमें उठने-बैठने के लिये आसन्दी और सामान रखने के लिये ताखे बनाये गये। कुछ गुफाओं (यथा उदयगिरि की गुफा संख्या १२) के मुखमण्डप उपशाला जैसे हैं क्योंकि उनमें स्तंभ नहीं खड़े किये गये हैं। कुछ गुफाओं (उदयगिरि की गुफा संख्या १, ९ और १०; खण्डगिरि की गुफा संख्या ३) में मुखमण्डपयुक्त गर्भशालाओं के सामने खुला आँगन है। गर्भशालाओं से युक्त चतुश्शाल आँगन पश्चिम भारत के बौद्ध विहारों में भी बनाये गये हैं परन्तु वे खुला न होकर बन्द हैं जिससे उनमें हवा और प्रकाश पर्याप्त मात्रा में नहीं पहुँच पाता है। उड़ीसा में पहली बार दोमंजिली गुफाएँ (उदयगिरि की गुफा संख्या १, ४, ७ और ९; खण्डगिरि की गुफा संख्या ५) खोदी गईं। संभवत: इन्हीं से अनुप्राणित होकर एलोरा में दोखण्डी गुफाओं की रचना हुई जिनमें वहाँ की दो जैन गुफाएँ (संख्या ३२ व ३३) शामिल हैं। इनमें उदयगिरि की गुफा संख्या ४ और ७ और खण्डगिरि की गुफा संख्या ५ का विन्यास एक के ऊपर एक किया गया है लेकिन शेष दो गुफाओं को एक दूसरे के ठीक ऊपर न बनाकर उनके ऊपरी खण्ड को थोड़ा पीछे की ओर हटाकर बनाया गया है जिससे वहाँ एक खुली हुई छत तैयार हो गई है। गुफा संख्या ९ की खुली छत को वेदिका से घेर भी दिया गया है। इन खुली छतों का उपयोग किसी आयोजन के समय लोगों के बैठने के लिये किया जाता रहा होगा। इस प्रकार के खुले मंच केवल उड़ीसा में ही प्राप्त हुये हैं।

मुखमण्डप के स्तंभों के अधिष्ठान चौकोर एवं सादे हैं अथवा उनमें घटते क्रम से चौकोर चौकियाँ बनाई गई हैं जैसा हम कार्ले आदि के बौद्ध चैत्यगृहों में पाते हैं। इनकी यष्टि ऊपर-नीचे चौकोर और बीच में अठपहल है परन्तु इनके मिलन बिन्दुओं के कोनों को कोरकर गोलाकार कर दिया गया है जो कि इनकी अपनी विशेषता है। मुखमंडप के भित्तिस्तंभों के अधिष्ठान और यष्टि स्तंभों जैसे ही हैं परन्तु इनके सम्मुखीन पटल पर उच्च उभार के साथ प्राय: रक्षापुरुषों या राजपुरुषों की मूर्तियाँ खड़ी की गई हैं जो खड्ग, बरछा या दण्ड धारण किये हुये हैं। उदयगिरि की गुफा संख्या १ में एक जगह उदीच्यवेश में कुन्तधारी कोई शक पुरुष खड़ा है। इसी गुफा में एक जगह सिंह पर सवार कोई पुरुष है और एक अंन्य जगह वृषभ पर सवार कोई स्त्री है। उदयगिरि की गुफा संख्या ५ में रक्षापुरुषों के स्थान पर स्त्री-पुरुष खड़े हैं जैसा पश्चिम भारत के बौद्ध चैत्यगृहों में प्राय: देखा जाता है। मुखमण्डप के स्तंभों और भित्तिस्तंभों के शीर्षक अलंकृत और सादे दोनों प्रकार के हैं। कुछ स्तंभों के शीर्षकों के नीचे मेधियुक्त (corbelled) चौकी और औंधा पद्म बने हैं। अलंकृत शीर्षकों के ब्रैकेटों पर एकल वृषभ, अश्व, गज और सिंह; युगल अश्व;

तीन गज; अश्वारोही और गजारोही; पशुसंघाट यथा वृषभसंघाट, सिंहसंघाट आदि; सिंह से युद्धरत सशस्त्र मानव; भंगिमामय स्त्रीमूर्ति, पुष्पचंगेरी या टोंटीदार जलपात्र लिये हुये खड़ी स्त्रीमूर्ति या हाथ जोड़े हुये युगल स्त्रीमूर्तियाँ; नर्तक और वादक; पद्मपुष्प व मुचकुन्द; भारवाहक गण, माला या माल्यचंगेरी लिये हुये विद्याधर, माला लिये हुये सपक्ष किन्नर, कुंभाण्ड और शालभंजिका उत्कीर्ण हैं। इन ब्रैकेट मूर्तियों की अपनी विशेषता है क्योंकि इनके कर्णप्रदेशों में छेद किया गया है। छेद के कारण अधिकांश ब्रैकेट नष्ट भी हो गये हैं। इन ब्रैकेट मूर्तियों पर सांची की तोरणशालभंजिका की मूर्तियों का कुछ प्रभाव अवश्य दिखाई देता है। स्तंभों और भित्तिस्तंभों के सिरे भी प्रायः अलंकृत हैं। इन पर मकरसंघाट, मृगसंघाट, सपक्ष पशु, पक्षीमुख से युक्त सपक्ष पशुसंघाट, पक्षीमुख से युक्त सपक्ष पशु, मानवमुखयुक्त सपक्ष पशु, पक्षीमुख से युक्त पशुसंघाट, स्त्रीमूर्ति और गजमुण्ड पकड़े हुये पुरुष, नागपाश में बंधा गज, काल्पनिक जानवर (धड़ मकर का और मुख एकशृंगी जानवर का; धड़ पशु का और मुख पक्षी का), मत्स्य, पक्षी, पुष्प, पूर्णघट अदि बनाये गये हैं। वर्षा के पानी से बचाव के लिये गुफाओं के मुहार पर अब वक्राकार (curved) छाद्य भी बनाये जाने लगे।

गर्भशालाओं के द्वार संकरे और सादे हैं। उनकी द्वारशाखाएँ अन्दर की ओर थोड़ी झुकी हुई हैं जिससे प्रतीत होता है कि शैलवर्धकी काष्ठकर्म की परंपरा से अभी भी मुक्त नहीं हो सका था। लेकिन द्वारों के पार्श्व में बनाये गये भित्तिस्तंभ, भित्तिस्तंभों की टेक लिये अर्धवृत्ताकार कमानचे और उनके गोलम्बर तथा कमानचों के बीच के भित्तिभाग भाँति-भाँति के अलंकरण-अभिप्रायों से सज्जित हैं। भित्तिस्तंभों की यष्टि सादी और अलंकृत दोनों प्रकार की है और उसका निचला भाग प्रायः चौकोर चौकियों के क्रमशः घटते हुये पीठ पर पधराये गये कुंभ में प्रविष्ट है। अलंकृत शीर्षकों पर एकल वृषभ; सपक्ष सिंह, अश्व, मृग आदि; युगल वृषभ, गज और सिंह; वृषभ, अश्व, गज, मृग और सिंह के संघाट; सपक्ष अश्व, वृषभ, गज और सिंह के संघाट और एकशृंगी सपक्ष पशुसंघाट हैं।

गर्भशालाओं के द्वारों के ऊपर बनाये गये मेहराब या कमानचे अर्धवृत्ताकार हैं जबकि समसामयिक पश्चिम भारत की बौद्ध गुफाओं में अश्वनाल की तरह के कमानचे बनाये गये हैं। कमानचे प्रायः अलंकृत हैं। उन पर मकर, गज, वृषभ अथवा मृग के मुख से निर्गत भाँति-भाँति की लतर, फूल, पत्ते, हंस-श्रेणी और गज, वृषभ एवं सिंह का पीछा करते हुये बालकों का अंकन है। कमानचों की बाह्यरेखा को चोटी पर नोकीला कर दिया गया है या उस पर त्रिरत्न, श्रीवत्स, पद्म अथवा सर्प बनाया गया है जबकि आतंरिक भाग में कई जगह धन्नियों के सिरे काटे गये हैं जो कि काष्ठकर्म की अनुकृति है। इसी तरह धन्नियों का कटाव बौद्ध चैत्यमुखों में भी मिलता

है। कमानचों के आंतरिक गोलम्बर प्राय: सादे है परन्तु कुछ जगहों पर मुचकुंद, फूलमाला, पद्मपुष्प, गज, सूर्यदेव, गजलक्ष्मी अथवा केवलवृक्ष की पूजा का अंकन है। गजलक्ष्मी कमल के ऊपर खड़ी हैं और दो गज उनका अभिषेक कर रहे हैं जबकि सूर्यदेव चार घोड़ों के रथ में अपनी दो पत्नियों के साथ बैठे हैं। गजलक्ष्मी और सूर्यदेव की लगभग ऐसी ही मूर्तियाँ बोधगया के बोधिमंड की वेदिका पर भी पाई गई हैं जो शुंगकालीन हैं।

कमानचों के बीच के भित्तिभाग के निचले हिस्से पर दो या तीन सूचियों से युक्त वेदिका का कटाव है। वेदिका को थोड़ा निर्गत कर उसके नीचे यक्ष, यक्षी और वामन गणों की ब्रैकेट मूर्तियाँ लगाई गई हैं। आमतौर पर वेदिका सादी है परन्तु कहीं-कहीं उस पर पद्म के फुल्ले बनाये गये हैं। वेदिका का कटाव पश्चिम भारत के हीनयान कालीन चैत्यगृहों के मुहार पर भी है। पद्मसज्जित वेदिका भरहुत और मथुरा में भी बनाई गई है।

वेदिका के ऊपर के भित्तिभाग पर स्त्री-हरण का दृश्य, दुष्यन्त-शकुन्तला की कथा, उदयन-वासवदत्ता की कथा, बिगड़ी हाथियों द्वारा भीड़ को दौड़ा लेने का दृश्य, मानव दम्पती, वादक और नर्तक, स्त्री-पुरुष, आरोहक, राजा और उसके अनुचर, विद्याधर, मिथन-युगल, बोधिवृक्ष-पूजा का दृश्य आदि अंकित हैं। इनमें अधिकांश चित्रण रानीगुंफा में किये गये हैं। स्त्री-हरण का दृश्य तो रानीगुंफा और गणेशगुंफा में एक जैसा है। दुष्यन्त-शकुन्तला और उदयन-वासवदत्ता की लोकप्रचलित कथाएँ गुफाओं में सर्वप्रथम यहीं उत्कीर्ण हैं। रानीगुंफा में एक जगह वानरों द्वारा हाथियों के बन्धन का दृश्य है। हाथी और बन्दरों के बीच छेड़-छाड़ की यह कोई पुरानी लोककथा थी जिसका अंकन भरहुत की वेदिका पर भी हुआ है।

खण्डगिरि की अनन्तगुंफा में कमानचों और उपर्युक्त दृश्यों के ऊपर वेदिका और कपिशीर्षक एवं त्रिकोण पद्म का क्रम से अंकन है। यहाँ पर वेदिका का कटाव नीचे तरफ न कर ऊपर तरफ किया गया है जो कि आश्चर्यजनक है। कपिशीर्षक और त्रिकोण पद्म का कटाव केवल इसी गुफा में है जबकि यह अभिप्राय उस समय काफी लोकप्रिय था। भरहुत की वेदिका के उष्णीष के संमुख भाग पर इसे सुन्दर ढंग से दर्शाया गया है।

उड़ीसा की गुफाओं के दो सदी बाद यानी दूसरी शती ईसवी में जूनागढ़ की जैन गुफाएँ खोदी गईं। ये सभी विहार हैं। इनमें एक, दो अथवा तीन गर्भशालाएँ और उनके सामने स्तंभयुक्त मुखमण्डप है। इस प्रकार इन गुफाओं का सामान्य विन्यास उड़ीसा की गुफाओं जैसा ही है परन्तु जूनागढ़ में दोनों कक्ष्यों को संकीर्ण अन्तराल से जोड़ दिया गया है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत गुफाएँ बिलकुल सादी हैं, इनकी छत ऊँची है, इनके मुखमण्डप में आसन्दी नहीं बनाई गई है और गर्भशालाओं की फर्श

ढालवाँ न होकर समतल है। अलंकरण के नाम पर उनमें कुछ जैन मांगलिक चिन्ह यथा श्रीवत्स, भद्रासन, मीनयुगल आदि ही उत्कीर्ण हैं। जूनागढ़ की गुफाओं की एक विशेषता यह है कि उनके मुखमण्डप के मुहार पर चैत्यगवाक्ष का अंकन है जैसा पश्चिम भारत की बौद्ध गुफाओं में मिलता है। बौद्ध चैत्यगृहों की तरह जूनागढ़ की भी एक गुफा वृत्तायत प्रकार की है परन्तु न तो उसमें स्तंभों की कंठाहार माला है और न ही स्तूप। इस प्रकार जूनागढ़ की इन जैन गुफाओं के पश्चिम भारत में स्थित होने से इन पर वहाँ की बौद्ध गुफाओं का कुछ प्रभाव तो है लेकिन इनका सामान्य विन्यास उड़ीसा की जैन गुफाओं जैसा ही है।

प्रथम वर्ग की गुफाओं के उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि भारत में जैन गुफाएँ बिलकुल प्रारंभिक काल से ही खोदी गईं और उनकी स्वतंत्र परम्परा थी क्योंकि उन पर समकालीन बौद्ध गुफाओं का अत्यल्प प्रभाव दिखाई देता है। इस वर्ग की सभी गुफाएँ जैन श्रमणों के रहने और तपस्या करने के लिये बनाई गई थीं। इसीलिए उनमें चैत्यगृह या पूजागृह का अभाव है। इसके विपरीत तत्कालीन बौद्ध गुफाओं में भिक्षुओं के रहने के लिए विहार और पूजा के लिए चैत्यगृह ये दोनों ही बनाये गये।

द्वितीय वर्ग की जैन गुफाएँ :

द्वितीय वर्ग की अधिकांश जैन गुफाएँ पश्चिम और दक्षिण भारत में खोदी गईं। इस वर्ग की एक गुफा उदयगिरि (म०प्र०) में और एक बड़ा समूह ग्वालियर में है। इन गुफाओं की मुख्य विशेषता यह है कि इनमें जैन तीर्थंकरों की नग्न मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं जिससे वे विहार और पूजागृह इन दोनों ही आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं। इसी काल में उड़ीसा की खण्डगिरि की कई प्राचीन जैन गुफाओं में तीर्थंकरों और उनकी शासनदेवियों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण कर उन्हें पूजागृह बना दिया गया।

ऊपर हम देख चुके हैं कि प्रथम वर्ग की जैन गुफाओं की अपनी स्वतंत्र परंपरा थी और उन पर बौद्ध गुफाओं का नाम मात्र का प्रभाव था। परन्तु द्वितीय वर्ग की जैन गुफाओं पर बौद्ध गुफाओं का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। धाराशिव (महाराष्ट्र) की जैन गुफाएँ तो बिलकुल बौद्ध विहारों की तरह बनाई गई हैं। इस वर्ग की जैन गुफाओं पर समसामयिक हिन्दू गुफाओं का भी स्फुट प्रभाव पड़ा। कुछ-एक जैन गुफाएँ (यथा अंकाई-तंकाई, महाराष्ट्र) तो चिनाईकृत हिन्दू मंदिरों की लगभग अनुकृति हैं। एलोरा का छोटा कैलाश नामक जैन गुफा तो वहाँ के बृहद् कैलाशनाथ मंदिर का ही छोटा रूप है।

कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद और गुप्त साम्राज्य के उदय के बीच का भारतीय इतिहास अन्धकारमय है। इसका समर्थन भारतीय गुफा स्थापत्य से भी होता

है क्योंकि तीसरी-चौथी सदी ईसवी में गुफाओं की खुदाई बिलकुल बन्द हो गई थी। लेकिन गुप्त-वाकाटक काल में जब राजनैतिक स्थिरता कायम हो गई तब गुफा खुदवाने का काम पुनः हाथ में लिया गया और सभी धर्मावलम्बियों ने छोटी-बड़ी अनेक सुन्दर गुफाएँ खुदवाईं। इस कार्य में जैनों ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

इस वर्ग की अब तक की प्राचीनतम जैन गुफा उदयगिरि (विदिसा जि०, म० प्र०) की पहाड़ी में उत्कीर्ण गुफा संख्या २० है। पाँच गर्भवाली यह गुफा यहाँ की सबसे बड़ी गुफा है और इसके दो मध्य गर्भशालाओं में तीर्थंकर की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। गुफा में ४२६ ईसवी का एक अभिलेख है जिससे इसकी निश्चित तिथि ज्ञात हो जाती है। तीर्थंकर की मूर्तियों के अतिरिक्त यह गुफा बिलकुल सादी और अनाकर्षक है और इसमें वास्तु संबंधी कोई उल्लेखनीय बात नहीं है। लेकिन सातवीं सदी ईसवी के मध्य में बनी धाराशिव की जैन गुफाएँ वास्तु की दृष्टि से काफी विकसित हैं।

धाराशिव (शोलापुर जि०, महाराष्ट्र) की गुफाओं के सामने एक आयताकार मुखमण्डप है जिसकी सम्मुखीन छत भारी-भरकम चौकोर स्तंभों और दो अर्धस्तंभों पर टिकी हुई है। मुखमण्डप के पृष्ठ भाग में कई द्वार हैं जिनसे होकर आंतरिक मण्डप में प्रवेश किया जाता है। मण्डप का विन्यास लगभग वर्गाकार बन्द आँगन की तरह है जिसकी पृष्ठभित्ति के मध्य में गर्भगृह और उसके अगल-बगल एवं दोनों पार्श्वों में छोटी-छोटी गर्भशालाएँ या कोठरियाँ बनाई गई हैं। विशाल मण्डप की छत को रोकने के लिए एक या दो वर्गाकार घेरों में मुखमण्डप जैसे ही स्तंभ खड़े किये गये हैं। कुछ एक गुफाओं में सामने तरफ एक खुला प्रांगण भी बनाया गया है। गर्भगृह में तीर्थंकर पार्श्वनाथ की पद्मासनस्थ मूर्ति सुन्दर परिकर के साथ उत्कीर्ण है। इस प्रकार इन जैन गुफाओं का विन्यास तत्कालीन महायान बौद्ध विहारों की तरह ही है। यदि इनमें से तीर्थंकर की और महायान बौद्ध विहारों में से बुद्ध की मूर्ति निकाल दी जाय तो दोनों संप्रदायों की गुफाओं में कोई अन्तर नहीं रह जायेगा।

सातवीं सदी ईसवी में ही बनी चालुक्यकालीन बादामी की जैन गुफा में भी मुखमण्डप, मण्डप और गर्भगृह एक सीध में बनाये गये हैं परन्तु उसके दोनों मण्डप आयताकार हैं और उन्हें अलग करने वाली स्तभशृंखला के दोनों छोर पर चट्टानी पर्दा बनाया गया है। इसका गर्भगृह थोड़ा ऊँचाई पर है और उसमें जाने के लिए चन्द्रशिलासहित चार पद का सोपान है। इसके मण्डपों के स्तंभ और गर्भगृह का पंचशाख द्वार काफी अलंकृत हैं। इसके मण्डपों की भित्तियों एवं स्तभों पर तीर्थंकरों की अनेक मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। मुखमण्डप के पार्श्व छोरों पर पहली बार बाहुबली और पार्श्वनाथ की आदमकद कायोत्सर्ग मूर्तियाँ अनुचरों के साथ उत्कीर्ण की गईं। पार्श्वनाथ और बाहुबली की यह जोड़ी बाद में काफी लोकप्रिय हुई। गुफा के मुहार पर निकाला गया अर्धगोलाकार छाद्य बड़े आकार का है और उसके आंतरिक भाग

में धन्नियों का कटाव है जो कि काष्ठकर्म की याद ताजा कर देता है। लेकिन इसमें श्रमणों के रहने के लिये कोठरियाँ नहीं बनाई गई हैं जिससे ज्ञात होता है कि अब केवल पूजागृह ही बनाये जाते थे। यहाँ के गर्भगृह में तीर्थंकर महावीर की प्रतिमा है जिससे ज्ञात होता है कि महावीर की पूजा अब लोकप्रिय होने लगी थी। गर्भगृह की द्वारशाखाओं के निचले भाग पर द्वारपाल भी खड़े किये जाने लगे।

बादामी की गुफा के कुछ समय बाद बनी ऐहोली की जैन गुफा का सामान्य विन्यास बादामी जैसा ही है परन्तु यह गुफा उससे बड़ी है, इसके स्तंभ अपेक्षाकृत सादे हैं, इसका आंतरिक मण्डप लगभग वर्गाकार है और इसके मण्डप के दोनों पार्श्वों एवं पृष्ठ भाग में गर्भशालाएँ बनाकर उनमें तीर्थंकर महावीर की मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गई हैं। गर्भशालाओं की एक विशेषता यह है कि इनके सामने चट्टानी भित्ति न बनाकर स्तंभ खड़ किये गये हैं। इसीलिए द्वारपाल पृष्ठगर्भगृह की पार्श्वभित्तियों पर बनाये गये हैं। दोनों द्वारपाल विशालकाय हैं और वामनाकार गणों के साथ उत्कीर्ण हैं। इसी तरह के द्वारपाल एलीफेंटा की गुफा में भी बनाये गये हैं। मुखमण्डप के पार्श्व छोरों पर यहाँ भी बाहुबली और पार्श्वनाथ की आदमकद प्रतिमाएँ उत्कीर्ण की गई हैं परन्तु पार्श्वनाथ के साथ उनके यक्ष धरणेन्द्र और यक्षी पद्मावती भी प्रदर्शित हैं और बाहुबली के साथ उनकी दो बहनें ब्राह्मी और सुन्दरी हैं जो कि एक दुर्लभ कृति है। गुफा के वितान में विविध प्रकार के अलंकरण-अभिप्राय भी बनाये गये हैं। इस प्रकार प्रस्तुत गुफा बादामी की गुफा से थोड़ा विकसित है।

बादामी और ऐहोली की चालुक्यकालीन उपर्युक्त गुफाओं के बाद दकन में जैन गुफाओं का कटाव राष्ट्रकूटों के समय में हुआ। इस काल में एलोरा शैलकृत गुफाओं का प्रधान केन्द्र था। यहाँ पर बौद्धों, हिन्दुओं और जैनों ने क्रमशः गुफाएँ खुदवाईं। हिन्दू और जैन गुफाएँ तो राष्ट्रकूट काल में ही बनीं। यहाँ पर कुल पाँच जैन गुफाएँ (संख्या ३० से ३४) हैं और इन पर वहाँ की हिन्दू गुफाओं का सर्वाधिक प्रभाव है। छोटा कैलाश (गुफा संख्या ३०) तो वहाँ के प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर (गुफा संख्या १६) की अनुकृति है।

राष्ट्रकूट काल से पहले भारतीय गुफाओं का कटाव सम्मुख भाग से अन्दर की ओर (Cut-in method) सुरंग की तरह किया जाता था परन्तु इस काल से उन्हें ऊपर से नीचे की ओर चारों ओर से कोर कर (Cut-out method) भी बनाया जाने लगा। एलोरा का छोटा कैलाश नामक जैन गुफा (संख्या ३०) इसी तरह का एकाश्मक मंदिर है। इन्द्रसभा नामक गुफा संख्या ३२ के प्रांगण में स्थित सर्वतोभद्रविमान को भी चारों तरफ से काट कर बनाया गया है। इन एकाश्मक जैन गुफाओं पर समसामयिक चिनाई के मंदिरों का अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है।

छोटा कैलाश द्राविड शैली का एकाश्मक विमान है। इसमें त्रितल विमान यानी

गर्भगृह, अंतराल और तीन चतुष्कियों से युक्त गूढमण्डप है। सभी एक आयताकार प्रांगण में निवेशित हैं जिसमें प्रवेश के लिए एक अपूर्ण प्रतोली बनाई गई है। इसके कुछ भाग अपूर्ण हैं और उन्हें बिना तराशे छोड़ दिया गया है। लेकिन जो भाग पूर्ण हैं उनमें वास्तु और शिल्प का सुन्दर समन्वय है और वहाँ के प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर के कुछ दोषपूर्ण अवयवों यथा सेतु और उपपीठ को निकाल दिया गया है। विमान के ऊपरी तलों पर प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर की तरह ही अर्पित शैली (Applique) के कर्णकूट एवं शालाशिखर तो बनाये गये हैं परन्तु वे नाटे कद के हैं। शालाशिखरों के गाढ़ में मदल बनाये गये हैं जैसा महाबलीपुरम के भीमरथ (सातवीं सदी ईसवी) में पाया जाता है। यहाँ पर गोम्मटेश्वर और पार्श्वनाथ की जोड़ी गर्भगृह द्वार के अगल-बगल है। प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर के गूढमण्डप की चतुष्कियों के पंचशाख द्वार के विपरीत यहाँ पर उनके द्वार त्रिशाख प्रकार के ही हैं परन्तु गर्भगृह द्वार यहाँ भी पंचशाख प्रकार का है। अब स्तंभ भाँति-भाँति के बनाये जाने लगे। गूढमण्डप में खड़े किये गये सोलह स्तंभ चौकोर, अठपहल और गोलाकर इन तीनों शैलियों के हैं और उन पर तरंग और चित्रशैली की पोतिकाएँ लगाई गई हैं। गूढमण्डप की आंतरिक भित्ति पर जिनों की अनेक मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं जिससे प्रतीत होता है कि इस समय तक जिनपूजा काफी लोकप्रिय हो चुकी थी। चालुक्यकालीन गुफाओं और प्रसिद्ध कैलाशनाथ मंदिर की तरह इस गुफा के गर्भगृह की फर्श गूढमण्डप से ऊँची है और उसमें तीन पद के सोपान द्वारा प्रवेश किया जाता है।

एलोरा की गुफा संख्या ३१ एक छोटी जैन गुफा है। इसमें केवल मुखमण्डप और गर्भगृह हैं। मण्डप की पार्श्वभित्तियों पर परंपरागत पार्श्वनाथ और बाहुबली की कायोत्सर्ग मूर्तियाँ तथा गर्भगृह में महावीर की पद्मासनस्थ मूर्ति है। इस गुफा की सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि इसके गर्भगृह के द्वार के एक तरफ गजारूढ़ सर्वानुभूति की और दूसरी तरफ सिंहवाहिनी अंबिका की मूर्ति उत्कीर्ण है। जैन देवमण्डल में इनकी जोड़ी बाद में काफी लोकप्रिय हुई।

एलोरा की इन्द्रसभा (गुफा संख्या ३२) और जगन्नाथसभा (गुफा संख्या ३३) नामक जैन गुफाएँ दोमंजिली हैं। दोमंजिली जैन गुफाओं का निर्माण उड़ीसा के उदयगिरि-खण्डगिरि की जैन गुफाओं में ही प्रारंभ हो गया था। बहुमंजिली गुफाएँ अजंता (संख्या ६) और एलोरा (संख्या ११, १२ व १५) में भी खोदी गईं। एलोरा के प्रसिद्ध कैलाशलाथ मंदिर का गोपुरद्वार और नन्दिमण्डप भी दोमंजिला है। इसी क्रम में जैनों ने भी एलोरा में उपर्युक्त दो गुफाएँ खुदवाईं।

इन्द्रसभा का सम्मुखीन प्रांगण और प्राकार वहाँ के कैलाशनाथ (संख्या १६) और दशावतार (संख्या १५) का मिला-जुला रूप है। जहाँ कपिशीर्षक से युक्त प्राकार और शालाशिखर से मंडित गोपुरद्वार कैलाशनाथ जैसा है वहीं प्रांगण के बीच में

बना सर्वतोभद्रविमान दशावतार के आस्थानमण्डप की जगह ले लिया है। लेकिन प्राकार की ऊँचाई बहुत कम है और गोपुरद्वार बहुत छोटा है। कैलाशनाथ मंदिर के प्रांगण में दो मानस्तंभ और दो गज हैं जबकि प्रस्तुत गुफा में एक ही मानस्तंभ और एक ही गज सर्वतोभद्रविमान के पार्श्व में है। प्रांगण के प्रत्येक पार्श्व में कई गुफाएँ खोदी गई हैं। इनमें बाईं ओर की एक गुफा बड़े आकार की है और उसमें गर्भगृह एवं मण्डप बनाये गये हैं। गर्भगृह में महावीर आसीन हैं और उसके द्वार के अगल-बगल सर्वानुभूति और अंबिका अपने वाहनों पर सवार हैं जबकि मण्डप में पार्श्वनाथ और बाहुबली की परंपरागत मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गई हैं। प्रांगण के पृष्ठ भाग में दोमंजिली इस गुफा का मुहार है जिस पर दो आकर्षक शोभापट्टियाँ बनाई गईं हैं। निचली शोभापट्टी पर गज और सिंह का क्रम से अंकन है जबकि ऊपरी पर जिनमूर्तियों से युक्त भाँति-भाँति के अल्पविमान अंकित हैं। निचली मंजिल में दो गर्भशालाओं से युक्त मुखमण्डप, एक अपूर्ण मण्डप, अन्तराल और गर्भगृह हैं। गर्भशालाओं में महावीर, उनके द्वार के अगल-बगल अंबिका एवं सर्वानुभूति और उनके एक ओर के संमुखीन मंडप में पार्श्वनाथ और गोम्मटेश्वर की ही मूर्तियाँ हैं परन्तु दूसरी ओर के सम्मुखीन मण्डप में एक तरफ पार्श्वनाथ एवं महावीर और दूसरी तरफ महावीर एवं गोम्मटेश्वर की मूर्तियाँ बनाई गई हैं। प्रस्तुत चित्रण से महावीर की लोकप्रियता का स्पष्ट संकेत मिलता है क्योंकि उन्हें पार्श्वनाथ और गोम्मटेश्वर दोनों के साथ दिखलाया गया है।

इन्द्रसभा की ऊपरी मंजिल में भी मुखमण्डप, मण्डप और गर्भगृह हैं परन्तु अन्तराल नहीं बनाया गया है। वास्तु एवं शिल्प की दृष्टि से ऊपरी खण्ड अपनी पूर्णता को प्राप्त है। मुखमण्डप के सम्मुखीन भाग को यहाँ पर वेदिका-कक्षासन की नाटी दिवाल से घेर दिया गया है जबकि उड़ीसा के उदयगिरि की गुफा संख्या ९ में केवल वेदिका का जंगला खड़ा किया गया है। इसके मंडप के स्तंभ चार प्रकार के हैं और उनकी गणना एलोरा के सुन्दरतम स्तंभों में की जाती है। मण्डप की दीवाल को तीर्थंकर मूर्तियों से भर दिया गया है जबकि मध्य भाग में प्रतिमा-सर्वतोभद्रिका है। सर्वतोभद्रप्रतिमा के ठीक ऊपरी छत में पद्म उत्कीर्ण है जो अति शोभायमान है। गर्भगृह का चतुश्शाख द्वार काफी अलंकृत है लेकिन द्वार के अगल-बगल यहाँ पर द्वारपाल खड़े हैं और द्वारपालों के बाहरी तरफ पार्श्वनाथ और गोम्मटेश्वर को दर्शाया गया है। गोम्मटेश्वर की यह मूर्ति एलोरा में सर्वोत्तम है। गर्भगृह में यहाँ भी महावीर ही आसीन हैं। ऊपरी मंजिल में प्रांगण के प्रत्येक पार्श्व में भी एक गुफा है जिसके गर्भगृह में महावीर और मण्डप में पार्श्वनाथ एंव गोम्मटेश्वर के साथ महावीर की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इस गुफा के ऊपरी मंजिल में चित्र के भी अवशेष प्राप्त हुये हैं।

दोमंजिली जगन्नाथसभा का विन्यास लगभग इन्द्रसभा जैसा ही है परन्तु इसका आकार उससे कुछ छोटा है, इसके दोनों खण्ड पूर्णरूपेण काटे व तराशे गये हैं और इसके प्रांगण में गोपुरद्वार एवं प्राकार न होने से वह सामने तरफ बिलकुल खुला हुआ है। प्रांगण के बाईं ओर यहाँ भी गुफा खोदी गई है जिसमें सामने तरफ मुखमण्डप, मध्य में चार चौकोर एवं अलंकृत स्तंभों से युक्त मण्डप और पृष्ठ भाग में गर्भगृह ये तीनों बनाये गये हैं। गर्भगृह में महावीर, मण्डप की पार्श्वभित्तियों पर पार्श्वनाथ और गोम्मटेश्वर और मुखमण्डप के पार्श्वछोरों पर सर्वानुभूति और अम्बिका हैं। सर्वानुभूति एवं अम्बिका को आमतौर पर गर्भगृह के अगल-बगल दर्शाया जाता है परन्तु यहाँ पर उन्हें मुखमण्डप में स्थान दिया गया है। इन मूर्तियों के ऊपर सुन्दर तोरण भी बनाये गये हैं। प्रांगण के दाहिनी तरफ भी गुफा खोदी गई है परन्तु वह आकार में छोटी एवं स्तंभविहीन है लेकिन परंपरागत मूर्तियाँ यहाँ भी उत्कीर्ण हैं। प्रांगण के पृष्ठ भाग में मुखमण्डप, चार चौकोर एवं अत्यंत अलंकृत स्तंभों से युक्त मण्डप, अंतराल और गर्भगृह हैं और विभिन्न कक्ष्यों में मूर्तियों का समायोजन उपर्युक्त बाईं ओर के प्रांगण की गुफा जैसा ही है। मण्डप के स्तंभ तीन प्रकार के हैं और वे इन्द्रसभा के ऊपरी मंजिल के स्तंभों की तरह ही अलंकृत हैं। यहाँ पर अंतराल के सामने सुंदर तोरण भी बनाया गया है। ऊपरी मंजिल में बारह चौकोर एवं अलंकृत स्तंभों से युक्त आयताकार मण्डप है जिसके पृष्ठभाग में लगभग वर्गाकार गर्भगृह और सम्मुख भाग में वेदिका-कक्षासन की नाटी दीवाल है। इन्द्रसभा की तरह इस गुफा के मुहार पर भी दो शोभापट्टियाँ हैं परन्तु उनके अलंकरण में भिन्नता है। यहाँ की निचली शोभापट्टी पर गजों एवं मिथुनों का और ऊपरी पर चतुष्पदों का अंकन है। इसके आयताकार मण्डप के स्तंभों में उतनी विविधता नहीं है जितनी इन्द्रसभा में पाई जाती है क्योंकि यहाँ पर उनके केवल दो ही प्रकार मिलते हैं। मण्डप की पार्श्व एवं पृष्ठ भित्तियों पर यहाँ भी जिनों की अनेक मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। यहाँ पर सर्वानुभूति और अंबिका को गर्भगृह के अगल-बगल ही दर्शाया गया है। ऊपरी मंजिल का गर्भगृह द्वार काफी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि उस पर चौबीस तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं और द्वारशाखाओं के निचले भाग पर एक ओर मकरवाहिनी गंगा और दूसरी ओर कच्छपवाहिनी यमुना खड़ी है। नदी देवियों का जैन गुफा में अंकन निश्चितरूप से हिन्दू गुफाओं के प्रभाव को दर्शाता है।

एलोरा की गुफा संख्या ३४ एक छोटी गुफा है। इसमें खण्डित मुखमण्डप, मण्डप और गर्भगृह हैं। मण्डप में पार्श्वनाथ और गोम्मटेश्वर की और गर्भगृह में महावीर की परंपरागत मूर्ति है जबकि गर्भगृह द्वार के अगल-बगल सर्वानुभूति और अंबिका हैं। मण्डप में पहली बार जिनों की कई द्वितीर्थिक मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं।

एलोरा की समकालीन एक जैन गुफा पटना (खानदेश, महाराष्ट्र) में है जिसमें सामने तरफ आयताकार मुखमण्डप और पीछे लगभग वर्गाकार मण्डप है। मुखमण्डप

में खड़े किये गये दो चौकोर स्तंभ बिलकुल सादे हैं। मुखमण्डप के बाईं छोर पर एक कक्ष्य है जिसमें उठने-बैठने के लिए उड़ीसा की जैन गुफाओं की तरह आसन्दी बनाई गई है। मण्डप में भी दो ही स्तंभ हैं जिनमें से एक पर सर्वानुभूति की और दूसरे पर अंबिका की मूर्ति उत्कीर्ण है। इस पर एलोरा का स्पष्ट प्रभाव दीखता है। गुफा में स्वतंत्र गर्भगृह न बनाकर मण्डप की पृष्ठभित्ति पर ही पद्मासन जिन की मूर्ति अनुचरों के साथ उत्कीर्ण है। मण्डप में कई अन्य जिनमूर्तियाँ भी बनाई गई हैं। मण्डप के दाहिनी भित्ति पर तीन खाली कोष्ठ हैं जिनके अवलोकन से प्रतीत होता है कि अब अलग पत्थर की मूर्तियाँ बनाकर गुफाओं में स्थापित करने का रिवाज प्रारंभ हो गया था।

एलोरा के बाद भी दकन में जैन गुफाओं की खुदाई का क्रम जारी था। इनकी एक शृंखला अंकाई-तंकाई (नासिक, महाराष्ट्र) की पहाड़ियों में ११वीं-१२वीं सदी ईसवी में खोदी गई। यहाँ कुल सात गुफाएँ हैं जिनमें चार (संख्या १ से ४) सुरक्षित और शेष तीन खण्डित हैं। गुफा संख्या १ व २ दोमंजिली भी हैं। यहाँ की गुफाओं पर समसामयिक चिनाई के मंदिरों का अत्यधिक प्रभाव पड़ा है।

अंकाई-तंकाई की इन गुफाओं के सामने तरफ आयताकार मुखमण्डप, बीच में मण्डप और पीछे गर्भगृह बनाया गया है। गुफा संख्या २ व ३ में गर्भगृह के सामने अन्तराल भी बनाया गया है। मुखमण्डप की सम्मुखीन छत को रोकने के लिए दो चौकोर एवं सादे स्तंभ और दो अर्धस्तंभ खड़े किये गये हैं। गुफा संख्या २ व ३ में स्तंभ की जगह चट्टानी भित्ति खड़ी कर उसमें ज्यामितिक प्रकार की जाली काटी गई है। सामान्यतः मुखमण्डप खाली हैं लेकिन गुफा संख्या २ व ३ के मुखमण्डप के एक सिरे पर सर्वानुभूति की और दूसरे सिरे पर अंबिका की मूर्ति उत्कीर्ण है जैसा एलोरा की गुफाओं में प्रायः देखा जाता है। मण्डप वर्गाकार अथवा आयताकार है और उसमें दो या चार अलंकृत स्तंभ खड़े किये गये हैं। कुछ स्तंभशीर्षकों पर चतुर्भुजी भारपुत्रकों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। गुफा संख्या १ व ३ के मण्डप के मध्य वितान में तीन या चार संकेन्द्रित वृत्तों में पद्मपुष्प की पंखुड़ियाँ उत्कीर्ण हैं। गुफा संख्या ३ की दो मध्यवर्ती वृत्तों की पंखुड़ियों में क्रमशः नर्तकों, वादकों और देवी-देवताओं का अंकन है। गुफा संख्या ४ एक मात्र ऐसी गुफा है जिसके आयताकार मण्डप के संपूर्ण लंबाई वाले पृष्ठ भाग में आसन्दी काटी गई है। इस आसन्दी का उपयोग उठने-बैठने के लिये तो किया जाता ही था, यह एक पद के सोपान की आवश्यकता की पूर्ति भी करती थी क्योंकि इसका गर्भगृह थोड़ा ऊँचाई पर है। गर्भगृह में पीठ तो उत्कीर्ण हैं पर मूर्तियाँ नदारत हैं लेकिन एक गुफा में पद्मासनस्थ जिन की मूर्ति सुरक्षित है। गुफा संख्या ३ के अन्तराल में कायोत्सर्ग जिनों की दो आदमकद प्रतिमाएँ बनाई गई हैं। इसी प्रकार के मूर्तियुक्त खत्तक

समकालीन चिनाई के मंदिरों के अंतराल में भी बनाये गये हैं। गुफा संख्या १ व २ का ऊपरी मंजिल अनाकर्षक है। अंकाई-तंकाई की गुफाओं का सबसे आकर्षक भाग मण्डप और गर्भगृह का द्वार है जो अत्यन्त अलंकृत है और उसमें नौ शाखाएँ बनाई गई हैं। शाखाओं की दृष्टि से जैन गुफाओं में यह अधिकतम संख्या है। इसी प्रकार के द्वार समकालीन चिनाई के मंदिरों में भी पाये जाते हैं।

अंकाई-तंकाई की समकालीन चामर (नासिक, महाराष्ट्र) और भामेर (धुलिया, महाराष्ट्र) की भी जैन गुफाएँ है। चामर में दो एककक्ष्यीय गुफाएँ हैं जिनमें तीर्थंकरों और सर्वानुभूति एवं अंबिका की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। भामेर में कुल चार गुफाएँ हैं जिनमें एक एककक्ष्यीय विहार की तरह और दो भण्डारिका जैसी हैं जबकि चौथी में मुखमण्डप बनाकर उसके बाईं छोर पर एक गर्भशाला और पृष्ठ भाग में मण्डप की तरह की तीन गर्भशालाएँ खोदी गई हैं। गर्भशालाओं में तीर्थंकर की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। वास्तु की दृष्टि से इनमें कोई उल्लेखनीय बात नहीं है।

जिस समय दकन में गुफाएँ खोदी जा रही थीं उसी समय कर्नाटक में भी जैन गुफाओं का कटाव किया जा रहा था। बादामी और ऐहोली की जैन गुफाओं का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। आठवीं सदी ईसवी में मेलकोटे (मैसूर जिला) में दो अन्य जैन गुफाएँ बनाई गईं जो कि बिलकुल सादी हैं। परन्तु श्रवणबेलगोल की ५८' ऊँची गोम्मटेश्वर की एकाश्मक मूर्ति (९७४-८४ ई०) एक महान् कृति है। इसी से अनुप्राणित हो कर बाद में कारकल, वेणूर, ग्वालियर आदि स्थानों में विशाल जैन मूर्तियाँ बनाई गईं।

दकन की गुफाओं के समय ही तमिलनाडु में भी जैन गुफाएँ खोदी गईं। प्रारंभ से जैन साधु यहाँ की प्राकृतिक गुफाओं में रहते और तपस्या करते थे। साधुओं के उठने-बैठने के लिए उनमें आसन्दियाँ बनाई गईं जिन पर मौर्यकाल जैसी चमकदार प्रभा है। इन आसन्दियों के कटाव की प्रेरणा संभवतः उड़ीसा की जैन गुफाओं से मिली थी। छठी-सातवीं सदी ईसवी के बाद कुछ प्राकृतिक गुफाओं यथा वल्लिमलइ (उत्तरी अर्काट) आदि में तीर्थंकरों और सर्वानुभूति एवं अंबिका की मूर्तियाँ भी काटी गईं। विलाप्पाक्कम, पेच्चिपरइ और सित्तनवासल में जैन गुफाएँ खोदी भी गईं। विलाप्पाक्कम में सातवीं सदी ईसवी की एक विशाल जैन गुफा है जिसमें सामने तरफ मुखमण्डप और पीछे तरफ अर्धमण्डप है और दोनों के सामने एक पंक्ति में छः स्तंभ खड़े किये गये हैं। सभी स्तंभ बिलकुल चौकोर हैं यानी पल्लवकालीन स्तंभों की तरह उनके बीच में अठपहल भाग नहीं है। इनकी फर्श सामने की ओर ढालवाँ है जैसा उड़ीसा की गुफाओं में मिलता है। गुफा की पृष्ठभित्ति में सात कोष्ठ हैं जो संप्रति खाली हैं। गुफा के मुहार पर समतल छाद्य है और उससे १०' की ऊँचाई पर एक कोष्ठ है जिसमें जिनमूर्ति उत्कीर्ण है। यही मूर्ति गुफा के जैन होने

का एकमात्र प्रमाण है।

आठवी सदी ईसवी में बनी पेच्चिप्परइ की जैन गुफा एककक्ष्यीय है। उसके प्रत्येक पार्श्व में एक गर्भशाला है जिसमें पार्श्वनाथ की मूर्ति उत्कीर्ण है। गुफा के मुहार पर छाद्य है जिस पर धन्नियों का कटाव किया गया है।

नौवीं सदी के प्रारंभ में खुदी सित्तनवासल की जैन गुफा अपने सुंदर चित्रों के लिए काफी मशहूर है। स्थापत्य की दृष्टि से भी यह तमिलनाडु की अन्य जैन गुफाओं से विकसित है। इसमें आयताकार अर्धमण्डप और वर्गाकार गर्भगृह बनाया गया है। ये दोनों कक्ष्य शैलकृत हैं और इनके सामने चिनाईकृत मुखमण्डप की रचना की गई है। अर्धमण्डप में खड़े किये गये दो स्तंभ और दो भित्तिस्तंभ ऊपर-नीचे चौकोर और बीच में अठपहल हैं और उन पर तरंगशैली की पोतिका लगाई गई है। इस प्रकार ये स्तंभ पल्लवयुगीन स्तंभों की तरह हैं। अर्धमण्डप के एक छोर पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ की और दूसरे पर किसी जैन आचार्य की प्रतिमा उत्कीर्ण है। किसी जैनाचार्य की व्यक्तिमूर्ति का यह प्रथम उदाहरण है। अर्धमण्डप के मुखपट्ट पर वक्राकार छाद्य लगाया गया है। विलाप्पाक्कम के विपरीत यहाँ पर गर्भगृह के लिए स्वतंत्र कक्ष्य बनाया गया है और उसमें प्रवेश के लिए व्यालहस्त सोपान है। गर्भगृह में उच्चउभार के साथ तीन मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं जिनमें दो आदिनाथ और पार्श्वनाथ की और तीसरी किसी जैनाचार्य की है। गुफा की समूची दीवाल, स्तंभ और छत में भाँति-भाँति के चित्र बनाये गये हैं जो हमें अजंता के चित्रों की याद दिलाते हैं।

तमिलनाडु की तरह केरल में भी कई प्राकृतिक गुफाएँ हैं जिनमें नौवीं-दसवीं सदी ईसवी में जैन तीर्थंकरों और उनकी शासनदेवियों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गईं परन्तु उनमें आसन्दी की रचना नहीं की गई।

गुफा खुदवाने और विशालकाय मूर्तियों के निर्माण में जैनों की विशेष रुचि थी। यही कारण है कि जहाँ अन्य धर्मावलम्बियों ने यह कार्य बहुत पहले बन्द कर दिया वहीं जैनों ने पन्द्रहवीं सदी ईसवी में ग्वालियर में कई गुफाएँ और विशालकाय जिन मूर्तियाँ उत्कीर्ण करवाईं। ग्वालियर की जैन गुफाओं का सामान्य विन्यास पूर्वकालीन जैन गुफाओं की तरह ही है। इनमें भी पीछे तरफ मण्डप और सामने तरफ स्तंभयुक्त बरामदा है। मण्डप में कई कोष्ठ बनाकर उनमें सामान्यतः तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण कर दी गई हैं। मण्डप और बरामदा के स्तंभ सज्जित हैं। मण्डप के प्रवेशद्वार एवं मुखपट्ट को भी भाँति-भाँति के अलंकरणों एवं अभिप्रायों से सजाया गया है। लेकिन ग्वालियर की जैन गुफाएँ वास्तु से ज्यादा अपनी मूर्तियों के लिए विख्यात हैं। अधिकांश मूर्तियाँ तीर्थंकरों की हैं और उन्हें विविध आकारों में प्रस्तुत किया गया है। वहाँ की एक मूर्ति तो ५७' ऊँची है जो श्रवणबेलगोल की गोम्मटेश्वर की मूर्ति से केवल एक फुट कम है।

सहायक ग्रन्थसूची

१. अग्रवाल, वासुदेवशरण, *भारतीय कला*, वाराणसी, १९७७।

२. चक्रवर्ती, के० के०, *ग्वालियर फोर्ट*, नई दिल्ली, १९८४।

३. जिनप्रभसूरि, *विविधतीर्थकल्प*, संपा०- जिनविजयमुनि, शांतिनिकेतन, १९३४।

४. जैन, हीरालाल, *भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान*, भोपाल, १९७५।

५. नागस्वामी, आर०, "जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर अण्डर दी पल्लवज्", *आसपेक्टस् आफ जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर*, संपा०- यू० पी० शाह एण्ड एम० ए० ढाकी, अहमदाबाद, १९७५, पृ० १२३-१३०।

६. पाण्डेय, राजबली, *हिस्टोरिकल एण्ड लिटरेरी इंस्क्रिप्सन्स*, वाराणसी, १९६२।

७. फरगुसन, जे०, *हिस्ट्री आफ इण्डियन एण्ड इस्टर्न आर्किटेक्चर*, दिल्ली, १९६७।

८. फुहरर, ए०, "पभोसा इंस्क्रिप्सन्स", *एपीग्राफिया इण्डिका*, भाग-२, पृ० २४०-४३।

९. फ्लीट, जान फेथफुल, *कार्पस इन्सक्रिप्सनम इंडिकेरम*, भाग-३, वाराणसी, १९६३।

१०. बर्जेस, जे०, *दी केव टेम्पल्स आफ इण्डिया*, दिल्ली, १९६९।

११. ब्राऊन, पर्सी, *इण्डियन आर्किटेक्चर* (बुद्धिस्ट एण्ड हिन्दू पीरियडस्), बंबई, १९७६।

१२. मित्र, देबला, *उदयगिरि एण्ड खण्डगिरि*, नई दिल्ली, १९७५।

१३. मित्र, देबला, *जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर*, भाग- १, संपा०- ए० घोष, नई दिल्ली, १९७४।

१४. मुकर्जी, आ० के०, *दी एज आफ इंपिरियल यूनिटी*, संपा०-आर० सी० मजुमदार, बंबई, १९६८।

१५. शिवराममूर्ति, सी०, *इण्डियन पेंटिंग*, दिल्ली, १९७०।

१६. श्रीनिवासन, के० आर०, "जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर अण्डर दी गंगज् आफ तालकड", *आसपेक्टस् आफ जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर*, पृ० १८१-१८४।

१७. श्रीनिवासन, के० आर०, *केव टेम्पल्स आफ दी पल्लवज्*, नई दिल्ली, १९६४।

१८. सरकार , एच०, "जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर इन केरल", *आसपेक्टस् आफ जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर*, पृ० २१५-२२१।

१९. सौन्दरराजन, के० वी०, "इनसाइक्लोपीडिया आफ इण्डियन टेम्पल आर्किटेक्चर," भाग-१, खण्ड-२, संपा०-एम० डब्ल्यू० मायस्टर, दिल्ली, १९८६, पृ० १०५-३०।

२०. सौन्दरराजन, के० वी, "जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर इन तमिलनाडु", *आसपेक्टस् आफ जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर*, पृ० १३७-१६०।

अनुक्रमणिका

अंकाई ५,७,४२,४४,५८,६४,६५
अंगुत्तरनिकाय १
अजंता ९,६१
अजितनाथ १,२९-३१
अतीय ४७
अनन्तगुंफा ६,२७,५७
अनन्तनाथ ३०
अनन्तमती ३०
अपराजिता ३०
अप्सरा ४२
अभिनंदननाथ २९, ३०
अमोघवर्ष ५
अम्बिका ३०,३६,३७,३९,४१-४४,
४७,४९,६१-६५
अरनाथ ३०
अर्मामलइ ५
अल्कापुरीगुंफा २०
अवनिपशेखर श्रीवल्लभ ४९
अशोक २,३,९,५४
अश्वसेन १
अहिच्छत्र १३
आजीवक २,९,५४
आदिनाथ ४९,६६
आयनरेश ४९
आषाढ़सेन १३
इन्द्रसभा ७,३६,३९,६०-६३
उड़ीसा २,३,६,७,१३,१४,५३,
५४,५८,६१,६४
उदयगिरि (उड़ीसा) ७,१३,१४,१६,
२६,५३-५५,५८,६१
उदयगिरि (विदिशा) ३,३३,५९
उदयन २४,५७
उद्योतकेशरी २९,३२
उरवही ५०
उषा २८
ऋषभनाथ १,६,१०,२९-३१,३५,५०
एकादशीगुंफा ३२
एलीफेंटा ६०
एलोरा ५-८,३५,५८,६०-६२,६४
ऐहोली ४,४६,६०,६५
कन्याकुमारी ४९
कम्म २५
कलिंग २,३,२३
कल्लिल ५०
कश्यप १३
काँची ४
कारकल ९,४७,६५
काली ३०
किन्नर २६,५१,५६
कीर्ति सिंह ५०
कुंडग्राम १
कुंभाण्ड २८,५६
कुदेपसीरी वक्रदेव २३
कुन्थुनाथ ३०
कुबेर ४५
कुमारगिरि ३२
कुलचन्द्र २९
कुषाण ३, ५८
कुसुम २७
केवलवृक्ष २१,५३,५७
कैलाशनाथ मंदिर ७,३५,५८,६०-६२
कोठाजी २५,२६
क्षत्रप ३,३३
खण्डगिरि ३,६,७,१३,१४,२६,
२७,३२,५३-५५,५८,६१

खण्डगिरिगुंफा २९
खारवेल २,३,१३,१८,२५
गंग (पश्चिमी) ४,५,४७
गंगा १३,४१,६३
गंधर्व २३,३१,४३,५१
गजलक्ष्मी ६,१५,२८,५७
गण १८,२४,२६,२८,५६,५७,६०
गणेश २३,२४,३०
गणेशगुंफा २३,५७
गरुड ३१
गांधारी ३०
गिरनार ३२,३३
गिरिनगर ३३
गुणशील ४७
गुप्त ३,४,१३,५८,५९
गुप्त (परवर्ती) ४
गोम्मटेश्वर ५,३८,४७,६१-६३,
६५,६६
गौतम २
गौरी ३०
ग्वालियर ४,५,९,५०,५८,६५,६६
चक्रेश्वरी ३०,३१,३५,३९
चन्द्र २८
चन्द्रगिरि २,४७
चन्द्रगुप्त मौर्य २
चन्द्रगुफा ३३
चन्द्रप्रभ ३०
चामर ५,४४,६५
चामरधर ३०,३१,३४,३५,
४२,४३,४६
चामरधारिणी २८
चामरलेण ४५
चामुण्डराय ४७
चामुण्डा ३०
चालुक्य ४,५९-६१
चूलकम २५,२६
चेटक १
चेदि ३,१३
चैत्यगृह ९,१४,५३,५५,५८
चैत्यवृक्ष २८
चोल ४
कैलाश (छोटा) ७,३५,५८,६०
जंबू २
जगन्नाथ २६
जगन्नाथगुंफा २६
जगन्नाथसभा ४१,६१,६३
जनक १
जम्बेश्वरगुंफा २५
जयदामन ३३
जया-विजयागुंफा २१
जिनचौबीसी ४४
जिनसर्वतोभद्रिका ३८
जूनागढ़ ३,३३,५३,५७
ज्वालामालिनी ३०
ठाकुराणीगुंफा २१
तंकाई ५,७,४२,४४,५८,६४,६५
तातोवागुंफा २६,२७
तारा ३०
तिरुच्चारणत्तुमलइ ४९
तेन्तुलिगुंफा २९
तोमर ५, ५०
तोरणशालभंजिका ५६
त्रिकूटवसति ४९
त्रिशला १, ५०
त्रिशूलगुंफा ३१
दकन ३-५,६०,६४,६५

दशरथ ९,५४
दशावतार ६१
दिगम्बर २,५,१०,४७
दिग्पाल ४९
दुंगरेन्द्रसिंह ५०
दुष्यन्त १९,२०,५७
देशीगण २९
दोहद २९
धनघरगुंफा २५
धरणेन्द्र ४६,६०
धरसेन ३३
धर्मनाथ ३०
धाराशिव ५,३३,५८,५९
ध्यानगुंफा २९
नन्द २
नमिनाथ १,३०
नवमुनिगुंफा २९
नाकिय २५
नागदेव ३१
नागपाश २९
नागार्जुन ४२
नागार्जुनी ९,१२,५४
नालन्दा १२
निधिमूर्ति ३५
नेमिनाथ १,२९,३०,३२,५०
पटना ५,४२,५३,६३
पद्मप्रभ ३०
पद्मावती ३०,४६,४९,६०
पनसगुंफा २१
पभोसा २,१३,५३,५४
पल्लव ४,५,५४,६५,६६
पहलव ३
पांड्य ४,५,४९
पातालपुरीगुंफा २२
पादमुलिक २७
पार्श्वनाथ १,१०,२९-३१,
३३,३५,३६,३८-४१,
४४-४९,५१,५९-६३
पार्श्वापत्य १
पाल ४
पीतलखोरा ४२
पुरुषदत्ता ३०
पुलकेशिन द्वितीय ४
पेच्चिपरइ ५,४७,४८,६५,६६
प्रज्ञप्ति ४
प्रतीहार ४
प्रत्यूषा २८
बराबर ९,५४
बहुरूपिणी ३०,३१
बाघगुंफा ६,२५,५४
बाजाघरगुंफा २०
बादामी ४,४५,४६,५९,६०,६५
बाबर ५०
बाबा प्यारामठ ३२
बारभुजीगुंफा ३०
बाहुबली ६,१०,३५-४१,
४६,४७,५९-६२
बिंबिसार २
बुद्ध १,६,९,३४,५३,५९
बोधगया ५७
बोधिमंड ५७
बोधिवृक्ष ५३,५७
ब्राह्मी ४६,६०
भगवती मंदिर ६०
भट्टारक ४९
भद्रबाहु २

भरहुत १८
भामेर ५,४५,६५
भारपुत्रक २६,४३,४४,६४
भारवाहक २३,२६,५६
भीमट वैद्य २५
भीमरथ ६१
भुवनेश्वर ३,१३
भूतमाला ३६
भौमराजा २५
मंचपुरी-स्वर्गपुरीगुंफा २२
मक्खलिगोशाल ९
मगध २,३,१२
मथुरा १-३
मदुरा ४
मनोवेगा ३०
मल्लिनाथ ३०
महाकाली ३०
महाबलीपुरम ६१
महामदा २५
महामानसी ३०,३१
महामेघवाहन २३
महायान ५३,५९
महावीर १,२,९,१३,३०,३१, ३६-४१,४६,४७,४९,५०, ६०-६३
महावीरगुंफा ३१
महिषमर्दिनी ६
महेन्द्रवर्मन प्रथम ४८
मातंग ३९
मानवी ३०
मानसी ३०
मिथिला १
मुगल ५०
मुनिसुव्रतनाथ १,३०
मेगुती ४
मेलकोटे ४७,६५
मौखरी ४
मौर्य २,१२,१३,४७,५३,५४,६५
यक्ष १७,३५
यक्षी १७,३५
यमुना १३,४१,६३
यवन ३
यालिमंडप ५४
रविकीर्त्ति ४
रसुईगुंफा २६
राजगिर १२
राजगृह २,७,९,१२,५३,५४
राजमल्ल ४७
रानीगुंफा १४,१६,२४,५७
राष्ट्रकूट ४,५,३५,६०
रुद्रसिंह ३३
रोहिणी ३०,३१
ललाटेन्दुकेसरीगुंफा ३१
लिच्छवि १
लोहानीपुर ५३
वक्रदेव २३
वज्रशृंखला ३०
वल्लिमलइ ४७,६५
वाकाटक ३,४,५९
वातरसनामुनि १
वातापि ४
वामादेवी १
वासवदत्ता २४,५७
वासुपूज्य २९-३१
विक्रमादित्य वरगुण ४९
विजया ३०

विदिशा ३,३३,५९
विद्याधर १८,२३,२६,२९,३१,३४,
३५,४२,४६,४७,५६,५७
विद्याधरी ३६,३८
विन्ध्यपर्वत ४
विमलनाथ ३०,३१
विलाप्पाक्कम ५,४७,४८,६५,६६
विष्णु ६
विहार ९,१४,५४,५५,५८,५९
वेणूर ४७,६५
वैरदेव १२
वैरोट्या ३०
वैशाली १
व्याल ३६,४२,४५
शक ३,१९,५५
शकुन्तला १९,२०,५९
शान्तिकर २५
शान्तिनाथ ३०,३७,४४
शार्दूल ३२,३४,४३,४६
शालभंजिका २१,५६
शिव ६
शीतलनाथ ३०,३१
शुंग २,५७
शुभचन्द्र २९
श्रवणबेलगोल २,५,९,४७,६५,६६
श्रीकृष्ण १
श्रेयांसनाथ ३०,३१
श्वेताम्बर २,१०
संभवनाथ २९,३०
सप्तमातृका ३०
सभूति २५
समवसरण ३६,४९
सम्प्रति २
सम्मेदशिखर १
सरस्वती ३९
सर्पगुंफा २५,५४
सर्वतोभद्रप्रतिमा ३८,६२
सर्वतोभद्रमंदिर ३६,३९
सर्वतोभद्रविमान ७,३६,६०,६२
सर्वानुभूति ३६,३७,३९-४४,
४७,६१-६५
सांची ५६
सातवाहन २,३
सिकन्दर २
सित्तनवासल ५,९,४७-४९,६५,६६
सिद्धायिका ३०,३९
सिद्धार्थ १,५०
सुधर्म २
सुन्दरी ४६,६०
सुपार्श्वनाथ ३०
सुमतिनाथ ३०
सुविधिनाथ ३०
सूर्य ६,२३,५७
सोनभण्डार ९,१२
सोमवंश २९,३२
सोहिल ३७
स्तूप ९,३२,५३,५८
स्वर्गपुरी-मंचपुरी गुंफा १४,२२
हरिदास २६
हलखिणा २५
हर्षवर्धन ४
हाथीगुंफा ३,१४,२०,२५,५४
हीनयान १४,५३
हूण ४

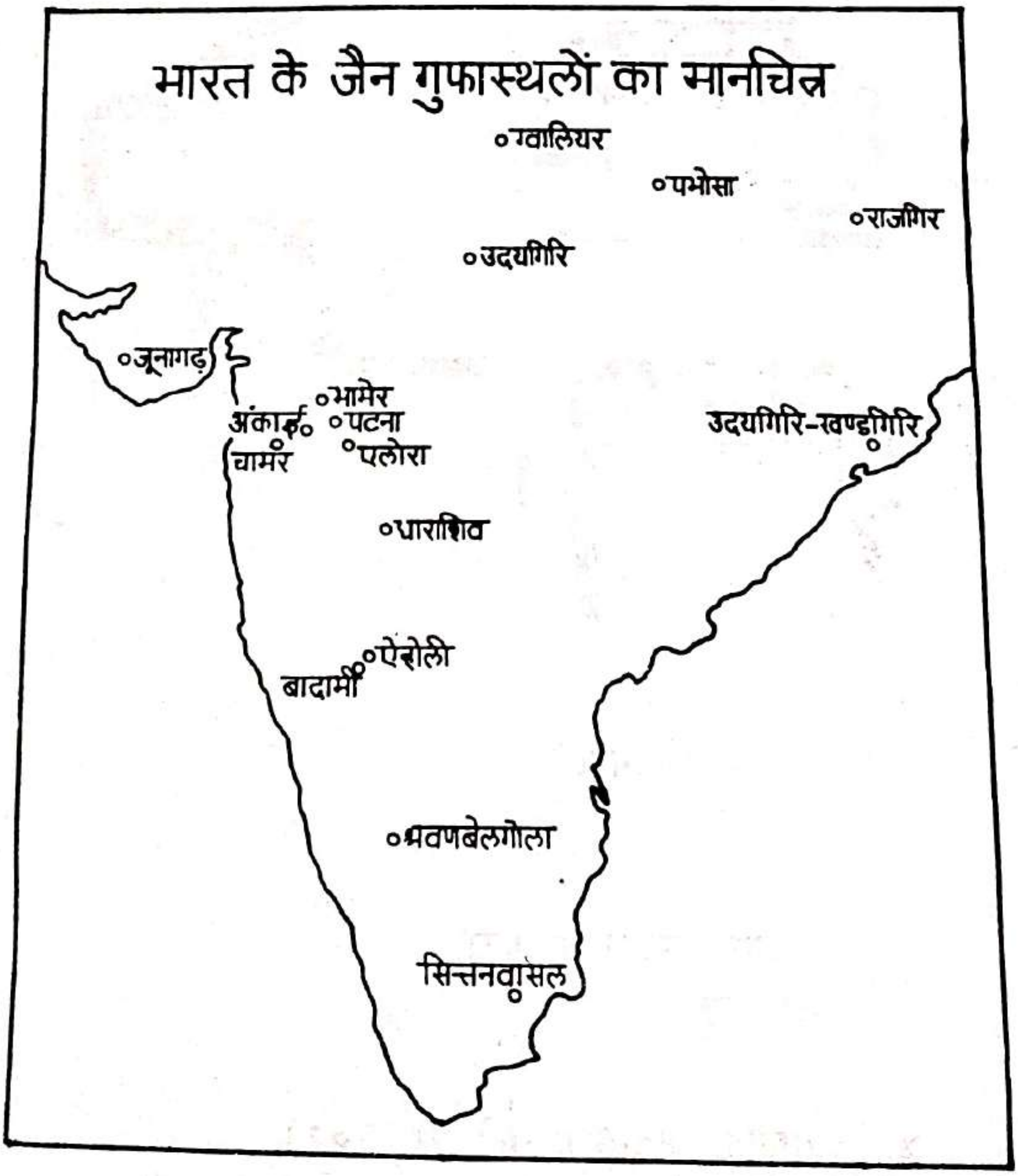

१. जैन गुफास्थलों का मानचित्र

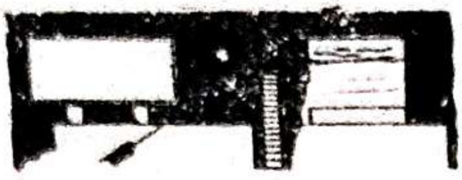

2

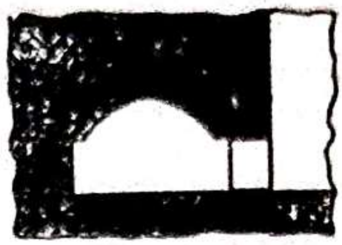

3

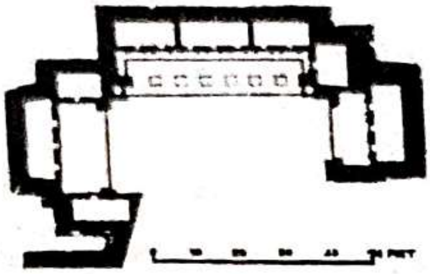

4.

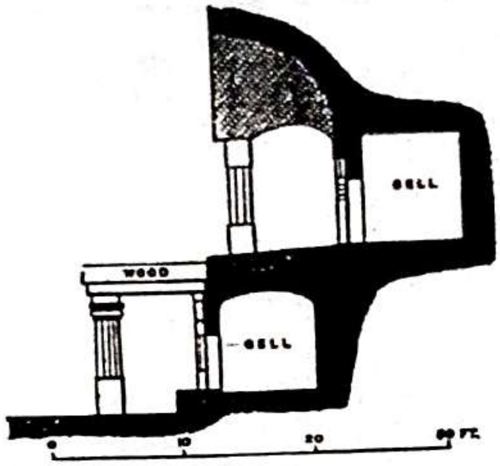

6.

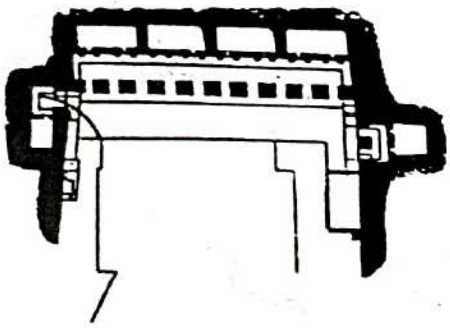

5

२. राजगिर, सोनभण्डार गुफा,
तलविन्यास

३. राजगिर, सोनभण्डार गुफा,
तिर्यक्रेखा

४. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (सं० १),
निचली मंजिल, तलविन्यास

५. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (सं० १), ऊपरी मंजिल,
तलविन्यास

६. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (सं० १), तिर्यक्रेखा

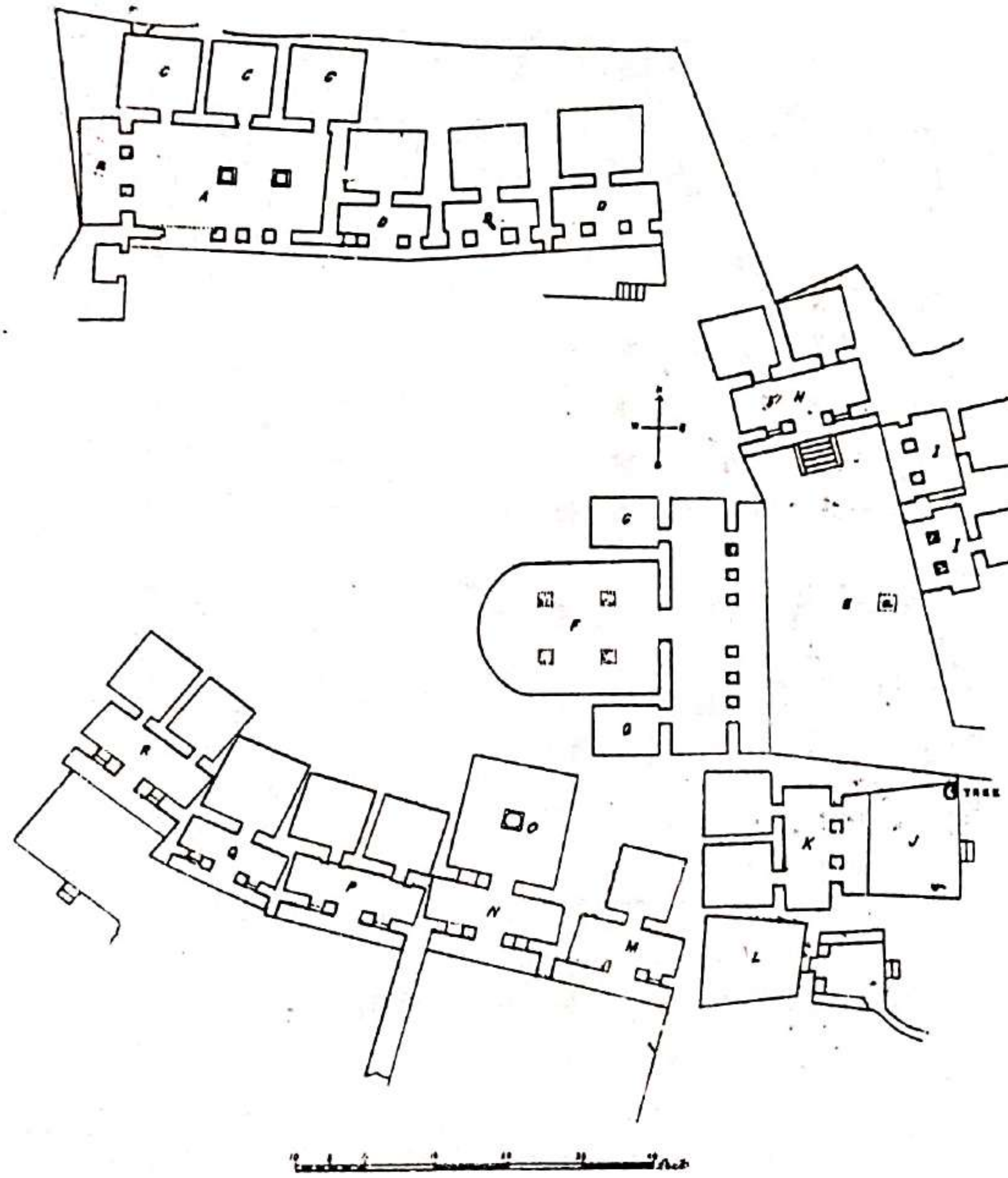

७. जूनागढ़ की जैन गुफाओं का तलविन्यास

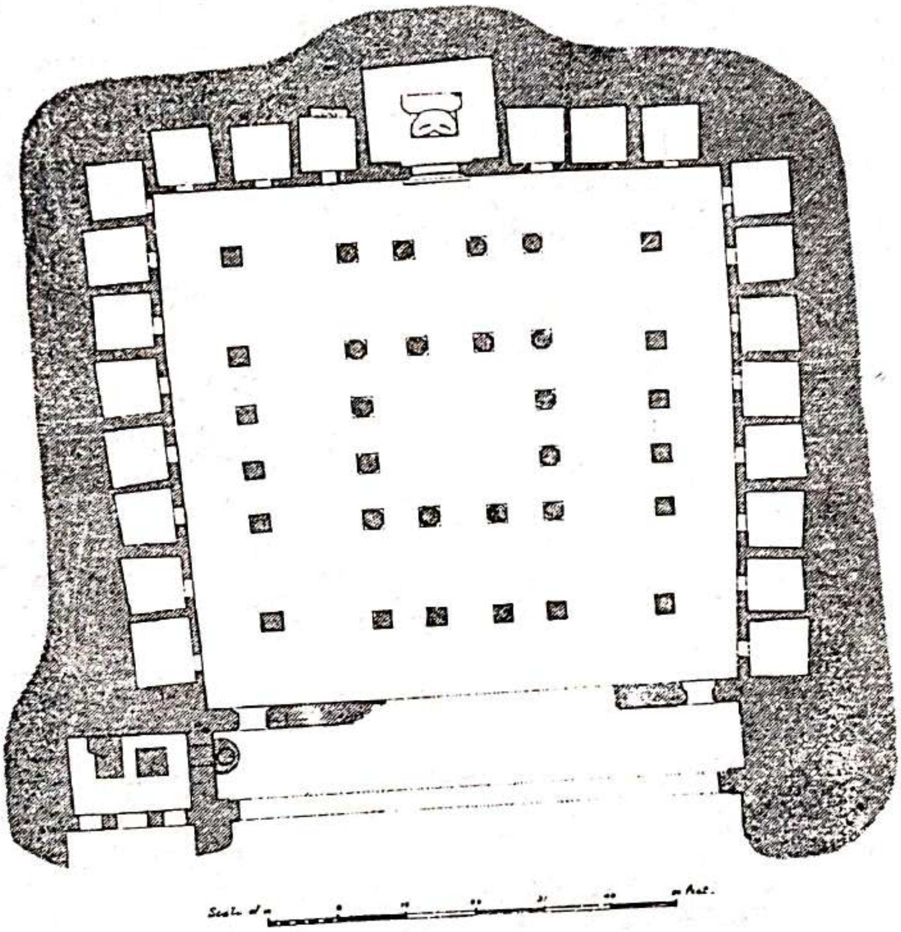

८. धाराशिव, गुफा संख्या २, तलविन्यास

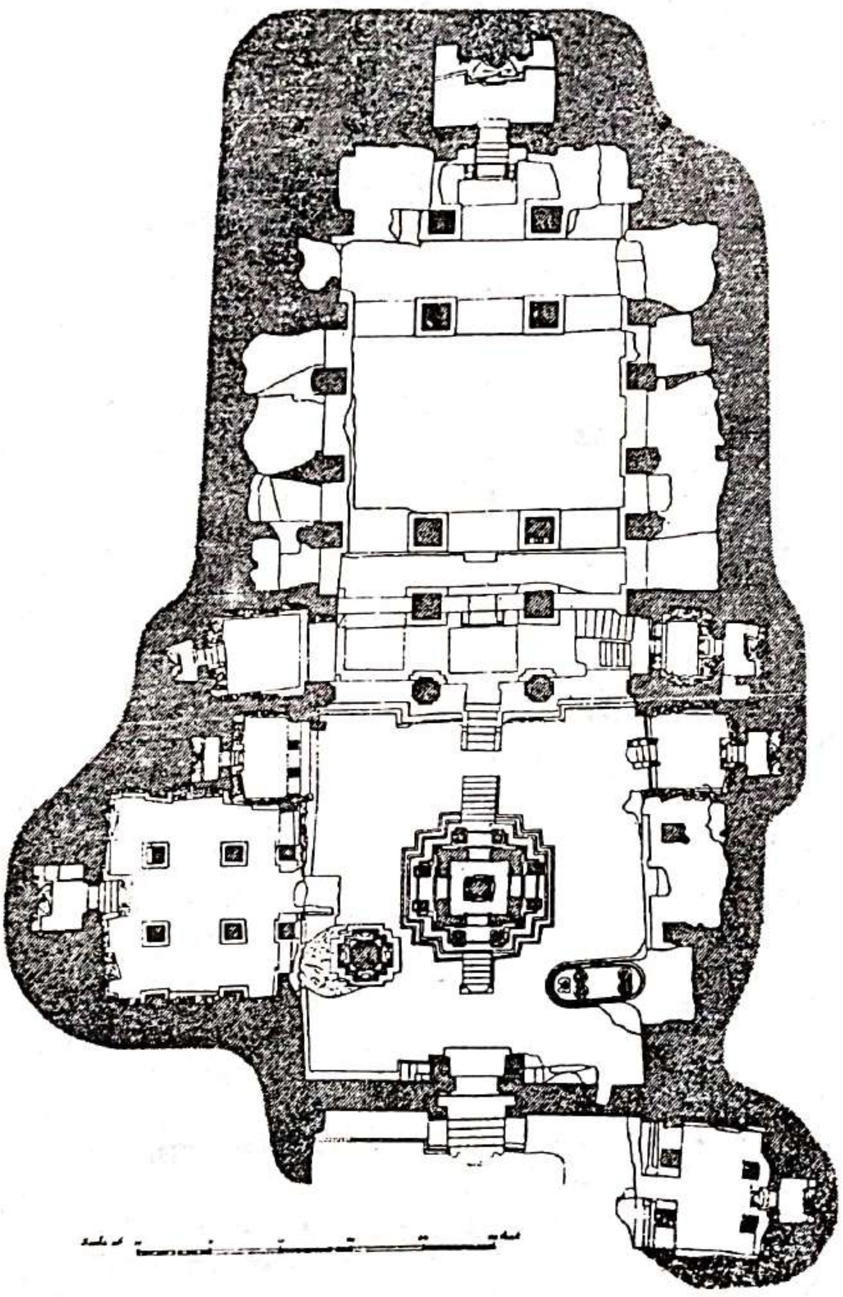

९. एलोरा, इन्द्रसभा, निचली मंजिल, तलविन्यास

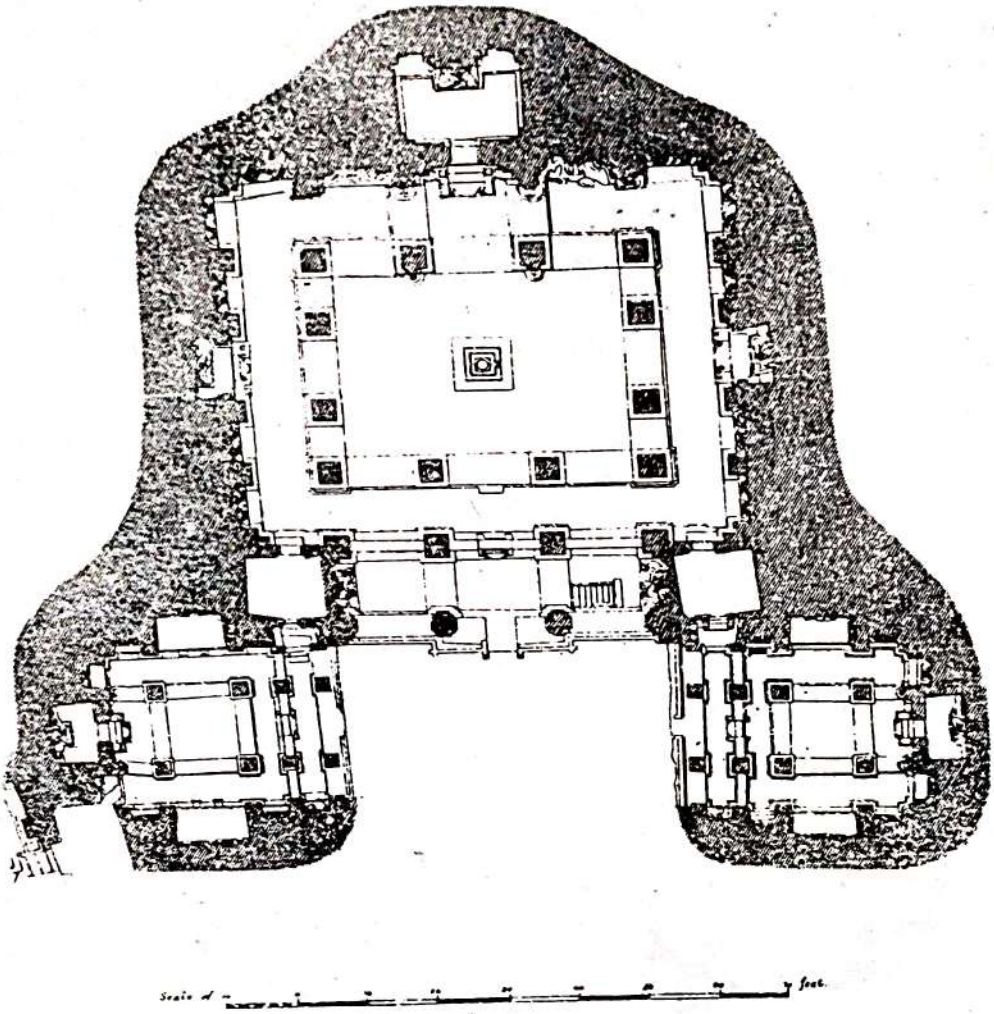

१०. एलोरा, इन्द्रसभा, ऊपरी मंजिल, तलविन्यास

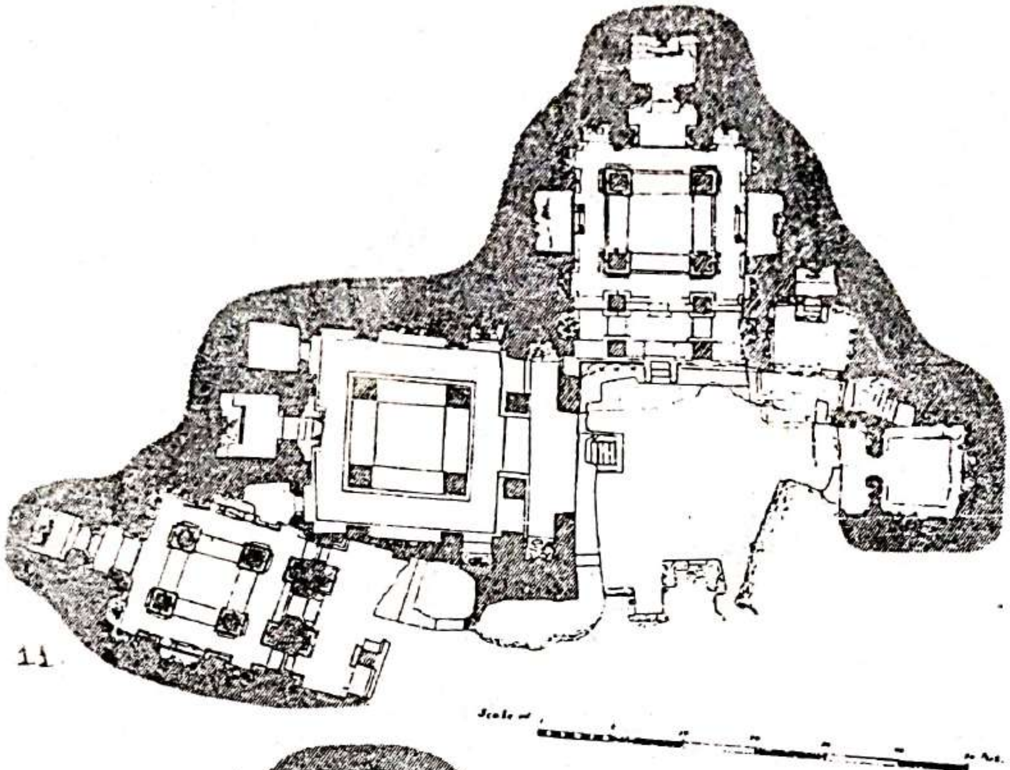

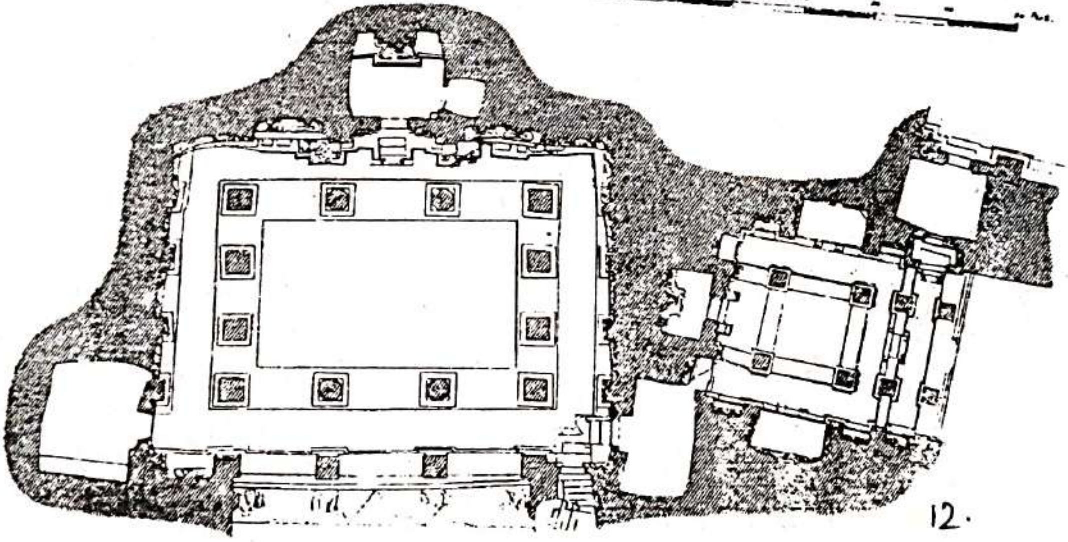

११. एलोरा, जगन्नाथसभा, निचली मंजिल, तलविन्यास

१२. एलोरा, जगन्नाथसभा, ऊपरी मंजिल, तलविन्यास

13.

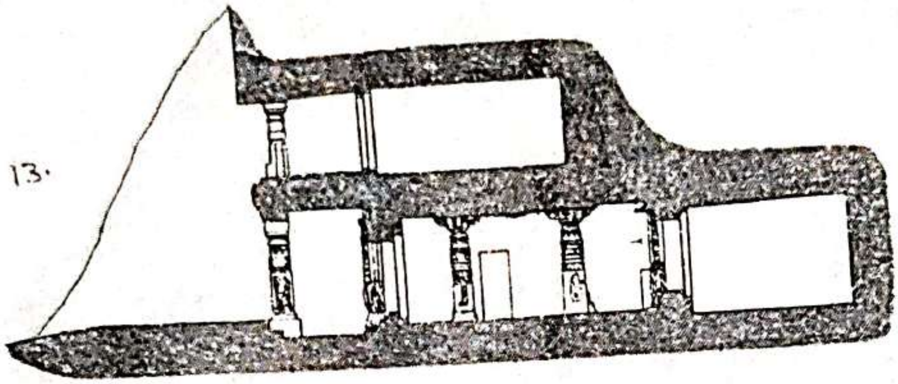

14.

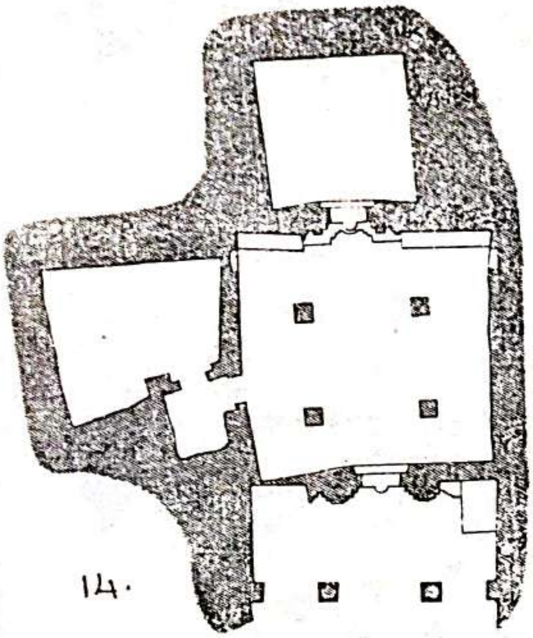

15.

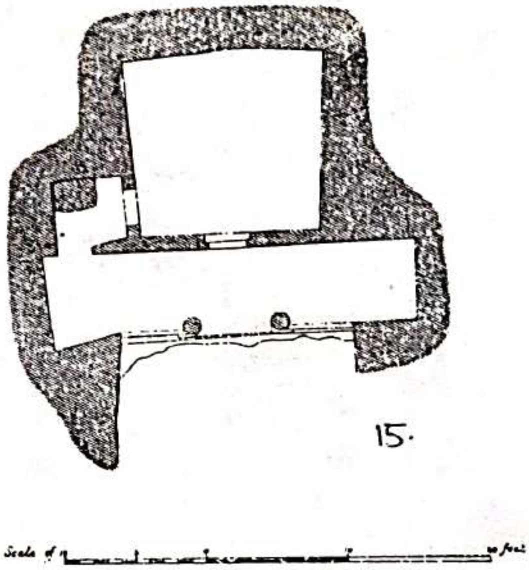

१३. अंकाई, जैन गुफा संख्या १, तिर्यक् रेखा

१४. अंकाई, जैन गुफा संख्या १, निचली मंज़िल, तलविन्यास

१५. अंकाई, जैन गुफा संख्या १, ऊपरी मंजिल, तलविन्यास

१६. राजगिर, सोनभण्डार गुफा, सम्मुखीन दृश्य

१७. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (संख्या १), बाह्य दृश्य

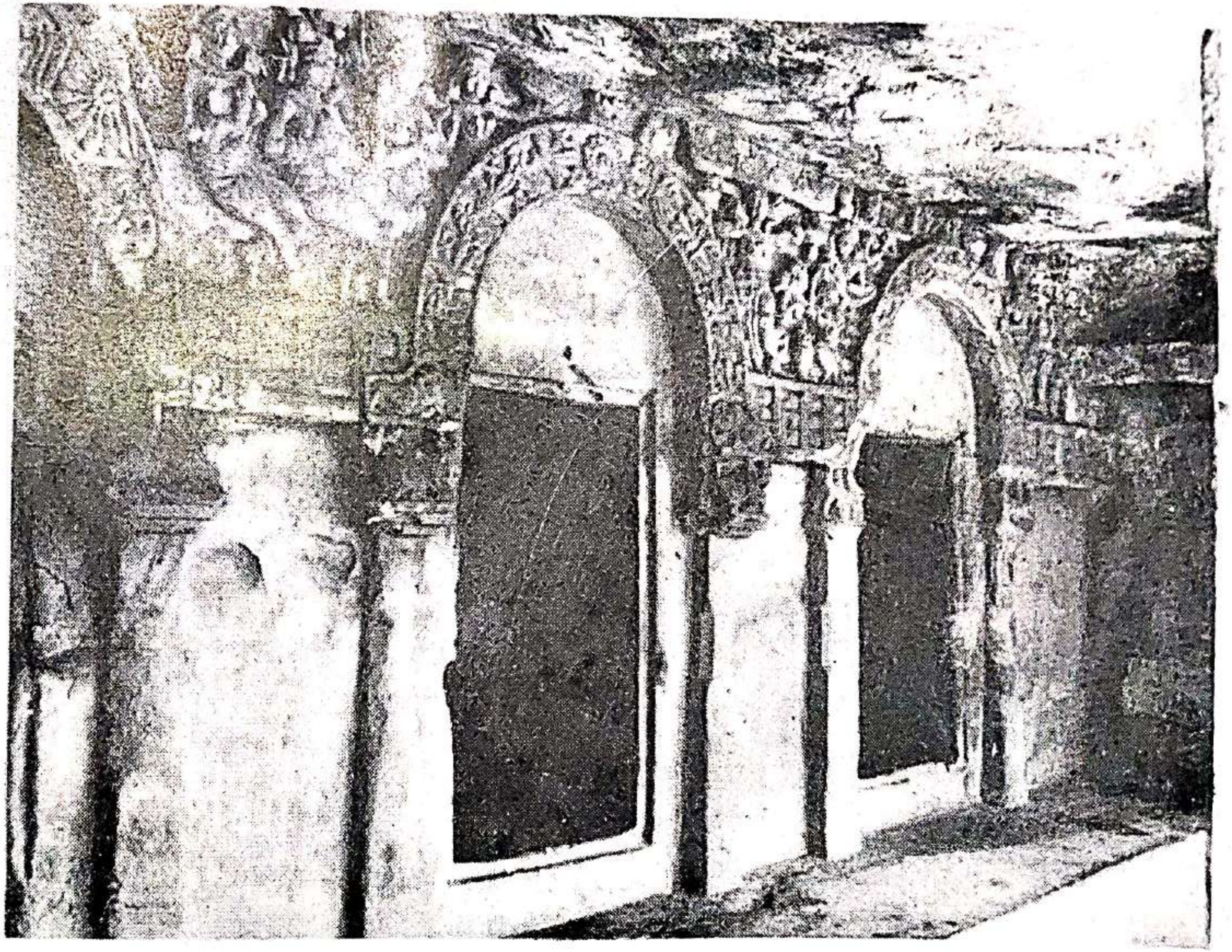

१८. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (संख्या १), निचली मंजिल, गर्भशाला के मुखपट्ट पर अंकित दृश्य

१९. उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा (संख्या १), ऊपरी मंजिल,
गर्भशाला के मुखपट्ट पर अंकित दुष्यन्त-शकुन्तला की कथा का दृश्य

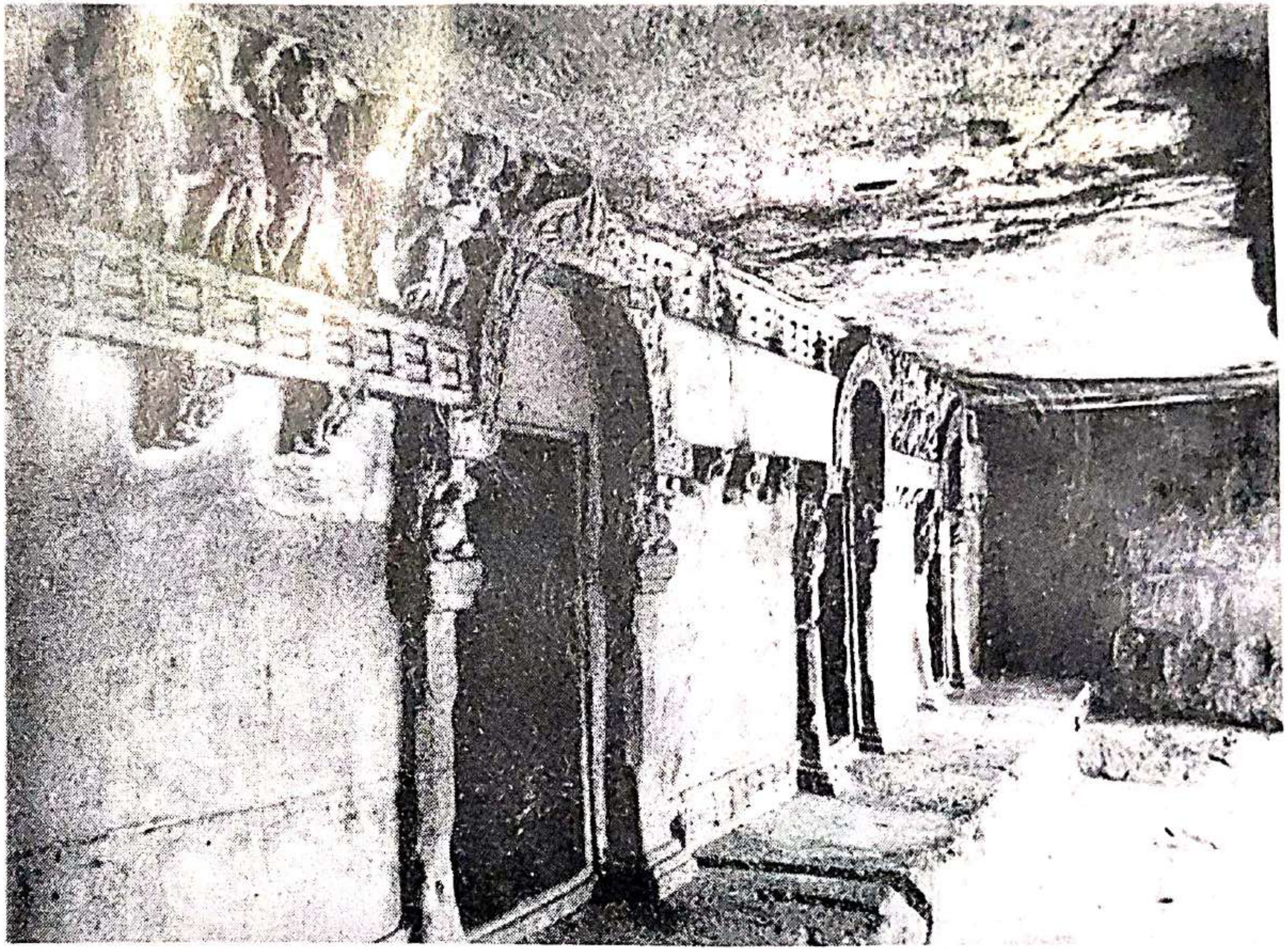

२०. उदयगिरि (उड़ीसा), गणेशगुंफा (संख्या १०), गर्भशाला के मुखपट्ट पर अंकित स्त्री-अपहरण का दृश्य

२१. खण्डगिरि (उड़ीसा), तातोवागुंफा (संख्या १), सम्मुखीन दृश्य

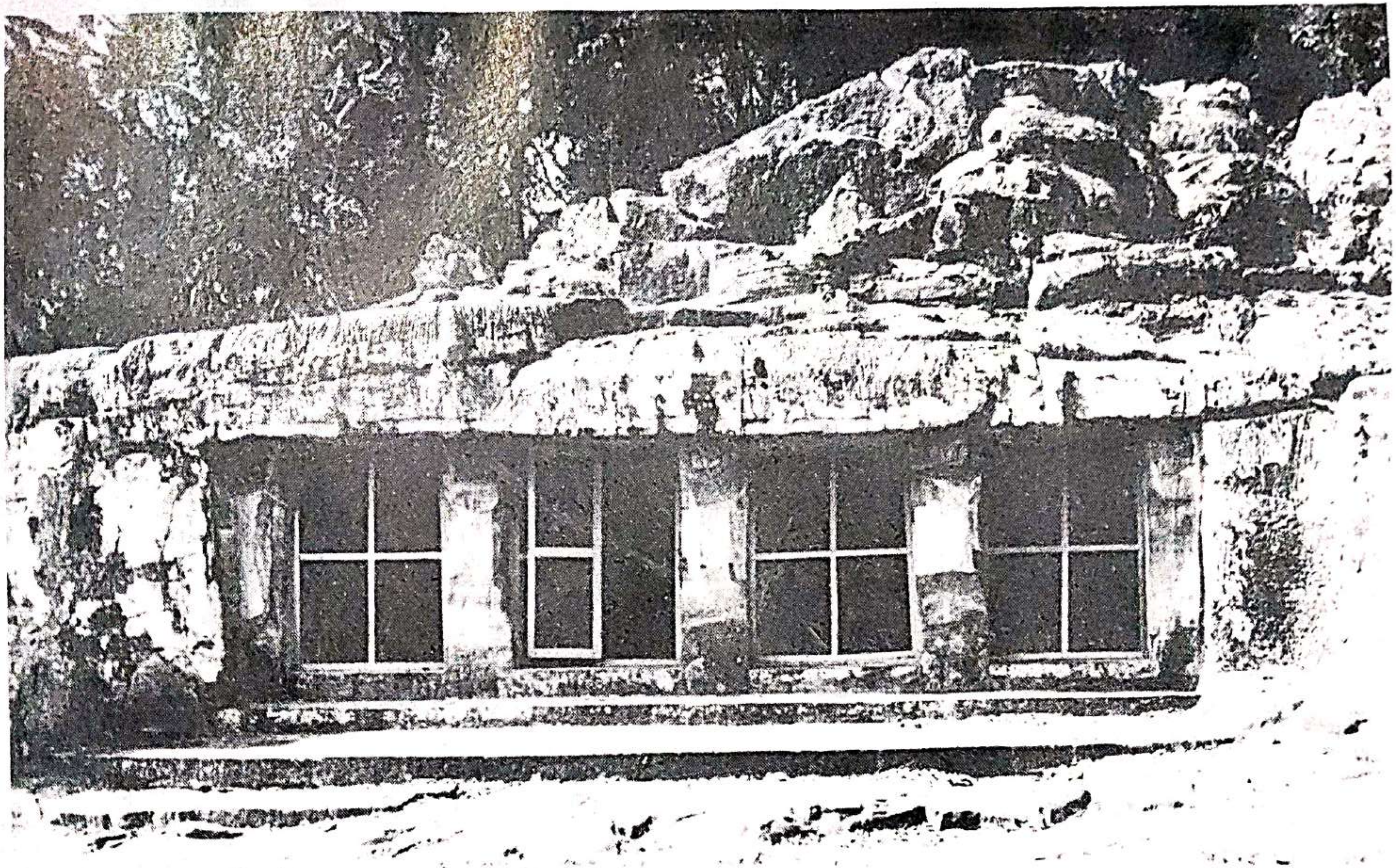

२२. खण्डगिरि (उड़ीसा), अनन्तगुंफा (संख्या ३), सम्मुखीन दृश्य

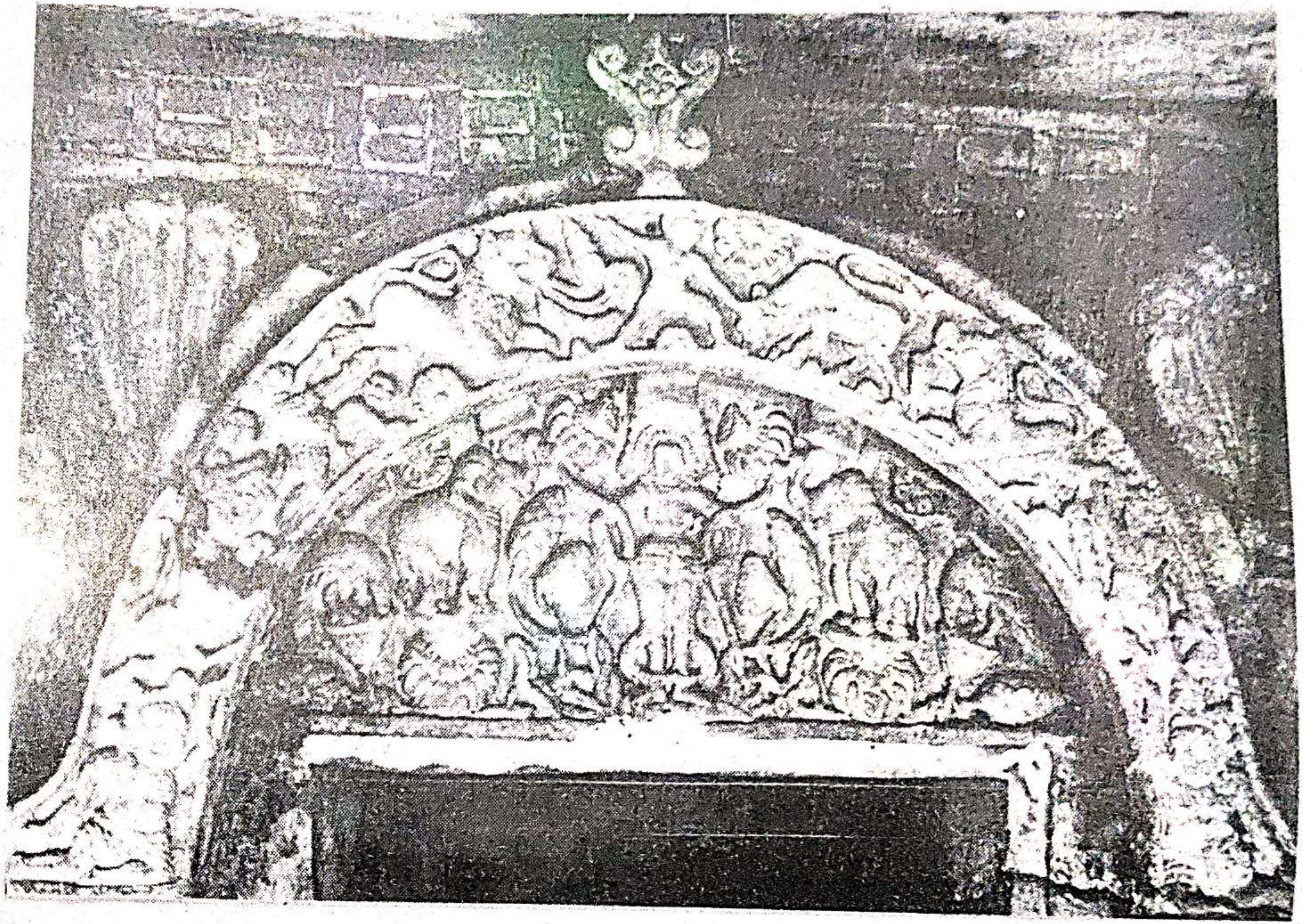

२३. खण्डगिरि (उड़ीसा), अनन्तगुंफा (संख्या ३), गजलक्ष्मी

२४. खण्डगिरि (उड़ीसा), अनन्तगुंफा (संख्या ३), चैत्यवृक्ष-पूजा

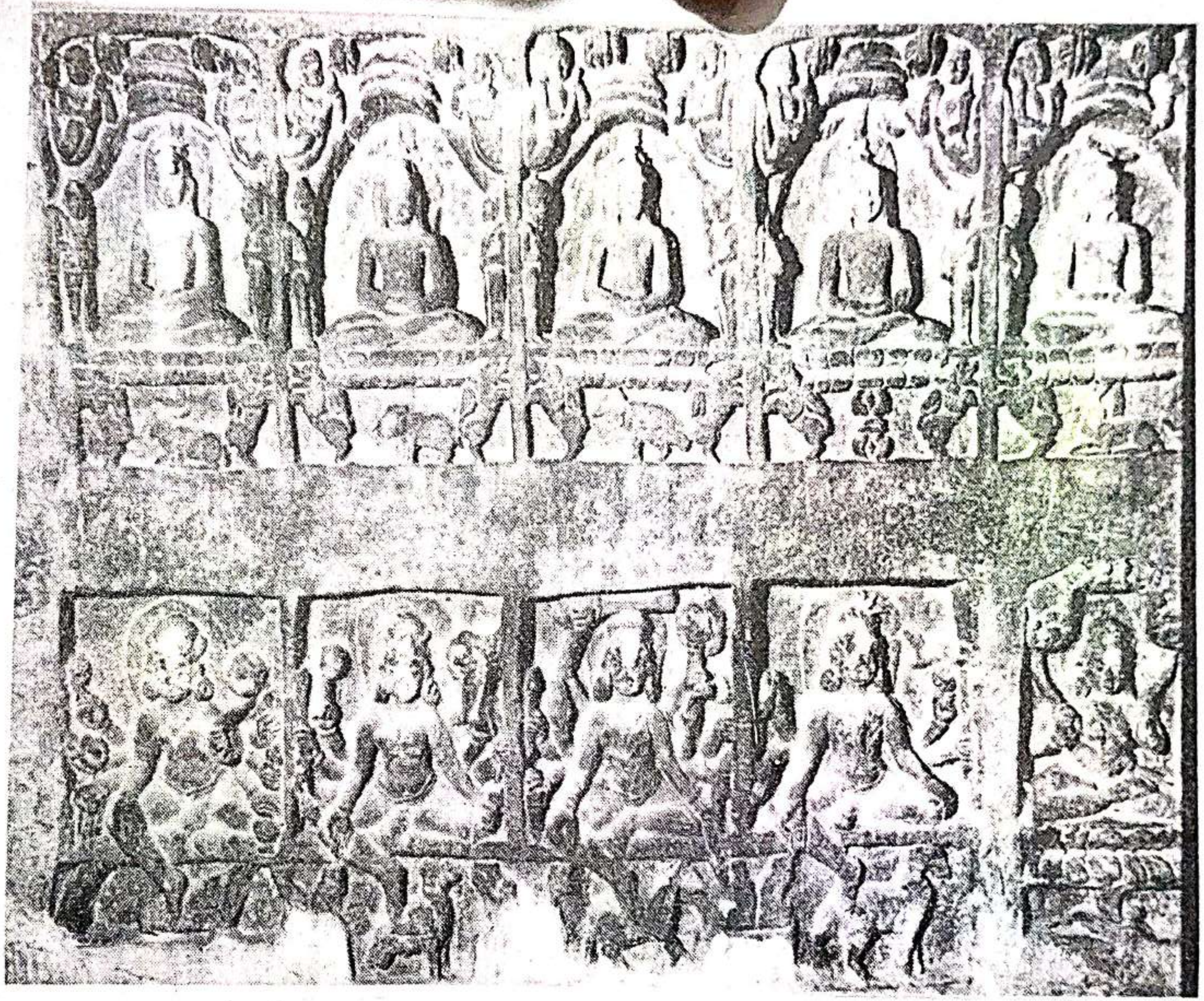

२५. खण्डगिरि (उड़ीसा), बारभुजीगुंफा (संख्या ८), तीर्थंकर एवं उनकी शासनदेवियाँ

२६. उदयगिरि (म०प्र०), गुफा संख्या २०, आन्तरिक दृश्य

२७. धाराशिव, गुफा संख्या ६, मुखमण्डप, स्तंभ

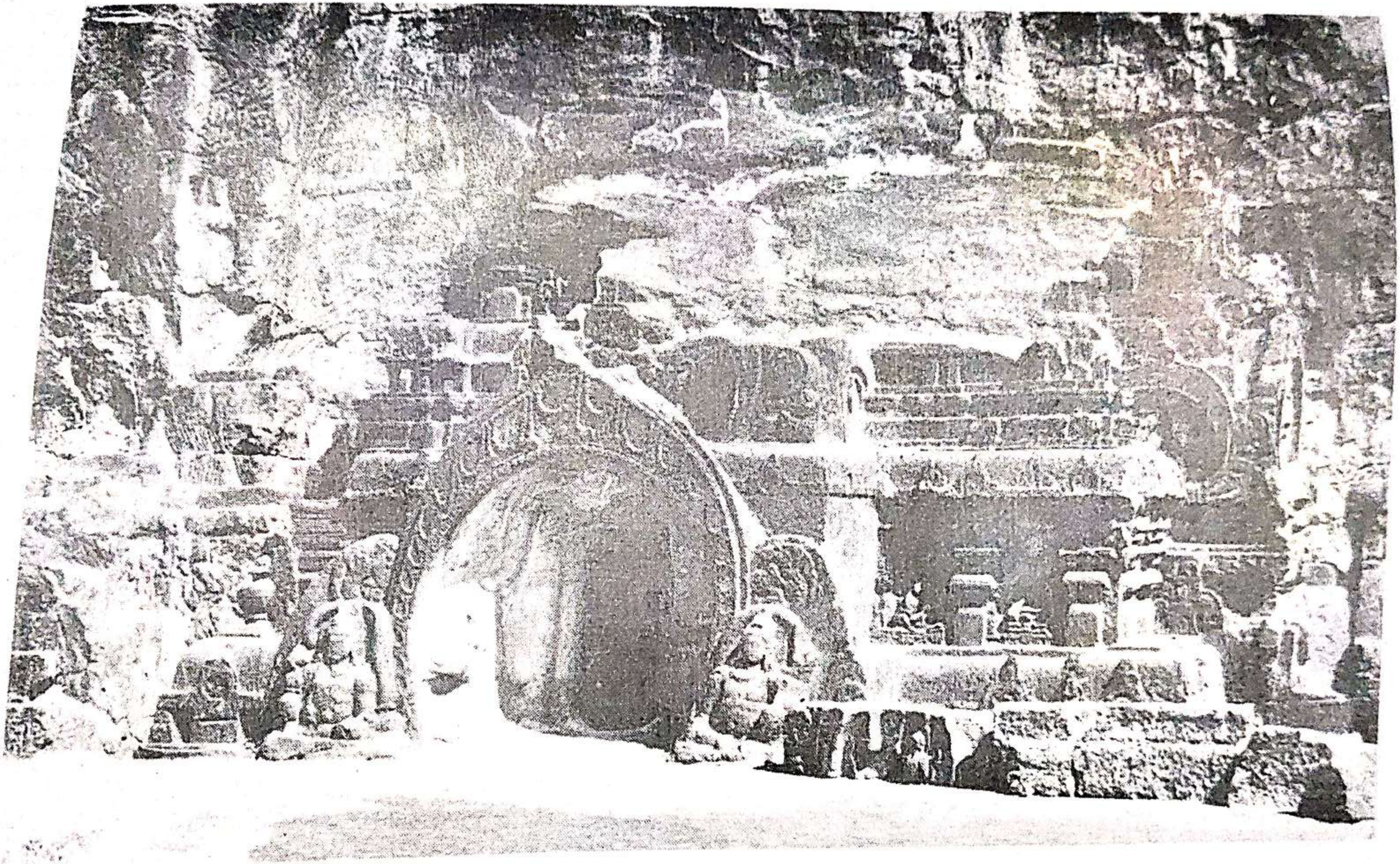

२८. एलोरा, छोटा कैलाश (संख्या ३०), सम्मुखीन दृश्य

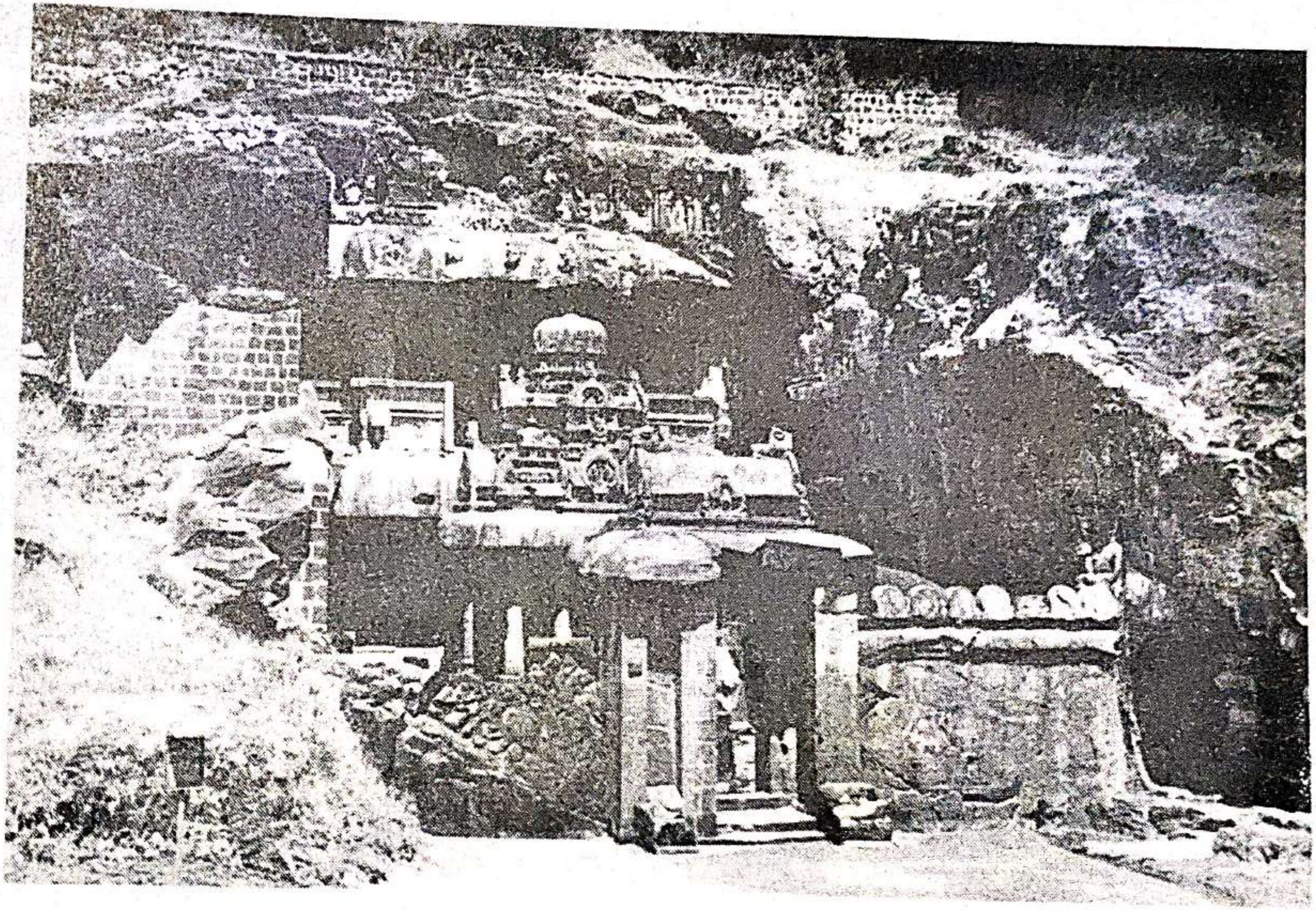

२९. एलोरा, इंन्द्रसभा, सम्मुखीन दृश्य

३०. एलोरा, इन्द्रसभा, प्रांगण, सर्वतोभद्र विमान

३१. एलोरा, इन्द्रसभा, ऊपरी मंजिल, मण्डप, स्तंभ

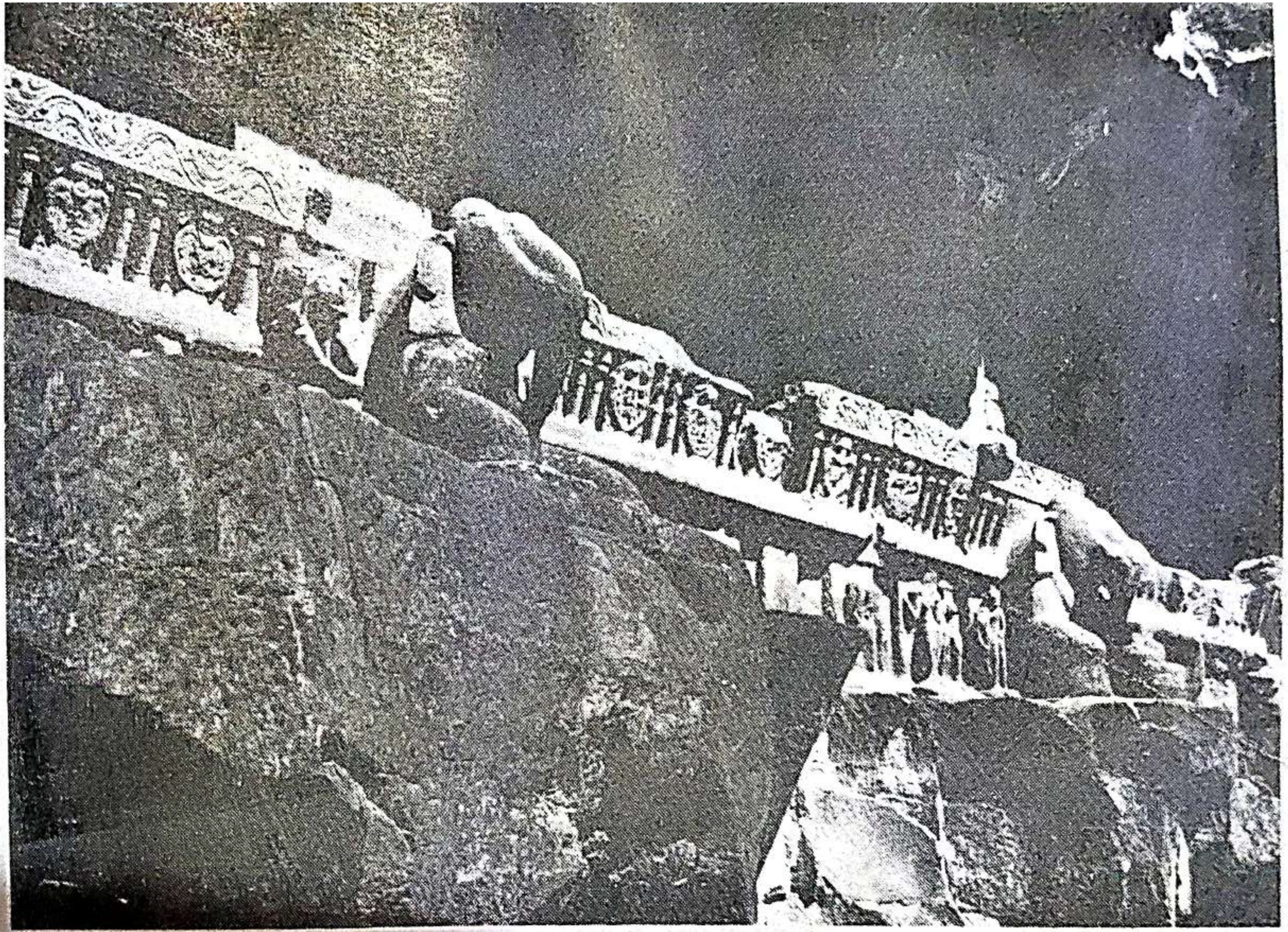

३२. एलोरा, जगन्नाथसभा, ऊपरी मंजिल की सम्मुखीन वेदिका एवं कक्षासन

३३. एलोरा, जगन्नासभा, ऊपरी मंजिल, मण्डप, स्तंभ

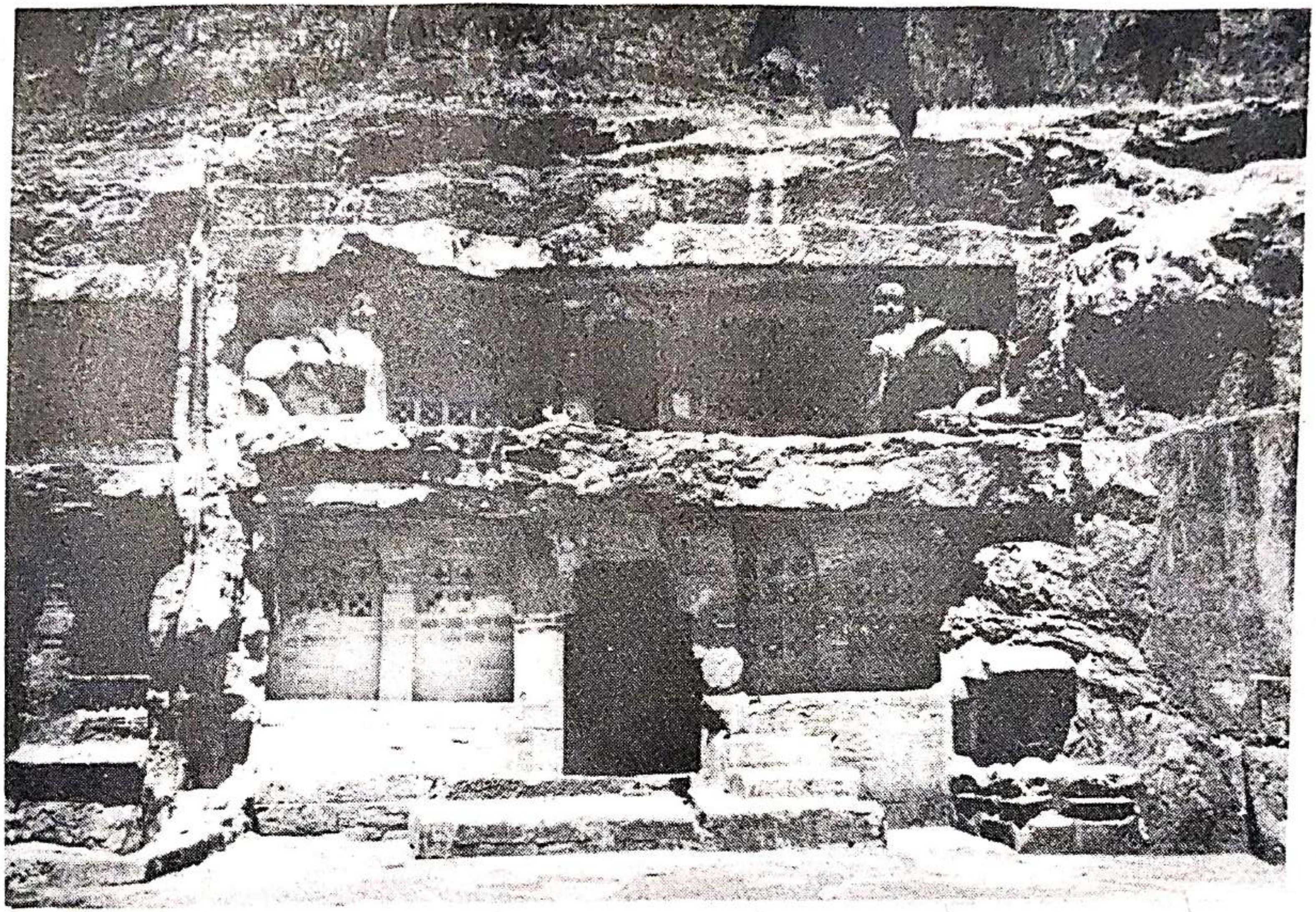

३४. अंकाई, गुफा संख्या २, सम्मुखीन दृश्य

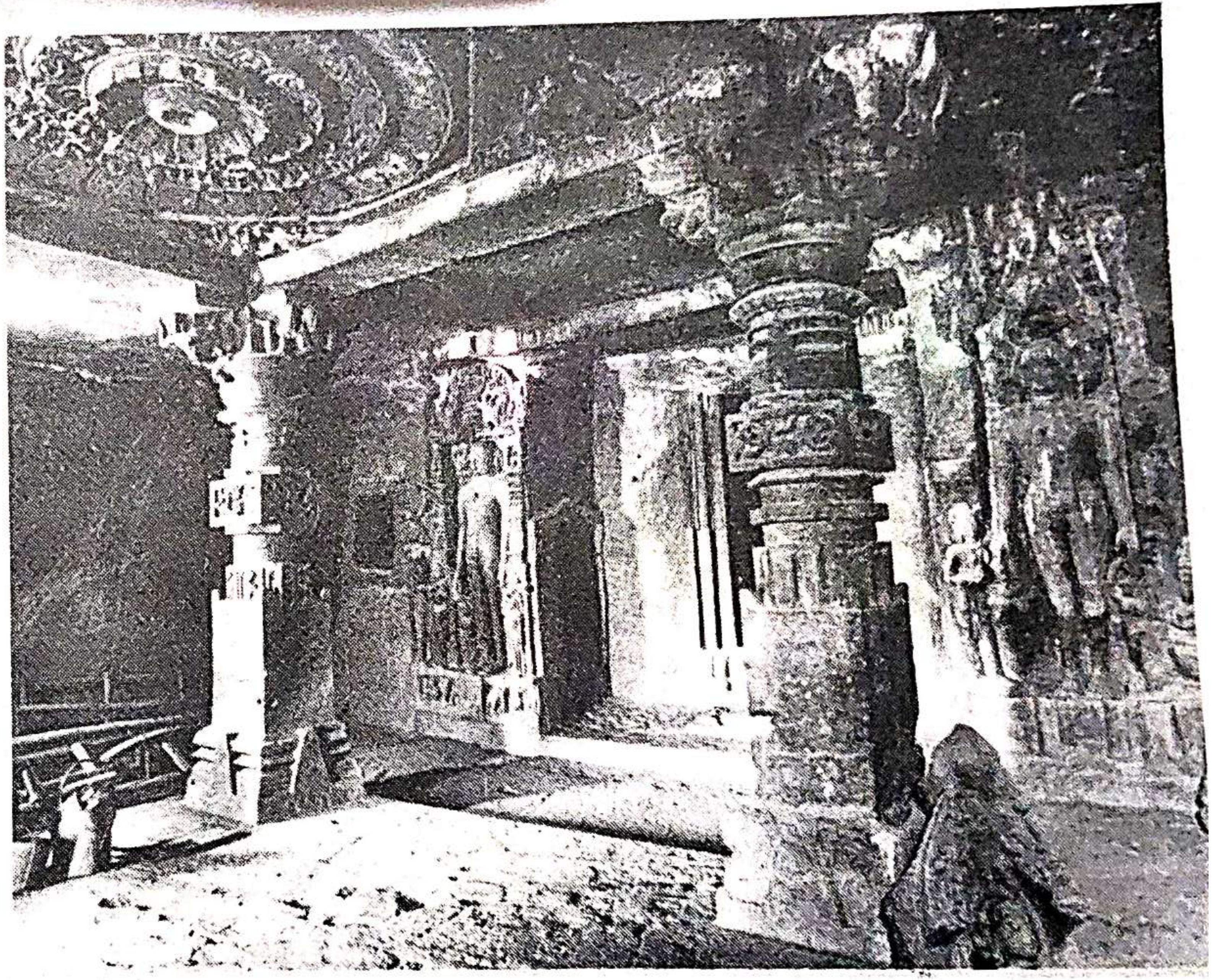

३५. अंकाई, गुफा संख्या ३, आंतरिक मण्डप

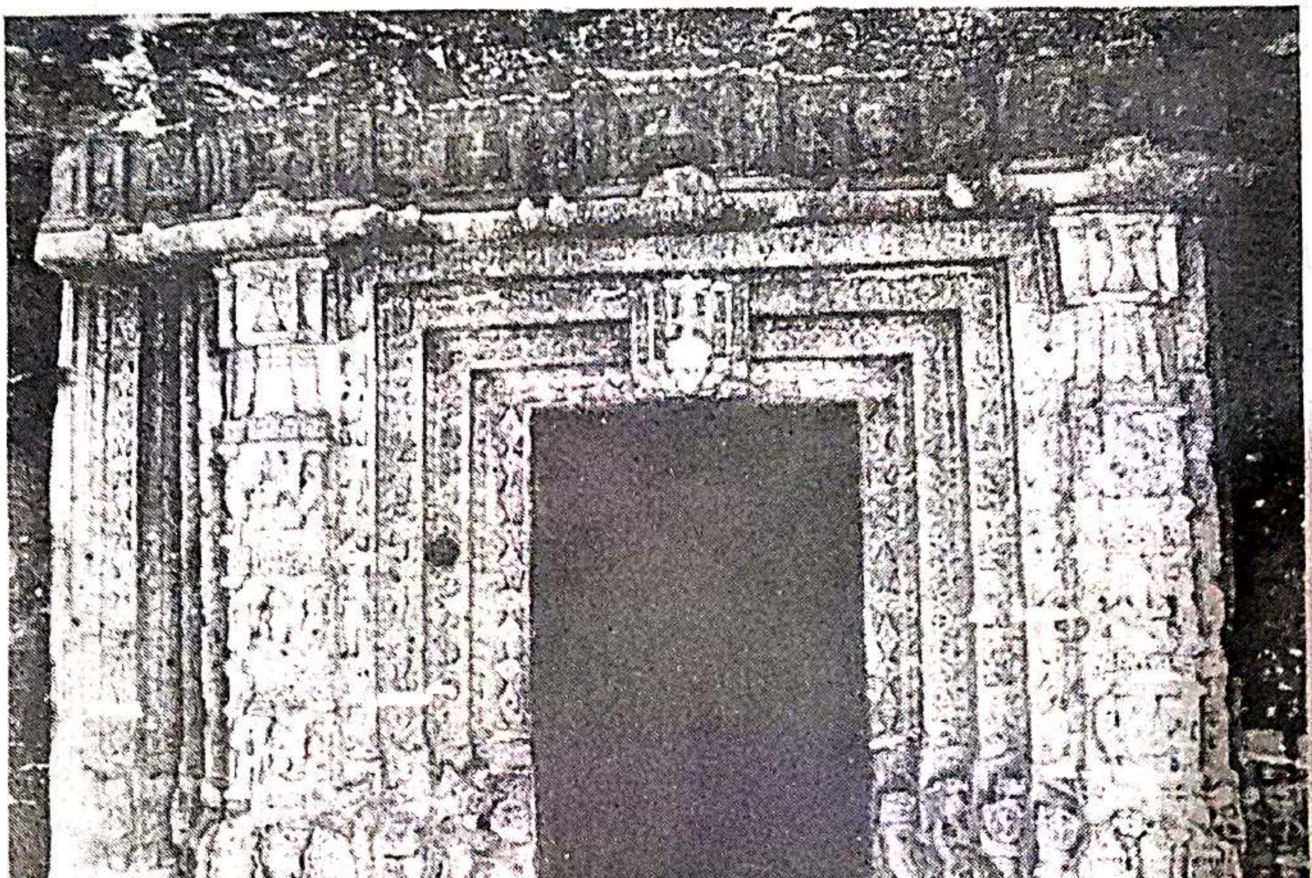

३६. अंकाई, गुफा संख्या १, मुखमण्डप, द्वार

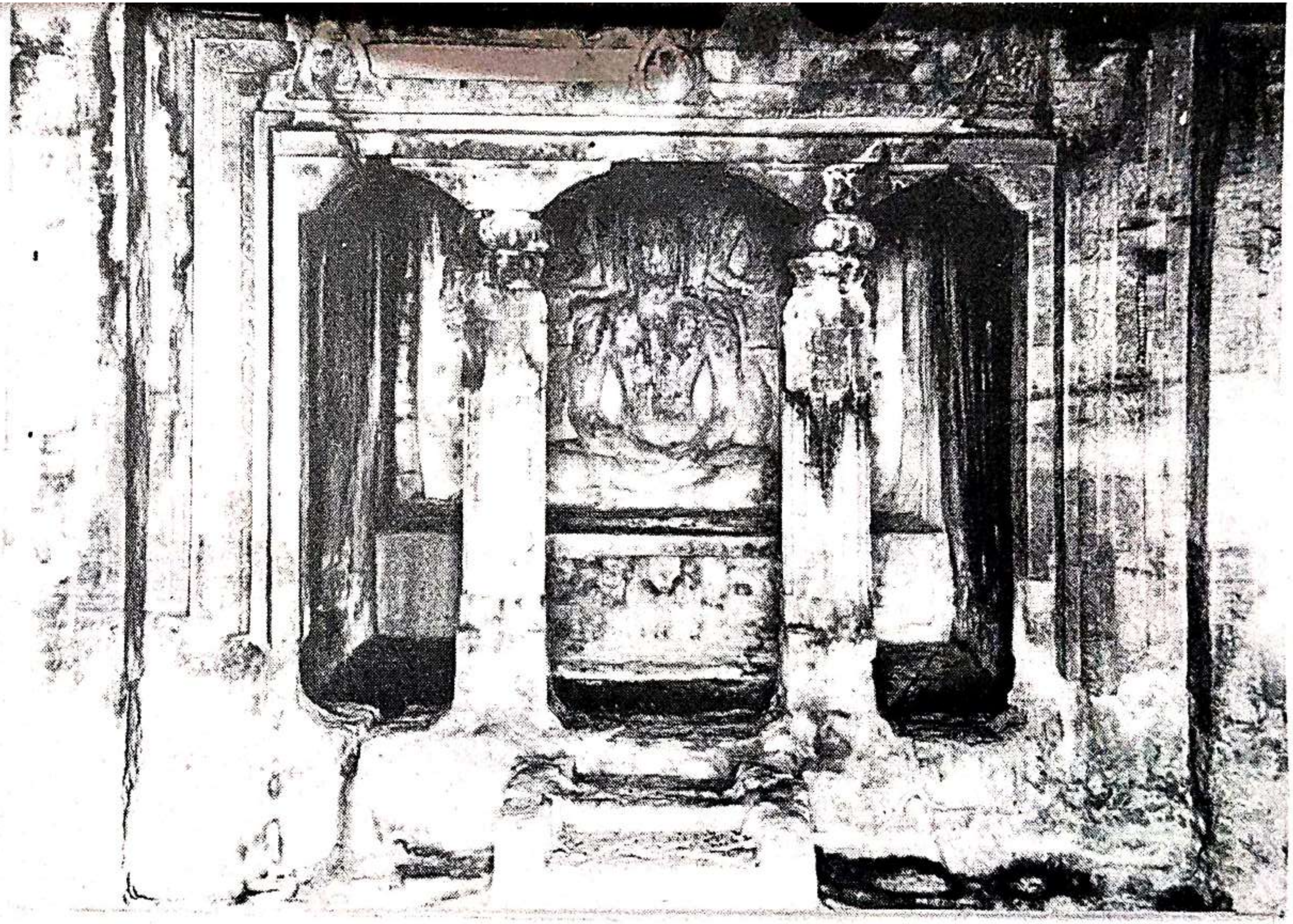

३७. ऐहोली, जैन गुफा, गर्भगृह

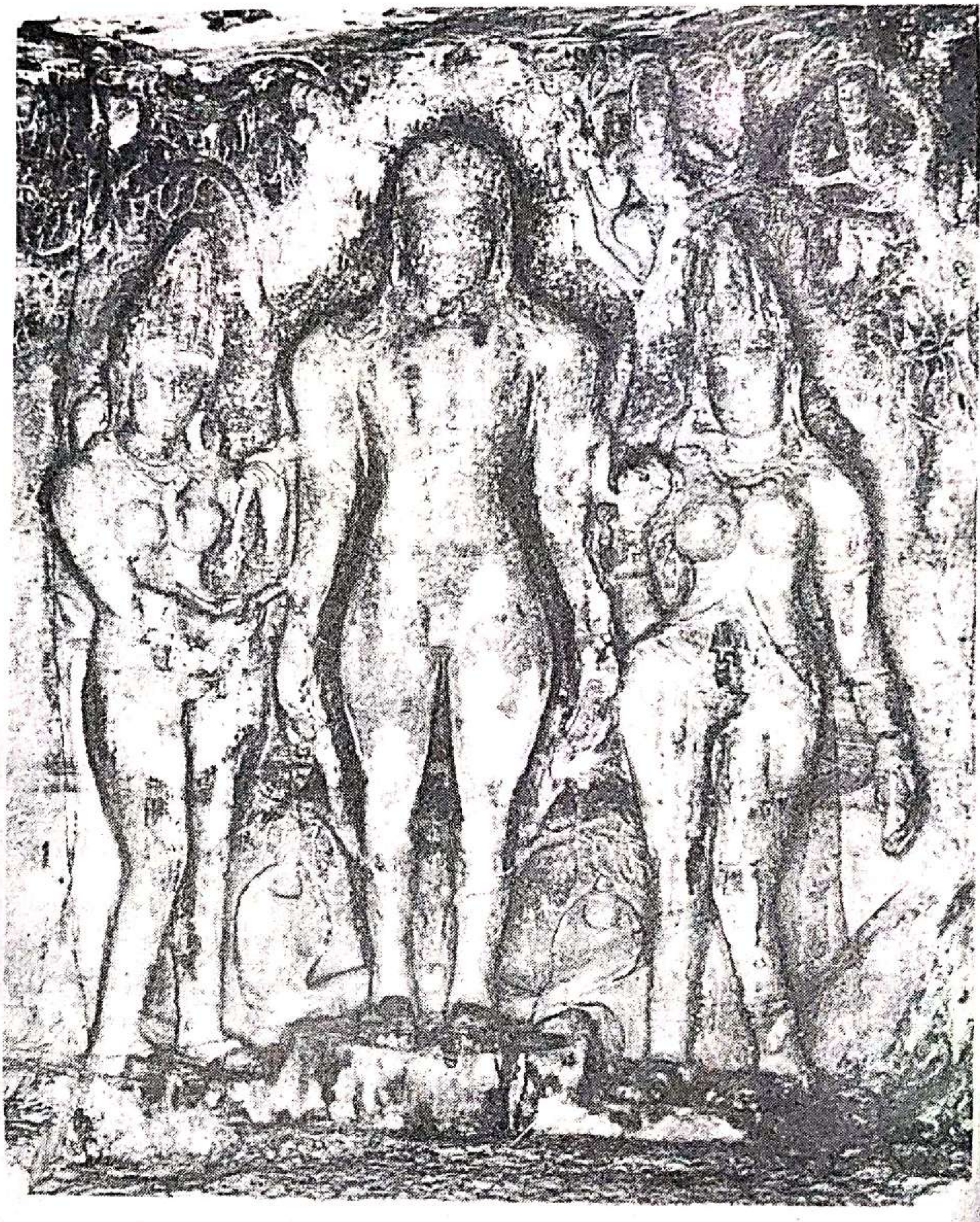

३८. ऐहोली, जैन गुफा, मुखमण्डप, ब्राह्मी और सुंदरी के साथ बाहुबली

३९. ऐहोली, जैन गुफा, मुखमण्डप, पद्मावती एवं धरणेन्द्र के साथ पार्श्वनाथ

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

1.	Studies in Jaina Philosophy — Dr. Nathamal Tatia	100.00
2.	Jaina Temples of Western India — Dr. Harihar Singh	200.00
3.	Jaina Epistemology — I. C. Shastri	150.00
4.	Concept of Panchashila in Indian Thought — Dr. Kamala Jain	50.00
5.	Concept of Matter in Jaina Philosophy — Dr. J. C. Sikdar	150.00
6.	Jaina Theory of Reality — Dr. J. C. Sikdar	150.00
7.	Jaina Perspective in Philosophy & Religion — Dr. Ramji Singh	100.00
8.	Aspects of Jainology (Complete Set : Volume I to 5)	1100.00
9.	An Introduction to Jaina Sadhana — Dr. Sagarmal Jain	40.00
10.	Pearls of Jaina Wisdom — Dulichand Jain	120.00
11.	Scientific Contents in Prakrit Canons — N. L. Jain (H. B.)	300.00
12.	The Heritage of the Last Arhat : Mahavira — C. Krause	20.00
13.	The Path of Arhat — T. U. Mehta	100.00
13.	जैन साहित्य का बृहद् इतिहास (सम्पूर्ण सेट : सात खण्ड)	560.00
14.	हिन्दी जैन साहित्य का इतिहास (सम्पूर्ण सेट : तीन खण्ड)	540.00
15.	जैन प्रतिमा विज्ञान — डॉ॰ मारुतिनन्दन तिवारी	120.00
16.	जैन महापुराण — डॉ॰ कुमुद गिरि	150.00
17.	वज्जालग्ग (हिन्दी अनुवाद सहित) — पं॰ विश्वनाथ पाठक	120.00
18.	प्राकृत हिन्दी कोश — सम्पादक डॉ॰ के॰ आर॰ चन्द्र .	120.00
19.	स्याद्वाद और सप्तभंगी नय — डॉ॰ भिखारीराम यादव	70.00
20.	गाथा सप्तशती (हिन्दी अनुवाद सहित) — पं॰ विश्वनाथ पाठक	60.00
21.	सागर जैन-विद्या भारती (तीन खण्ड) — प्रो॰ सागरमल जैन	300.00
22.	गुणस्थान सिद्धान्त : एक विश्लेषण — प्रो॰ सागरमल जैन	60.00
23.	भारतीय जीवन मूल्य — डॉ॰ सुरेन्द्र वर्मा	75.00
24.	नलविलासनाटकम् — सम्पादक डॉ॰ सुरेशचन्द्र पाण्डेय	60.00
25.	अनेकान्तवाद और पाश्चात्य व्यावहारिकतावाद — डॉ॰ राजेन्द्र कुमार सिंह	50.00
26.	निर्भयभीमव्यायोग (हिन्दी अनुवाद सहित) — अनु॰ डॉ॰ धीरेन्द्र मिश्र	20.00
27.	पञ्चाशक-प्रकरणम् (हिन्दी अनुवाद सहित) — अनु॰ डॉ॰ दीनानाथ शर्मा	250.00
28.	जैन नीतिशास्त्र : एक तुलनात्मक विवेचन — डॉ॰ प्रतिभा जैन	80.00
29.	जैन धर्म की प्रमुख साध्वियाँ एवं महिलाएँ — डॉ॰ हीराबाई बोरदिया	50.00
30.	मध्यकालीन राजस्थान में जैन धर्म — डॉ॰ (श्रीमती) राजेश जैन	160.00
31.	जैन कर्म-सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास — डॉ॰ रवीन्द्रनाथ मिश्र	100.00
32.	महावीर निर्वाणभूमि पावा : एक विमर्श — भगवतीप्रसाद खेतान	60.00
33.	मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन — डॉ॰ फूलचन्द्र जैन	80.00
34.	जैन तीर्थों का ऐतिहासिक अध्ययन — डॉ॰ शिवप्रसाद	100.00
35.	बौद्ध प्रमाण मीमांसा की जैन दृष्टि से समीक्षा — डॉ॰ धर्मचन्द्र जैन	200.00

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी – 5